तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 14, अंक - 2-3, जनवरी-फरवरी 2026 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

उपलब्धियों की नई मिसाल बनते हरियाणा के विद्यार्थी

नव वर्ष नव शुरुआत

समय जो बीत गया है,
उसे मिलकर विदा करें।
क्या पाया, क्या खोया,
इसका हिसाब लगा लें।

बीते वर्ष में घटित
कष्टकारी लम्हों को
कहीं दूर दफ़न कर दें,
और जो पल मनोहर हैं
उन्हें सहेज कर रख लें।
खट्टी-मीठी स्मृतियों को
आओ, पृथक् कर लें।

नई चुनौतियों से लैस,
नए अवसर प्रदान करने
नववर्ष उपस्थित है!
नई उपलब्धियों को
आओ, अपने नाम कर लें।

नैतिक मूल्यों को आत्मसात् करें,
प्रेम व सद्भावना से ओतप्रोत हों,
नए वर्ष में दृढ़ कुछ संकल्प करें
आओ, एक नई शुरुआत कर लें।
चलो, नई शुरुआत कर लें।

डॉ. सारिका धूपड़

नववर्ष पर प्यारे बच्चो,
आओ हम कुछ नया करें।
भूलें सबकी कड़वी बातें,
मीठी बातें याद रखें।

उम्मीदों के पंख लगाकर,
नववर्ष का आगाज़ करें।
मन में दृढ़ संकल्प लेकर हम,
प्रगति-पथ पर बढ़ते रहें।

अच्छी-अच्छी बातें पढ़कर,
हम नैतिकता का विकास करें।
योग-प्राणायाम नित करके हम,
अपना तन-मन स्वस्थ रखें।

मर्यादा में रहकर हम सब,
अपने सारे काम करें।
राष्ट्र-धर्म को अपनाकर,
हम राष्ट्र-हित के काम करें।

आदर-मान करें हम सबका,
मन में सदा यह भान रहे।
सबकी बाधाओं को बच्चो,
हम सब मिलकर दूर करें।

छल, कपट व द्वेष भाव से,
हम सदा ही दूर रहें।
प्रेम-भाव का दीप जलाकर,
तिमिर-ईर्ष्या दूर करें।

मन लगाकर करें पढ़ाई,
सबका यही प्रयास रहे।
मंगलमय हो सबका जीवन,
ईश्वर से यही दुआ करें।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
सराय अलावर्दी
गुरुग्राम (हरियाणा)

शिक्षा सारथी

जनवरी-फरवरी 2026

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
महीपाल ढांडा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
विनीत गर्ग
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. विवेक अग्रवाल
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा
जितेंद्र कुमार
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्
डॉ. ऋचा राठी
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक**: 150 रुपये

Published & Printed by **Parveen Sangwan** on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"बच्चे तब सबसे अधिक सीखते हैं, जब उन्हें सोचने और सृजन करने की स्वतंत्रता दी जाती है।"

» राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार-2025 5
» राष्ट्रीय बाल रंग उत्सव में हरियाणा की धूम 9
» 19वीं राष्ट्रीय जंबूरी हरियाणा का श्रेष्ठ प्रदर्शन 10
» विद्यालय शिक्षा विभाग को 'सुशासन पुरस्कार' 14
» राजाखेड़ी विद्यालयः छात्र हित में एक और अनूठी पहल 16
» एक कक्षा में होंगे दो 'अध्यापक' 18
» नौनिहालों के लिए सीखने का जरिया बन सकते हैं खेल 20
» विद्यालय-समुदाय सहभागिता की सशक्त मिसाल 21
» सरकारी स्कूलों के 132 छात्र इसरो यात्रा पर 22
» 'शिक्षा सारथी' स्टॉल बना आकर्षण का केंद्र 23
» शिक्षिका कविता की पुस्तक 'प्रेरणा लूँ मैं' का लोकार्पण 24
» बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं प्राध्यापक सुधीर यादव 25
» खेल-खेल में विज्ञान 28
» मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला 30
» चुकंदर! कमाल का 31
» Teaching Physics with Virtual Labs 32
» Strong Women 35
» Whispers of Pong 36
» Did you...? 38
» From Books to Browsers: The Changing Face... 39
» International Education Day: Empowering Minds... 41
» National Youth Day in India: Inspiring the Spirit... 44
» R.E.A.D 46
» National Girl Child Day: Empowering Girls... 48

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

सफलता के गगन में चमकते हरियाणा के सितारे

नववर्ष-2026 का यह अंक हरियाणा के उन विद्यार्थियों की उपलब्धियों को समर्पित है, जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर प्रदेश का मान बढ़ाया है। शिक्षा, कला, विज्ञान और नेतृत्व- हर क्षेत्र में हरियाणा के विद्यार्थी अब पूरे आत्म विश्वास के साथ राष्ट्रीय पटल पर अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं।

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार-2025 में हरियाणा के सरकारी विद्यालयों की उल्लेखनीय भागीदारी इस बात का प्रमाण है कि पर्यावरण और ऊर्जा जैसे गंभीर विषयों पर भी हमारे विद्यार्थी जागरूक और नवाचारी सोच रखते हैं। गुरुग्राम जिले के शिकोहपुर स्थित सरकारी विद्यालय की छात्रा खुशबू ने राज्य स्तर पर प्रथम तथा राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध किया कि प्रतिभा किसी संसाधन की मोहताज नहीं होती। यह उपलब्धि सरकारी विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शिक्षक-समर्पण और विद्यार्थियों की वैज्ञानिक दृष्टि को उजागर करती है। इसी क्रम में भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय बाल रंग उत्सव में हरियाणा की टीम द्वारा द्वितीय स्थान प्राप्त करना प्रदेश की सांस्कृतिक और रचनात्मक शक्ति का सशक्त उदाहरण है। 19वीं राष्ट्रीय जंबूरी में हरियाणा का श्रेष्ठ प्रदर्शन भी उल्लेखनीय रहा। स्काउट्स एवं गाइड्स की इस राष्ट्रीय गतिविधि में प्रदेश के दल ने अनुशासन, नेतृत्व, सेवा-भाव और टीम वर्क का उत्कृष्ट परिचय दिया।

इन सभी सफलताओं के बीच हरियाणा के 132 विद्यार्थियों का इसरो (ISRO) भ्रमण एक प्रेरणाप्रद पहल है। देश के प्रमुख अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान से प्रत्यक्ष जुड़ाव ने विद्यार्थियों में विज्ञान और तकनीक के प्रति नई जिज्ञासा और बड़े सपने देखने का साहस जगाया है।

प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी और शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा के नेतृत्व में शिक्षा को प्राथमिकता देते हुए विद्यार्थियों को राष्ट्रीय अवसरों से जोड़ने का सतत प्रयास स्पष्ट दिखाई देता है। आज हरियाणा का विद्यार्थी राष्ट्रीय मंच पर अपनी आभा बिखेर रहा है।

'शिक्षा सारथी' का नववर्ष का यह प्रथम अंक हरियाणा के विद्यार्थियों की इन उजली उपलब्धियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास है। यह अंक परिश्रम, प्रतिभा और संकल्प से रची गई उन कहानियों को समेटे है, जो नई पीढ़ी को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। इन पृष्ठों में विद्यार्थियों की उड़ान, शिक्षकों का समर्पण और शिक्षा की सकारात्मक दिशा एक साथ झलकती है। यह केवल सफलताओं का लेखा-जोखा नहीं, बल्कि भविष्य के स्वप्नों को सशक्त करने वाला प्रेरक संदेश है।

नव वर्ष- 2026 की हार्दिक शुभकामनाएँ।

-संपादक

राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार-2025 में हरियाणा के विद्यार्थियों की ऐतिहासिक सफलता

अंजू वर्मा

आज के युग में ऊर्जा संरक्षण केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। बढ़ती जनसंख्या, सीमित प्राकृतिक संसाधन और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ऊर्जा का विवेकपूर्ण और जिम्मेदार उपयोग ही भविष्य को सुरक्षित बना सकता है। इसी उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार (नेशनल एनर्जी कंज़र्वेशन अवॉर्ड्स) का आयोजन किया जाता है, ताकि समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर विद्यार्थियों में ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूकता विकसित की जा सके।

वर्ष 2025 में आयोजित राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली पहल के रूप में सामने आया। इस अभियान के अंतर्गत देशभर के लाखों विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी रचनात्मकता तथा पर्यावरण चेतना का प्रभावशाली प्रदर्शन किया।

हरियाणा राज्य में विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर के मंचों तक पहुँचाने में हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् के नेतृत्व में किए गए प्रयास उल्लेखनीय रहे। माननीय मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी जी की दूरदर्शी सोच और शिक्षा-हितैषी नीतियों ने इस दिशा में सशक्त

प्रतिभा किसी साधन पर निर्भर नहीं होती, उसे आगे बढ़ने के लिए केवल सही अवसर और उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। यही सोच विद्यार्थियों को आत्मविश्वास देती है और उन्हें अपनी क्षमताओं को पहचानने के लिए प्रेरित करती है। सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक शुभकामनाएँ। विभाग सदैव प्रतिभाओं की खोज, पहचान और उन्हें निरंतर तराशने के लिए प्रतिबद्ध रहता है।

जितेन्द्र कुमार
महानिदेशक, माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्

आधार प्रदान किया। उनके मार्गदर्शन में राज्य सरकार ने शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखते हुए विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, रचनात्मक क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व को विशेष प्राथमिकता दी है। माननीय शिक्षा मंत्री, हरियाणा श्री महीपाल ढांडा जी के नेतृत्व में हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् को राष्ट्रीय महत्त्व की विभिन्न प्रतियोगिताओं में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक अवसर, सहयोग एवं संस्थागत समर्थन प्राप्त हुआ। इसी क्रम में राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् श्री जितेन्द्र कुमार जी द्वारा प्रभावी योजना, समयबद्ध दिशा-निर्देशों के निर्गमन तथा जिला एवं विद्यालय स्तर पर सतत समन्वय के माध्यम से विद्यार्थियों की व्यापक एवं समावेशी सहभागिता सुनिश्चित की गई। इसके परिणामस्वरूप राज्य के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों को समान रूप से अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का सशक्त मंच प्राप्त हुआ, जो अपने आप में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण, दूरगामी एवं सराहनीय पहल है।

इस प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना, रचनात्मक माध्यमों से सतत विकास का संदेश प्रसारित करना तथा भावी पीढ़ी को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करना रहा। राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों के अंतर्गत डॉ. धीरज कौशिक (कंसल्टेंट, यूथ एवं इको क्लब) ने प्रतियोगिता के सफल आयोजन एवं व्यापक सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु अनेक महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रभावी रूप से कार्य किया। इसके अंतर्गत जिलों को समय पर स्पष्ट एवं विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए गए। विद्यालय स्तर तक प्रतियोगिता से संबंधित जानकारी का व्यापक प्रसार सुनिश्चित किया गया। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अधिकतम भागीदारी पर विशेष ध्यान दिया गया तथा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को आगे बढ़ने हेतु निरंतर प्रोत्साहित किया गया।

इन समन्वित प्रयासों का सकारात्मक परिणाम यह रहा कि हरियाणा राज्य से लाखों विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया और राज्य स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक उत्कृष्ट प्रदर्शन कर राज्य का नाम गौरवान्वित किया। वर्ष-2025 में हरियाणा से इस प्रतियोगिता में दर्ज की गई सहभागिता अपने आप में एक कीर्तिमान रही। राज्य के 16,057 विद्यालयों के 13,68,555 विद्यार्थियों ने विद्यालय स्तर की चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया। यह संख्या देशभर में भाग लेने वाले कुल 25,02,647 प्रतिभागियों का लगभग 56 प्रतिशत रही, जो एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय योगदान है। चित्रकला प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों ने यह सिद्ध किया कि कला केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि सामाजिक जागरूकता और सकारात्मक परिवर्तन का एक सशक्त साधन भी है।

भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड को हरियाणा, पंजाब एवं केंद्र-शासित प्रदेश चंडीगढ़ के लिए इस अभियान की

नोडल एजेंसी नियुक्त किया गया। भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड ने ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी (BEE),संबंधित राज्य एवं केंद्र-शासित प्रदेश सरकारों, शिक्षा विभागों तथा अन्य हितधारकों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए विद्यालय एवं राज्य स्तर की चित्रकला प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया। भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड के कुशल मार्गदर्शन, प्रभावी योजना एवं सुदृढ़ समन्वय के परिणामस्वरूप यह अभियान केवल एक प्रतियोगिता तक सीमित न रहकर ऊर्जा संरक्षण एवं पर्यावरण जागरूकता का एक व्यापक जन-अभियान बनकर उभरा।

हरियाणा में इस प्रतियोगिता में अभूतपूर्व सहभागिता देखने को मिली। प्रतियोगिता को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया श्रेणी 'ए' (कक्षा 5वीं से 7वीं) तथा श्रेणी 'बी' (कक्षा 8वीं से 10वीं)। विद्यार्थियों ने अपनी कल्पना-शक्ति, रंगों और रचनात्मक विचारों के माध्यम से ऊर्जा संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यावरण सुरक्षा तथा भावी पीढ़ियों के प्रति जिम्मेदारी जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

विद्यालय स्तर पर चयनित प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए 20 नवम्बर, 2025 को इंद्रधनुष ऑडिटोरियम, पंचकूला में राज्य स्तरीय 'ऑन-द-स्पॉट' चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रत्येक श्रेणी में प्रथम पुरस्कार 50,000 रुपये, द्वितीय पुरस्कार 30,000 रुपये तथा तृतीय पुरस्कार 20,000 रुपये प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त 10-10 सांत्वना पुरस्कार 7,500 रुपये (प्रत्येक) भी दिए गए। इस प्रकार कुल 26 विद्यार्थियों को उनकी उत्कृष्ट कला-प्रतिभा के लिए सम्मानित किया गया।

श्रेणी 'ए' के अंतर्गत राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में कुमारी खुशबू यादव, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शिकोहपुर (गुरुग्राम) ने प्रथम पुरस्कार, मास्टर अनुज प्रिंस, एसए जैन सीनियर मॉडल स्कूल, अंबाला ने द्वितीय पुरस्कार तथा प्राची, डीएवी मल्टीपर्पज़ पब्लिक स्कूल, सोनीपत ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। वहीं श्रेणी 'बी' में वीनू, यदुवंशी शिक्षा निकेतन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, महेंद्रगढ़ ने प्रथम, उन्नति सैनी, आरपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम ने द्वितीय तथा प्रांजल चौहान, मोतीलाल नेहरू स्कूल, राई (सोनीपत) ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। सभी विद्यार्थियों ने विषय की गहन समझ, सशक्त अभिव्यक्ति और उत्कृष्ट कलात्मक कौशल से प्रतियोगिता को गरिमा प्रदान की।

राज्य स्तर पर चयनित विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला। राष्ट्रीय स्तर की चित्रकला प्रतियोगिता में देश के 29 राज्यों एवं 7 केंद्र शासित प्रदेशों ने भाग लिया। प्रत्येक श्रेणी से तीन-तीन विद्यार्थियों का चयन किया गया और इस प्रकार प्रत्येक श्रेणी में कुल 108 विद्यार्थियों ने 11 दिसम्बर, 2025 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित प्रतियोगिता में सहभागिता की। इस अवसर पर माननीय विद्युत एवं

युवा और बच्चे ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक हों - राष्ट्रपति

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने 14 दिसंबर, 2025 राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस के अवसर सभा को संबोधित करते हुए कहा कि ऊर्जा संरक्षण केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि आज की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि ऊर्जा बचाना केवल कम उपयोग करना नहीं है, बल्कि ऊर्जा का बुद्धिमानी, जिम्मेदारी और कुशलता से उपयोग करना है। उन्होंने कहा कि जब हम बिजली के उपकरणों का अनावश्यक उपयोग करने से बचते हैं, ऊर्जा-कुशल उपकरणों को अपनाते हैं, अपने घरों और कार्य स्थलों में प्राकृतिक प्रकाश और वेंटिलेशन का उपयोग करते हैं, या सौर और नवीकरणीय ऊर्जा विकल्पों को अपनाते हैं, तो हम न केवल ऊर्जा बचाते हैं, बल्कि कार्बन उत्सर्जन को भी कम करते हैं। स्वच्छ हवा और सुरक्षित जल स्रोतों को बनाए रखने और एक संतुलित इको सिस्टम के लिए भी ऊर्जा संरक्षण महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि ऊर्जा की प्रत्येक इकाई, जिसे हम बचाते हैं, प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी और आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी संवेदनशीलता का प्रतीक होगी।

राष्ट्रपति ने इस बात पर ज़ोर दिया कि यदि युवा और बच्चे ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक हों और इस दिशा में प्रयास करें, तो इस क्षेत्र में लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है और देश के सतत विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है। राष्ट्रपति ने कहा कि सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा तक पहुँच समुदायों को मज़बूत बनाती है। यह स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देती है और विकास के नए अवसर पैदा करती है। इसलिए, हरित ऊर्जा केवल बिजली उत्पादन तक सीमित नहीं है; यह सशक्तीकरण और समावेशी विकास का एक शक्तिशाली साधन है।

राष्ट्रपति ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना और राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन जैसी पहलों से जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम हो रही है। सरकार नवीकरणीय ऊर्जा उपभोग दायित्व और उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाने और ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा दे रही है। उन्होंने बताया कि 2023-24 में भारत के ऊर्जा दक्षता प्रयासों के परिणाम स्वरूप 53.60 मिलियन टन तेल-समतुल्य ऊर्जा की बचत हुई है। उन्होंने कहा कि इन प्रयासों से प्रतिवर्ष महत्त्वपूर्ण आर्थिक बचत हो रही है और कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में भी उल्लेखनीय कमी आई है।

राष्ट्रपति ने कहा कि भारत के ऊर्जा परिवर्तन की सफलता के लिए हर क्षेत्र और हर नागरिक की भागीदारी आवश्यक है। सभी क्षेत्रों में ऊर्जा दक्षता लाने के लिए व्यवहार में बदलाव बेहद ज़रूरी है। प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाते हुए संतुलित जीवन शैली अपनाने की चेतना भारत की सांस्कृतिक परंपरा का अभिन्न अंग है। उन्होंने ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में कार्यरत सभी हितधारकों की सराहना की और कहा कि उनका योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करेगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सामूहिक जिम्मेदारी, साझेदारी और जनभागीदारी की भावना से भारत ऊर्जा संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाता रहेगा और हरित भविष्य की दिशा में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेगा।

आवासन और शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल, माननीय विद्युत एवं नवीन व नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री श्री श्रीपाद नाईक, विद्युत मंत्रालय के सचिव श्री पंकज अग्रवाल तथा ऊर्जा दक्षता ब्यूरो के महानिदेशक श्री धीरज कुमार श्रीवास्तव सहित मंत्रालय तथा अधीनस्थ सार्वजनिक उपक्रमों के अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। यह क्षण हरियाणा के लिए विशेष रूप से गौरवपूर्ण रहा।

राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा के विद्यार्थियों ने भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। श्रेणी 'ए' में मास्टर अनुज प्रिंस ने प्रथम पुरस्कार (1,00,000/- + लैपटॉप + स्वर्ण पदक) तथा कुमारी खुशबू यादव ने तृतीय पुरस्कार (30,000/- + लैपटॉप + कांस्य पदक) प्राप्त कर राज्य को गौरवान्वित किया। इन मेधावी विद्यार्थियों को 14 दिसम्बर, 2025 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा सम्मानित किया गया।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शिकोहपुर (गुरुग्राम) की कक्षा 7वीं की छात्रा कुमारी खुशबू यादव की उपलब्धि विशेष रूप से प्रेरणादायक रही। एक साधारण एवं आर्थिक रूप से कमजोर, पशुधन आधारित परिवार से आने वाली खुशबू के पिता छाछ बेचकर परिवार का पालन-पोषण करते हैं। कठिन परिस्थितियों के बावजूद खुशबू ने अनुशासन, परिश्रम और लगन से राज्य स्तर पर प्रथम स्थान तथा राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध किया कि प्रतिभा किसी सुविधा की मोहताज नहीं होती।

राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् के नेतृत्व में ऊर्जा संरक्षण जैसे विषय को केवल प्रतियोगिता के रूप में नहीं, बल्कि एक शैक्षणिक एवं सामाजिक अभियान के रूप में अपनाया गया। यह सुनिश्चित किया गया कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को समान अवसर मिलें, आर्थिक रूप से कमज़ोर पृष्ठभूमि के बच्चों को मंच मिले तथा सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी भी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकें। कुमारी खुशबू यादव जैसी छात्राओं की सफलता इस नीति और दृष्टि का सशक्त प्रमाण है।

माननीय शिक्षा मंत्री, हरियाणा श्री महीपाल ढांडा जी के नेतृत्व में शिक्षा को अवसर, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता से जोड़ने की सोच का प्रतिफल राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार-2025 में हरियाणा की शानदार उपलब्धि के रूप में सामने आया। यह सफलता हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्, भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड, विद्यालयों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है।

पीजीटी फाइन आर्ट्स
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, चिकन
जिला- पंचकूला, हरियाणा

ऊर्जा संरक्षण को यदि हम अपनी जीवनशैली का स्वाभाविक हिस्सा बना लें, तो सतत और सुरक्षित भविष्य की दिशा में बड़ा कदम उठाया जा सकता है। जब विद्यार्थी रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से इस विचार को आत्मसात् करते हैं, तो उनमें पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी विकसित होती है। ऐसे प्रयास उन्हें जागरूक नागरिक बनाते हैं और समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं।

डॉ. मयंक वर्मा
संयुक्त राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्

विद्यार्थियों में ऊर्जा संरक्षण और पर्यावरण चेतना का बीज बोना भविष्य के प्रति हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। जब बच्चों को समान अवसर, सही दिशा और निरंतर मार्गदर्शन मिलता है, तो उनकी प्रतिभा निखरकर सामने आती है। ऐसे जागरूक विद्यार्थी अपनी सोच, रचनात्मकता और व्यवहार से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की सशक्त क्षमता विकसित करते हैं।

डॉ. धीरज कौशिक
कंसल्टेंट, यूथ एवं ईको क्लब
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्

हर विद्यार्थी को अपने विचार व्यक्त करने और प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलना चाहिए, क्योंकि यही छोटे प्रयास भविष्य में बड़े बदलाव की नींव रखते हैं। जब बच्चों को खुला मंच, प्रोत्साहन और विश्वास मिलता है, तो वे आत्मविश्वास के साथ नई सोच प्रस्तुत करते हैं। यही प्रक्रिया उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाकर समाज और राष्ट्र के विकास में सहभागी बनाती है।

डॉ. मोनिका शर्मा
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्
(राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर प्रतियोगिता समन्वयक)

मैं खुशबू कुमारी, कक्षा सातवीं की छात्रा हूँ। मैं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शिकोहपुर (गुरुग्राम, हरियाणा) में अध्ययनरत हूँ। साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि से आने के बावजूद शिक्षा और कला के प्रति मेरी गहरी रुचि रही है। मेरे पिता श्री हरि शंकर यादव लस्सी बेचने का कार्य करते हैं और माता श्रीमती सुगिया देवी गृहिणी हैं, जो सदैव मुझे पढ़ाई के लिए प्रेरित करती हैं। हम किराये के मकान में रहते हैं और परिश्रम से जीवनयापन करते हैं। मेरी कला-रुचि को विद्यालय की कला अध्यापिका श्रीमती कविता यादव के मार्गदर्शन से दिशा मिली। उनके स्नेह और प्रेरणा से मैं राष्ट्रीय स्तर की चित्रकला प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने में सफल रही। यह उपलब्धि न केवल मेरे लिए, बल्कि मेरे विद्यालय और परिवार के लिए भी गर्व का विषय है।

खुशबू यादव
कक्षा सातवीं
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शिकोहपुर (गुरुग्राम)

राष्ट्रीय बाल रंग उत्सव में हरियाणा की धूम

दीपा रानी

भारतीय लोक संस्कृति की जीवंत झलक प्रस्तुत करते हुए हरियाणा की छात्राओं ने हाल ही में भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय बाल रंग उत्सव में जानदार और शानदार प्रदर्शन कर लोक नृत्य प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त कर प्रदेश को गौरवान्वित किया। इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में देशभर से कुल 19 टीमों ने भाग लिया, जिनमें 14 राज्यों और 5 केंद्र शासित प्रदेशों की टीमें शामिल थीं।

हरियाणा की ओर से भाग लेने वाली छात्राएँ राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मडलौडा (जिला पानीपत) से थीं। विद्यालय के प्रधानाचार्य के नेतृत्व में, अमनप्रीत कौर (कार्यक्रम अधिकारी) के मार्गदर्शन में, जिला कोऑर्डिनेटर संदीप रत्तेवाल तथा विद्यालय की अध्यापिका रश्मि के अथक प्रयासों से छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि के लिए हरियाणा टीम को माननीय मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश डॉ. मोहन यादव के कर-कमलों से 75,000 की पुरस्कार राशि और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

इस राष्ट्रीय स्तर के उत्सव का आयोजन प्रतिवर्ष लोक शिक्षण संचालनालय, स्कूल शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश, भोपाल तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल के तत्त्वावधान में किया जाता है। यह उत्सव भारत की एकता, अखंडता और सांस्कृतिक विविधता का सशक्त प्रतीक है, जिसमें विभिन्न राज्यों से आए बच्चे अपनी-अपनी लोक परंपराओं, नृत्य, संगीत और वेशभूषा के माध्यम से भारत की शाश्वत संस्कृति को जीवंत करते हैं। यह महोत्सव न केवल पारंपरिक कला

रूपों के संरक्षण को बढ़ावा देता है, बल्कि एकता और समावेशिता का संदेश भी देता है।

हरियाणा ने बाल रंग महोत्सव में वर्ष 2016 से भाग लेना प्रारंभ किया था और उसी वर्ष प्रदेश की टीम ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। इसके बाद से हरियाणा की टीमें लगभग हर वर्ष नृत्य प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करती आ रही हैं।

बाल रंग महोत्सव में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली टीम को 1,11,000, द्वितीय स्थान पर आने वाली टीम को 75,000, तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीम को 50,000 की पुरस्कार राशि प्रदान की जाती है। इस वर्ष प्रतियोगिता में शीर्ष तीन टीमों में क्रमशः झारखंड (प्रथम), हरियाणा (द्वितीय) और असम (तृतीय) का चयन किया गया, जबकि मध्य प्रदेश, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए।

राष्ट्रीय स्तर की यह बाल रंग प्रतियोगिता विगत वर्षों में विशेष प्रतिष्ठा अर्जित कर चुकी है। गीत-संगीत और नृत्य का यह महोत्सव प्रतिवर्ष दिसंबर माह में आयोजित किया जाता है। वास्तव में, यह उत्सव बच्चों में अपने देश और संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना विकसित करने का एक सशक्त माध्यम है तथा उनमें छिपी प्रतिभा को मंच प्रदान करने का प्रभावी प्रयास भी है। ऐसे आयोजन विद्यार्थियों के भावात्मक विकास के साथ-साथ उन्हें राष्ट्रीय एकता के सूत्र में भी बाँधते हैं।

इस आयोजन के दौरान हरियाणा की छात्राओं को कर्नाटक, चंडीगढ़ तथा जम्मू-कश्मीर की नृत्य टीमों के साथ ठहराया गया, जिससे बच्चों को आपसी संवाद, स्वभाव की समझ और विभिन्न संस्कृतियों से परिचित होने का अवसर मिला। भाषा, विचारों और संस्कृति का ऐसा आदान-प्रदान पूरे भारतवर्ष के लिए गर्व का विषय है। पूरे महोत्सव के दौरान 19 राज्यों से आए कलाकारों की प्रस्तुतियों ने वातावरण को अनेकता में एकता के संदेश से सराबोर कर दिया। इस अवसर पर बच्चों को भोपाल शहर की ऐतिहासिक धरोहरों का भ्रमण भी कराया गया।

हरियाणा टीम की कोऑर्डिनेटर एवं कार्यक्रम अधिकारी अमनप्रीत कौर ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित बाल रंग का मुख्य उद्देश्य देश के सभी प्रदेशों के लोक नृत्यों को बढ़ावा देना, उनका संरक्षण एवं संवर्धन करना तथा लोक नृत्य के माध्यम से राज्यों की कला, संस्कृति और पारंपरिक वेशभूषा का प्रभावी प्रदर्शन करना है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के राजकीय विद्यालयों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, आवश्यकता केवल सही मार्गदर्शन, प्रोत्साहन और अवसर देने की है। जब ये अवसर मिलते हैं, तो विद्यार्थी राष्ट्रीय मंच पर भी कमाल का प्रदर्शन करते हैं।

पीजीटी फाइन आर्ट्स
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सैक्टर-19, पंचकूला

19वीं राष्ट्रीय जंबूरी हरियाणा का श्रेष्ठ प्रदर्शन

गुलशन कुमार

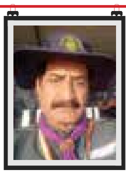

भारत स्काउट्स एवं गाइड्स की गौरवशाली परंपरा को साकार करती 19वीं राष्ट्रीय जंबूरी 23 से 29 नवम्बर, 2025 तक लखनऊ के विशाल डिफेंस एक्सपो ग्राउंड में अत्यंत भव्यता और अनुशासन के साथ आयोजित हुई। यह आयोजन संस्था की हीरक जयंती का प्रतीक भी था, जिसने इसे और अधिक ऐतिहासिक व महत्त्वपूर्ण बना दिया। देश के सभी राज्यों से आए स्काउट-गाइड दलों के अतिरिक्त नेपाल, श्रीलंका, मालदीव, भूटान, बांग्लादेश तथा सऊदी अरब जैसे देशों से भी दलों ने भाग लेकर इसे एक अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। लगभग 35,000 प्रतिभागियों की उपस्थिति ने जंबूरी स्थल को सचमुच एक विशाल लघु भारत में बदल दिया।

राज्य प्रशिक्षक आयुक्त, हरियाणा राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड्स श्री लक्ष्मी सिंह वर्मा ने बताया कि हरियाणा से 699 स्काउट और 487 गाइड प्रतिभागियों सहित कुल 1186 प्रतिभागियों ने इस राष्ट्रीय जंबूरी में शिरकत की। स्काउट सेक्शन में कैंप-क्राफ्ट, स्टेट-गेट, मार्च-पास्ट और कैंप-फायर में तथा गाइड-सेक्शन में कैंप-फायर, रंगोली, मार्च-पास्ट प्रतियोगिताओं में हरियाणा का श्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। इन सब में उसे 'ए' ग्रेडिंग मिली। इसके अलावा स्काउट के पायनियरिंग प्रोजेक्ट

THE BHARAT SCOUTS AND GUIDES
19th NATIONAL JAMBOREE
GRAND FINALE OF THE DIAMOND JUBILEE
Viksit Yuva-Viksit Bharat

और गाइड के स्टेट गेट व कैंप क्राफ्ट को भी सराहना मिली। इनके अलावा हरियाणा को फिजिकल डिस्प्ले, कलर-पार्टी, एथनिक फैशन शो, पेजेंट शो, फूड प्लाजा में भी 'ए' ग्रेडिंग मिली। बैंड, फॉक डांस, स्किल-ओ-रामा, स्टेट एग्जीबिशन में उसके प्रदर्शन भी श्लाघनीय रहा। इन सभी में 'बी' ग्रेडिंग प्राप्त हुई।

हरियाणा का कलात्मक मुख्य द्वार-

हरियाणा का गेट अपनी कलात्मक सजावट और टीमवर्क के दम पर दर्शकों तथा निर्णायकों का ध्यान खींचने में सफल रहा। इस मुख्य-द्वार को उसके थीम और क्रिएटिविटी के लिए स्वर्ण-पदक से सम्मानित किया गया यानी यह गेट सभी राज्यों के बीच सराहनीय और उच्च-स्तरीय प्रस्तुति वाला माना गया। हरियाणा के मुख्य-द्वार की थीम के रूप में कुरुक्षेत्र में दिया गया गीता-संदेश योगः कर्मसु कौशलम् (कर्म में कौशल का नाम-योग) को चुना गया था, जिससे राज्य की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान प्रदर्शित हुई।

300 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैले इस जंबूरी परिसर में लगभग 3,500 तंबू स्थापित किए गए थे, जिनमें राज्यवार आवास-व्यवस्था, भोजनालय, स्वास्थ्य केंद्र, आपूर्ति केंद्र और गतिविधि क्षेत्रों का सुव्यवस्थित संयोजन किया गया था। व्यापक मैदान पर दूर-दूर तक फैली टेंट-नगरी, रंगीन स्वागत द्वार, कलात्मक सजावट और ध्वजों की फहराहट को देखकर हर आगंतुक का हृदय उत्साह से भर उठता था। प्रतिभागियों के आगमन पर पंजीकरण किया गया और दलों को क्रमबद्ध रूप से उनके तंबू आवंटित किए गए। अनुशासन, स्वच्छता और टीम-स्पिरिट की मिसाल प्रस्तुत करते ये दृश्य वास्तव में मन मोह लेने वाले थे।

द्वितीय दिवस, उद्घाटन समारोह का अनुपम वैभव-

दूसरे दिन प्रातः 9 बजे भव्य ओपनिंग सेरेमनी की रिहर्सल संपन्न हुई। इसमें भारत तथा विदेशों से आए सभी स्काउट-गाइड दलों ने अपनी-अपनी वर्दी, ध्वजों और बैंड के साथ अनुशासनबद्ध मार्च-पास्ट में भाग लिया। दोपहर

होते-होते पूरा ओपन एरिया रंग, उत्साह और युवा ऊर्जा से सराबोर हो उठा। निर्धारित स्थानों पर सुसज्जित स्काउट-गाइडों की कतारें किसी सुव्यवस्थित चित्र की भाँति प्रतीत हो रही थीं।

मुख्य उद्घाटन समारोह उत्तरप्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल द्वारा सम्पन्न हुआ। बैंड की मधुर धुनें वातावरण को उल्लासमय बना रही थीं और प्रतिभागियों के कदम एक लय में आगे बढ़ते हुए अनुशासन का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे। सायंकाल में उत्तरप्रदेश-नाइट का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन उपमुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक ने किया। इस सांस्कृतिक संध्या में लखनऊ की तहज़ीब, संगीत और कला का मनमोहक प्रदर्शन हुआ।

तृतीय दिवस, राष्ट्रीय एकता मार्च एवं विविध प्रतियोगिताएँ-

तीसरे दिन प्रातः ध्वजारोहण के उपरांत अत्यंत आकर्षक राष्ट्रीय एकता मार्च आयोजित हुआ, जिसका नेतृत्व उत्तरप्रदेश सरकार के बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री श्री संदीप सिंह ने किया। लगभग 3,000 स्काउट-गाइड इस मार्च में शामिल हुए। शहर में उनके लिए जलपान एवं विश्राम की विशेष व्यवस्था की गई, जिससे स्थानीय प्रशासन और आयोजन समिति के उत्कृष्ट तालमेल का परिचय मिला।

इसके पश्चात् कलर पार्टी प्रदर्शनी, बैंड डिस्प्ले, तथा स्काउट-गाइड प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ, जहाँ सभी राज्यों ने अपने-अपने स्टॉलों के माध्यम से कौशल, नवाचार, पर्यावरण संरक्षण, प्राथमिक चिकित्सा, गाँठ बंधन, समाजसेवा, हस्तकला, मॉडल एवं परियोजनाएँ प्रस्तुत कीं। स्किल-ओ-रामा प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने अद्भुत दक्षता और रचनात्मकता का प्रदर्शन किया।

एडवेंचर जोन गतिविधियों में बच्चों ने विशेष उत्साह दिखाया। बौद्धिक गतिविधियों ने युवाओं में विवेक, टीमवर्क और त्वरित निर्णय-क्षमता का विकास किया। रात में 5 किलोमीटर लंबी नाइट-हाइक का आयोजन हुआ,

हरियाणा की कलर पार्टी ने सटीक ड्रिल, समन्वय और अनुशासन के लिए सराहना पाई। ध्वज-संचालन में एकरूपता और कमांड-रिस्पॉन्स स्पष्ट रहा, जिससे राज्य की प्रशिक्षण गुणवत्ता प्रदर्शित हुई। एथनिक फ़ैशन शो में हरियाणा ने हरियाणवी लोक-परिधान, आंचलिक रंगों और आत्मविश्वास पूर्ण मंच प्रस्तुति के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। प्रस्तुति में लोक-भाव और सादगी प्रमुख रही। हरियाणा के पेजेंट में लोक-संस्कृति, वीरता और सामाजिक मूल्यों को सशक्त दृश्य-संयोजन के साथ प्रस्तुत किया गया। अनुशासन और समूह तालमेल सराहनीय रहा । स्किल-ओ-रामा हरियाणा के प्रतिभागियों ने तकनीकी स्पष्टता, समयबद्धता और वास्तविक जीवन-उपयोगिता के साथ कौशलों का प्रदर्शन किया, जिससे प्रशिक्षण की मज़बूती सामने आई। फिजिकिल डिस्प्ले में हरियाणा के दल ने तालमेल, लयबद्धता और ऊर्जा के साथ भव्य प्रस्तुति दी। समूह अनुशासन और एकरूपता दर्शकों के लिए आकर्षण का केंद्र रही। जंबूरी में हरियाणा का प्रदर्शन अनुशासन, सांस्कृतिक पहचान, कौशल-दक्षता और शारीरिक समन्वय- चारों आयामों में संतुलित रहा। विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता ने राज्य के स्काउट-गाइड प्रशिक्षण की गुणवत्ता और व्यापकता को प्रामाणिक रूप से रेखांकित किया।

लक्ष्मी सिंह वर्मा
राज्य प्रशिक्षक आयुक्त
हरियाणा राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड्स

उत्तरप्रदेश के लखनऊ में आयोजित 19वीं राष्ट्रीय स्काउट जंबूरी में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। देश-विदेश से आए स्काउट परिवार के प्रतिभागी सदस्यों द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रमों ने इसे एक अवर्णनीय और अविस्मरणीय अनुभव बना दिया। विभिन्न राज्यों और देशों की मिली-जुली संस्कृति का ऐसा अद्भुत संगम देखने को मिला, जिसने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को साकार कर दिया।

स्किल-ओ-रामा जैसी प्रतियोगिताओं में बच्चों की कला-दक्षता और पारंगतता देखते ही बनती थी। बैंड की मधुर धुनें मन को मोह लेने वाली थीं। बहुभाषी संवाद, विविध बोलियाँ, आचार-विचार, व्यवहार, वेशभूषा, खान-पान और रहन-सहन की रंगीन झलकियों ने इस आयोजन को और भी जीवंत बना दिया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ आपसी सहयोग और भाईचारे की भावना स्पष्ट दिखाई दी। यह राष्ट्रीय जंबूरी वास्तव में मिली-जुली संस्कृति का महोत्सव थी। इस गौरवपूर्ण अवसर के लिए मैं अपने राज्य-सचिव श्री मनीराम शर्मा तथा राज्य मुख्यालय से श्री लक्ष्मी वर्मा और श्री अनिल कौशिक का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके मार्गदर्शन और आशीर्वाद से यह सुअवसर प्राप्त हुआ।

डॉ. भूप सिंह
एलटी (स्काउट)
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पिपलथा (जींद)

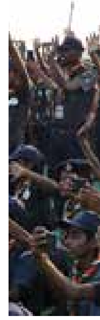

मैं, नरेन्द्र सिंह, डीपीई राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, समचाना, जिला-रोहतक में कार्यरत हूँ। 19 वीं राष्ट्रीय जंबूरी (लखनऊ) में अपने विद्यार्थियों के साथ भाग लेने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। यह भव्य आयोजन 22 नवम्बर से 29 नवम्बर, 2025 तक संपन्न हुआ। इस जंबूरी में मेरे विद्यालय के चार स्काउट तथा दो गाइड विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता निभाई, जबकि पूरे रोहतक जिले से कुल 22 गाइड एवं 24 स्काउट इस राष्ट्रीय आयोजन का हिस्सा बने।

जंबूरी स्थल पर पहुँचते ही विद्यार्थियों में अद्भुत उत्साह और जिज्ञासा देखने को मिली। मार्च पास्ट जैसे अनुशासनात्मक कार्यक्रमों में सभी स्काउट-गाइड ने पूरे मनोयोग से भाग लिया। स्काउट एवं स्काउट मास्टर द्वारा धोती-कुर्ता और खंडवा पहनकर प्रस्तुत की गई हरियाणवी वेशभूषा ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। वहीं हरियाणवी नृत्य की सजीव प्रस्तुति ने हरियाणा की सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय मंच पर गौरवान्वित किया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम को देश के कोने-कोने से आए प्रतिभागियों ने सराहा और पूरा भारत मानो हरियाणा की लोकसंस्कृति को निहार रहा था।

यात्रा के दौरान विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्न उनकी सीखने की ललक और जिज्ञासा को दर्शाते थे। विद्यार्थियों और शिक्षकों की इस सकारात्मक ऊर्जा को देखकर मेरा मन भी अत्यंत प्रसन्नता से भर उठा। जंबूरी में विद्यार्थियों ने विविध गतिविधियों में भाग लेकर आत्मविश्वास, सहयोग और नेतृत्व जैसे गुणों को आत्मसात् किया।

निस्संदेह, यह अनुभव न केवल शैक्षणिक दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक एवं नैतिक रूप से भी अत्यंत समृद्ध करने वाला रहा। हम भविष्य में भी ऐसे आयोजनों के माध्यम से हरियाणा की संस्कृति और मूल्यों को राष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ाने हेतु सदैव तत्पर रहेंगे।

नरेन्द्र सिंह
डीपीई, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, समचाना, रोहतक

जिसमें लगभग 390 प्रतिभागियों ने भाग लिया। हेडलैंप की रोशनी में अनुशासित कतारों में चलते स्काउट-गाइडों का दृश्य अत्यंत प्रेरक था- साहस, सतर्कता और टीमवर्क का जीवंत उदाहरण।

संध्या के समय आयोजित दूसरी उत्तरप्रदेश-नाइट में माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उपस्थिति दर्ज कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके साथ ही लोक-नृत्य प्रतियोगिताओं का भी आरंभ हुआ, जिसमें विभिन्न राज्यों के दलों ने अपनी विशिष्ट लोक-संस्कृतियों को मोहक प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रदर्शित किया।

चौथा दिवस, राष्ट्रीय-एकता का अद्भुत रंगमंच-

जंबूरी के चौथे दिन की शुरुआत ध्वजारोहण और बीपी सिक्स के साथ हुई, जिसमें स्काउट-गाइडों ने अपने-अपने दलों में अनुशासन का उत्कृष्ट परिचय दिया। प्रातःकालीन कैंप निरीक्षण के दौरान तंबुओं की स्वच्छता, दलों की सज्जा, उपकरणों की सुव्यवस्था तथा आपसी तालमेल का मूल्यांकन किया गया। यह निरीक्षण केवल औपचारिकता भर नहीं था, बल्कि युवाओं में जिम्मेदारी, प्रबंधन-कौशल और टीम भावना को विकसित करने का सशक्त माध्यम था।

इसके पश्चात् एडवेंचर, फन और इंटेलेक्चुअल गतिविधियों की शृंखला आरम्भ हुई- जहाँ प्रतिभागियों ने बाधा-दौड़, मानचित्र-पठन, प्राथमिक उपचार, गाँठ बंधन, क्विज़, समस्या-समाधान जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी योग्यता और ज्ञान का प्रदर्शन किया। साथ ही इंटीग्रेशन कैंप के माध्यम से विभिन्न राज्यों के प्रतिभागियों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक आदान-प्रदान कराया गया, जिसने 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना को और दृढ़ किया।

दोपहर बाद बहुप्रतीक्षित 'पीज़ेंट-शो' का आयोजन हुआ। इस भव्य प्रस्तुति में सभी राज्यों ने अपनी लोक-संस्कृति, पारंपरिक वेशभूषा, स्थानीय त्यौहारों का अद्वितीय प्रदर्शन किया। इस शो में मुझे भी निर्णायक-मंडल में शामिल होने का अवसर मिला। विशाल मैदान में जब विभिन्न प्रांतों की संस्कृति एक साथ सजीव हुई, तो ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे पूरा भारत एक ही मंच पर एकत्र होकर अपनी पहचान, अपनी विरासत और अपनी विविधता का उत्सव मना रहा हो।

रात्रि के समय आयोजित फोक डांस फेस्टिवल जंबूरी का एक अत्यंत आकर्षक और मनभावन पड़ाव सिद्ध हुआ। विभिन्न राज्यों के दलों ने अपने-अपने लोक नृत्यों- गरबा, लावणी, भांगड़ा, घूमर, राउफ, बिहू आदि के माध्यम से देश की सांस्कृतिक महिमा का अद्भुत प्रदर्शन किया। दर्शक दीर्घा निरंतर तालियों की गड़गड़ाहट से गूँजती रही।

पाँचवाँ दिवस, अंतरराष्ट्रीय मित्रता का उत्सव-

जंबूरी के पाँचवें दिन पूर्वाह्न में सभी दलों ने नियमित गतिविधियाँ सम्पन्न कीं। दोपहर बाद प्रतिभागियों को क्लोज़िंग सेरेमनी की भव्य रिहर्सल कराई गई। मार्च-पास्ट की फॉर्मेशन, पंक्तिबद्धता और बैंड की ताल पर कदम मिलाकर चलने का अभ्यास अत्यंत अनुशासित वातावरण में सम्पन्न हुआ।

सायंकाल के बाद इंटरनेशनल नाइट का आयोजन हुआ, जो जंबूरी का अत्यंत महत्त्वपूर्ण और बहु-प्रतीक्षित सांस्कृतिक मंच होता है। इस संध्या में नेपाल, श्रीलंका, मालदीव, भूटान, सऊदी अरब आदि देशों से आए स्काउट-गाइड अपने राष्ट्र की संस्कृति, लोकनृत्य, संगीत और पारंपरिक वेशभूषा का प्रस्तुतीकरण करते हुए दिखाई दिए। अंतरराष्ट्रीय मित्रता और सौहार्द का यह अद्भुत वातावरण जंबूरी की आत्मा को परिभाषित करता है।

इसके साथ ही एथनिक फ़ैशन शो ने इस रात को और भी रंगीन बना दिया। भारतीय राज्यों के साथ-साथ

विदेशी प्रतिभागियों ने भी अपनी पारंपरिक पोशाकें प्रदर्शित कीं। रंगों, डिज़ाइनों और सांस्कृतिक प्रतीकों से सजा यह फैशन-शो विभिन्न संस्कृतियों के सौंदर्य और उनके पारंपरिक मूल्यों का अनूठा संगम था।

छठा दिवस, गरिमामय समापन समारोह-

छठे दिन की शुरुआत स्काउट ध्वज फहराने से हुई, जिसके पश्चात् सभी दल क्लोज़िंग सेरेमनी की अंतिम तैयारियों में जुट गए। दोपहर 3 बजे से आरम्भ हुए इस ऐतिहासिक समारोह की गरिमा तब और बढ़ गई जब महामहिम राष्ट्रपति आदरणीया श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने अपने कर-कमलों द्वारा जंबूरी का औपचारिक समापन किया।

राष्ट्रपति महोदया ने विशाल मैदान में सुसज्जित स्काउट-गाइड दलों द्वारा प्रस्तुत परेड और मार्च-पास्ट का निरीक्षण किया तथा युवाओं की ऊर्जा, अनुशासन और दक्षता की सराहना की। यह क्षण सभी प्रतिभागियों के लिए अविस्मरणीय रहा- एक ऐसा अनुभव जिसे वे जीवन भर संजोकर रखेंगे।

रात्रि में ग्रैंड कैंप फायर का आयोजन हुआ। गीत, नृत्य, स्काउट-गाइड मंत्र, मित्रता-गीत और टीम-बॉन्डिंग गतिविधियों ने वातावरण को भावनात्मक और प्रेरक बना दिया।

सातवाँ दिवस, विदाई का भावपूर्ण क्षण-

सातवें दिन प्रातःकाल सर्वधर्म प्रार्थना-सभा का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न धर्मों के वक्ताओं ने अपने-अपने ग्रंथों से शांति, सद्भाव, प्रेम और सेवा के संदेश दिए। जंबूरी का यह आध्यात्मिक पक्ष विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच एकता तथा मानवता के सार्वभौमिक मूल्यों का प्रतीक था।

इसके पश्चात् भव्य पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं- बैंड डिस्प्ले, कलर पार्टी, स्किल-ओ-रामा, प्रदर्शनी, लोकनृत्य, एडवेंचर एक्टिविटीज़ आदि में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले राज्यों और दलों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर निर्णायक मंडल में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए मुझे भी एक सुंदर स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

सात दिवसीय राष्ट्रीय जंबूरी अपने पीछे अनेक स्मृतियाँ, अनुभव और मूल्य छोड़ गई- अनुशासन, साहस, स्काउट-गाइड सिद्धांतों की आत्मसात् भावना, राष्ट्रीय-एकता, सेवा, कौशल, नेतृत्व और भाईचारे की संस्कृति।

जंबूरी, सौहार्द, संस्कृति और नेतृत्व का उत्सव-

यह सात दिवसीय जंबूरी केवल गतिविधियों का समुच्चय नहीं था, बल्कि युवा मनों में नेतृत्व, मानवता, अनुशासन और राष्ट्रीय एकता के बीज बोने वाला एक सांस्कृतिक महोत्सव था। देश-विदेश से आए बच्चों के मध्य सहयोग, संवाद और मित्रता ने इस शिविर को एक सच्चे विश्व-परिवार का वातावरण प्रदान किया। सभी गतिविधियों के सफल संचालन, नई मित्रताओं और शिक्षाओं के साथ प्रेरणादायक अनुभव लेकर अपने देशों-प्रदेशों को लौट चले।

सेवानिवृत्त शिक्षक
पूर्व जिला संगठन आयुक्त स्काउट
जिला-जींद, हरियाणा

मैं सुखदेव सिंह, एएलटी स्काउट मास्टर, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शेरपुरा, जिला- सिरसा, 19वीं राष्ट्रीय स्काउट जंबूरी में भाग लेकर अत्यंत गर्व एवं उत्साह अनुभव कर रहा हूँ। यह जंबूरी 23 से 29 नवंबर, 2025 तक लखनऊ (डिफेंस एक्सपो ग्राउंड) में आयोजित हुई, जिसमें देशभर से हजारों स्काउट और गाइड्स ने हिस्सा लिया और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर का वातावरण तैयार हुआ।

हमारे विद्यार्थियों ने मार्च पास्ट और कलर पार्टी में 'ए' ग्रेड, तथा बैंड प्रतियोगिता में 'बी' ग्रेड प्राप्त किया, जो उनके अनुशासन, मेहनत और टीम भावना का जीवंत प्रमाण है। हम सभी गतिविधियों में एकजुटता, अनुशासन और उत्साह से भाग लेते रहे। बच्चों ने न केवल शारीरिक दक्षता प्रदर्शित की, बल्कि सामाजिक सहयोग, नेतृत्व और राष्ट्रीय एकता की भावना को भी मज़बूत किया।

जंबूरी के अनुभव ने हमारे स्काउट्स को खुद पर विश्वास, साहस, और नई तकनीकी कौशल सीखने का व्यापक अवसर दिया। हमने विभिन्न राज्यों के स्काउट-गाइड यूनिट्स के साथ मित्रता स्थापित की और एकता की भावना को और गहरा अनुभव किया। यह आयोजन न केवल प्रतियोगिता का मंच था, बल्कि नए लक्ष्य तय करने, सेवा भावना जागृत करने और जीवन भर याद रहने वाले अनुभव देने वाला एक महान अवसर रहा।

सुखदेव सिंह ढिल्लों
एएलटी, स्काउट मास्टर
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शेरपुरा, जिला-सिरसा

मैं आदित्य, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बडेसरा, जिला- भिवानी का छात्र, 19वीं राष्ट्रीय स्काउट जंबूरी में पहली बार भाग लेने का गौरव प्राप्त कर रहा हूँ। यह जंबूरी लखनऊ के डिफेंस एक्सपो ग्राउंड में आयोजित हुई, जहाँ देश भर के स्काउट-गाइड के साथ एशिया-प्रशांत क्षेत्र के प्रतिभागी भी शामिल हुए।

मुझे यहाँ भाग लेकर साहसी गतिविधियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और टीम रचनात्मक कार्यों में सहभागिता करने का अवसर मिला। हरियाणा का स्टेट गेट हम सभी ने मिलकर बड़ी मेहनत और रचनात्मकता से बनाया, जिसे देखकर अनेक दर्शकों और शिक्षकों ने सराहना व्यक्त की।

मुख्य आयोजन में भाग लेने के दौरान मैंने यह महसूस किया कि स्काउटिंग न केवल एक गतिविधि है, बल्कि यह देश सेवा, समाज सेवा, नेतृत्व और अनुशासन की मज़बूत नींव तैयार करती है। मुझे अन्य राज्यों के स्काउटों से मिलकर उनकी संस्कृति, विचार और अनुभव जानने का अवसर भी मिला, जिसने मेरी दृष्टि को और व्यापक, सकारात्मक एवं प्रेरणादायक बनाया।

यह जंबूरी मेरे जीवन का सबसे यादगार अनुभव बन गई है, जिसने मुझे आत्म-विश्वास, साहस और एक बेहतर नागरिक बनने की प्रेरणा दी है। मैं अपने प्राचार्य श्री पवन कुमार का भी धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मुझे इस अवसर के लिए प्रेरित किया।

आदित्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बडेसरा
जिला- भिवानी

विद्यालय शिक्षा विभाग को 'सुशासन पुरस्कार'

डॉ. प्रदीप राठौर

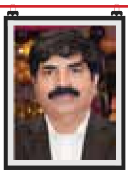

25 दिसम्बर को भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी एवं महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी की जयंती देशभर में सुशासन दिवस के तौर पर मनाई जाती है। देश में सुशासन की स्थापना में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का अमूल्य योगदान रहा है। उनके इस अमूल्य योगदान से देशवासियों को जोड़ने के उद्देश्य से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2014 में 25 दिसंबर का दिन सुशासन दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी।

सुशासन व्यवस्था का एक वह रूप है, जिसका किसी सामाजिक राजनीतिक प्रशासनिक इकाई को इस प्रकार चलाने की व्यवस्था से है, जिससे कि आम जनता को सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं का लाभ मिल सके। सुशासन का एकमात्र उद्देश्य लोगों का कल्याण करना है तथा जनता का सर्वांगीण विकास करना है। लोगों को प्रशासन में विश्वास दिलाना है।

पंचकूला में आयोजित राज्य-स्तरीय सुशासन दिवस समारोह में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने पारदर्शी, जवाबदेह और नागरिक-केंद्रित प्रशासन के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए कहा कि सुशासन विकसित भारत और विकसित हरियाणा बनाने के लिए सबसे मजबूत स्तंभ है। राज्य सरकार अपनी सेवाओं को एक मिशन के रूप में ले रही है और हम ऐसा हरियाणा बनाने के लिए संकल्पबद्ध हैं, जहाँ न्याय सुलभ हो, सेवा त्वरित हो और हर नागरिक सशक्त हो।

मुख्यमंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी और महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी के राष्ट्र को समर्पित जीवन और उनकी अमूल्य सेवाओं को याद करते हुए दोनों महान विभूतियों को नमन किया। उन्होंने कहा कि सुशासन दिवस भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के आदर्शों व सिद्धांतों की याद दिलाता है। उनके लिए सत्ता सेवा का माध्यम थी और शासन जन-कल्याण का पर्याय था। उन्होंने अपने चिंतन, कर्मों और दूरदर्शिता से भारत को नई दिशा और पहचान दी। उन्होंने भारत को सशक्त बनाने के लिए सशक्त नीतियों की नींव रखी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इन महापुरुषों के विचारों से प्रेरित होकर, आज हम एक ऐसे विकसित भारत-विकसित हरियाणा के निर्माण के लिए अग्रसर हैं, जहाँ शासन पारदर्शी हो, निर्णय समयबद्ध हों और नागरिक कल्याण नीतियों के केंद्र में हों। उन्होंने कहा कि सुशासन का मूल उद्देश्य केवल नियम-कानून बनाना नहीं है, बल्कि आम नागरिक के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना है। जब सरकार की योजनाएँ अंतिम पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक पहुँचती हैं, जब लाभार्थी को उसके अधिकार के लिए दफ्तरों के चक्कर नहीं काटने पड़ते, जब व्यवस्था भरोसे और संवेदनशीलता के साथ काम करती है, तभी सच्चा सुशासन स्थापित होता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सुशासन का महत्त्व इस बात में निहित है कि यह लोकतंत्र को अधिक जीवंत बनाता है। अच्छा शासन सामाजिक न्याय को सुदृढ़ करता है। प्रदेश में शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, आवास, स्वच्छता और बुनियादी ढाँचे में जो सुधार आज दिख रहे हैं, वे सुशासन के ही ठोस परिणाम हैं। लेकिन, हमें केवल इन्हीं से संतुष्ट नहीं होना है, हमें सुशासन के लिए समय की जरूरत के अनुसार अपनी कार्यप्रणाली में निरंतर सुधार करते रहना होगा। इसी बात को ध्यान में रखते हुए, वर्ष 2014 में जनसेवा का दायित्व सँभालते ही सरकार ने व्यवस्था परिवर्तन से सुशासन और सुशासन से सेवा का अपना अभियान शुरू किया था। इस अभियान की सफलता नीयत और नीति पर निर्भर करती है।

इस वर्ष 4 फ्लेगशिप स्कीमों के तथा 5 अन्य राज्य स्तरीय सुशासन पुरस्कार दिए गए। हर्ष का विषय है कि इसमें शिक्षा विभाग के दो पुरस्कार शामिल थे। जिन परियोजनाओं के तहत ये पुरस्कार दिए गए, वे थीं- 'कुशल बिज़नेस चैलेंज' और 'पढ़े रोहतक - लिखे रोहतक'।

कुशल बिज़नेस चैलेंज (KBC)-

कुशल बिज़नेस चैलेंज एक अभिनव राज्यव्यापी पहल है, जिसका उद्देश्य हरियाणा के राजकीय विद्यालयों की कक्षा 11 एवं 12 के विद्यार्थियों में उद्यमशील सोच तथा व्यावहारिक व्यावसायिक कौशल का विकास करना है। यह पहल आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना के अनुरूप नवाचार, स्वावलंबन और स्वरोज़गार को बढ़ावा देने

की दिशा में एक सशक्त प्रयास है। इस कार्यक्रम का क्रियान्वयन हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् द्वारा उद्यम लर्निंग फाउंडेशन के सहयोग से किया जा रहा है।

यह कार्यक्रम विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में उद्यमिता-आधारित अधिगम को प्रभावी रूप से समाहित करता है तथा विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की समस्याओं पर आधारित व्यावसायिक समाधान सोचने, उन्हें विकसित करने और प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करता है। संपूर्ण प्रक्रिया अनुभवात्मक एवं संरचित शिक्षण मॉडल पर आधारित है, जिसमें सीखने के साथ-साथ करने पर विशेष बल दिया गया है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थी विस्तृत बिज़नेस प्लान तैयार करते हैं, नवाचारपूर्ण प्रोटोटाइप विकसित करते हैं और अपने विचारों को विशेषज्ञ जूरी के समक्ष आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करते हैं। इस पहल की आधारशिला एक सुव्यवस्थित एवं चरणबद्ध पाठ्यक्रम है, जो विद्यार्थियों को उद्यमिता की मूल अवधारणाओं जैसे- बाज़ार अनुसंधान, वित्त प्रबंधन, निवेश की समझ, राजस्व योजना, विपणन रणनीतियाँ तथा विभिन्न सरकारी सहायता योजनाओं से परिचित कराता है।

इसके माध्यम से विद्यार्थी केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि व्यावसायिक निर्णय लेने, जोखिम का आकलन करने और व्यावहारिक समाधान खोजने की क्षमता भी विकसित करते हैं, जो उन्हें भविष्य के लिए आत्मनिर्भर बनाती है।

इस यात्रा में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने हेतु शिक्षकों को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे वे एक प्रभावी मेंटर की भूमिका निभा सकें। जिला स्तर पर गठित जूरी में वरिष्ठ MSME अधिकारी, अनुभवी उद्यमी तथा NABARD जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल होते हैं, जो विद्यार्थियों को वास्तविक व्यावसायिक परिवेश से परिचित कराते हैं।

यह सहभागिता विद्यार्थियों के भीतर नेतृत्व क्षमता, संवाद कौशल, प्रस्तुतीकरण दक्षता तथा टीम-वर्क जैसी जीवनोपयोगी क्षमताओं का विकास करती है, जो उन्हें भविष्य के रोज़गार सृजक के रूप में तैयार करती हैं।

पिछले वर्ष पायलट रूप में आरंभ किया गया कुशल बिज़नेस चैलेंज अब आत्मनिर्भर युवा वर्ग के निर्माण की दिशा में एक सशक्त मंच के रूप में उभर रहा है। इस पहल की विशेषता यह है कि यह ग्रामीण एवं शहरी, दोनों पृष्ठभूमियों के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करती है, जिससे शैक्षिक समानता को बल मिलता है और प्रतिभा को सही मंच प्राप्त होता है।

कार्यान्वयन ढाँचा-

कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षित शिक्षकों के माध्यम से किया जाता है। शिक्षकों को निरंतर शैक्षणिक एवं मार्गदर्शक सहयोग प्रदान करने के लिए राज्य संसाधन समूह (State Resource Groups) की व्यवस्था की गई है। प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय, खंड, जिला तथा राज्य स्तर पर चरणबद्ध रूप से किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों में नवाचार, समस्या-समाधान क्षमता और सहयोगात्मक कार्य-संस्कृति का विकास होता है।

यह बहुस्तरीय ढाँचा विद्यार्थियों को निरंतर सीखने, स्वयं का मूल्यांकन करने और अपने विचारों को परिष्कृत करने का अवसर प्रदान करता है।

प्रगति एवं विस्तार-

वर्ष 2024-25 के दौरान 900 राजकीय विद्यालयों के 37,000 से अधिक कक्षा XII के विद्यार्थी इस कार्यक्रम से लाभान्वित हुए। सभी जिलों की श्रेष्ठ टीमों ने राज्य स्तरीय समिट में सहभागिता की तथा चयनित टीमों को उनके व्यावसायिक विचारों के विस्तार के लिए बीज धनराशि प्रदान की गई।

वर्ष 2025-26 में कार्यक्रम का दायरा और विस्तृत करते हुए इसे सभी ज़िलों के 2501 विद्यालयों तक पहुँचाया गया। 12 सप्ताह के संरचित पाठ्यक्रम के माध्यम से 1,10,000 से अधिक विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की गई, साथ ही मेंटरशिप, मूल्यांकन एवं मार्गदर्शन तंत्र को और अधिक सुदृढ़ किया गया।

इस विस्तार ने कार्यक्रम को एक व्यापक जन-आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया है, जिसमें शिक्षा को उद्यमिता से जोड़कर भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला जा रहा है।

वित्तीय सहायता एवं आगे की दिशा-

कार्यक्रम के अंतर्गत जिला स्तर के प्रथम चरण में प्रत्येक ज़िले की शीर्ष 10 टीमों को 5,000 प्रति टीम तथा द्वितीय चरण में शीर्ष 10 टीमों को 20,000 प्रति टीम की सहायता प्रदान की जाती है। आगे की दिशा में राज्य स्तर पर प्रत्येक ज़िले की 3-3 टीमों, अर्थात् कुल 66 टीमों को उनके नवाचारी विचारों को संभावित स्टार्ट-अप में रूपांतरित करने हेतु 75,000 प्रति टीम की बीज धनराशि प्रदान की जाएगी।

संरचित मेंटरशिप, विशेषज्ञ मार्गदर्शन और व्यवहार्यता मूल्यांकन के साथ कुशल बिज़नेस चैलेंज हरियाणा में युवा उद्यमिता को सशक्त बनाने, रोज़गार सृजन को बढ़ावा देने तथा एक मजबूत, सतत और समावेशी उद्यमशील पारिस्थिति की तंत्र के निर्माण की दिशा में एक प्रभावी और दूरदर्शी पहल के रूप में स्थापित हो रहा है।

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् की ओर से यह पुरस्कार संयुक्त राज्य परियोजना निदेशक डॉ.मयंक वर्मा, एपीसी अनु शर्मा, एसोसिएट कंसलटेंट देवेश गुप्ता, तथा को-ऑर्डिनेटर अमरीश शर्मा ने प्राप्त किया।

पढ़े रोहतक, लिखे रोहतक-

निपुण हरियाणा मिशन के अंतर्गत पढ़े रोहतक-लिखे रोहतक जुलाई, 2025 में शुरू की गई एक ज़िला-व्यापी पहल है। इस पहल का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षाओं में मौजूद शैक्षणिक कमियों को दूर करना तथा बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान को सुदृढ़ करना है।

निपुण हरियाणा के सहयोग से इस पहल में ज़ीरो पीरियड रेमिडिएशन, डिजिटल स्किल पासबुक, निपुण वाटिका, अपग्रेडेड आंगनवाड़ी व्यवस्था और मज़बूत सामुदायिक सहभागिता जैसे नवाचार शामिल किए गए हैं। सभी स्कूलों की व्यापक भागीदारी, डेटा-आधारित शासन प्रणाली और शिक्षकों की मेंटरिंग ने कक्षा शिक्षण पद्धतियों में सकारात्मक बदलाव लाया है। इस कम लागत वाले, स्केलेबल मॉडल ने रोहतक को एक स्टेट लाइटहाउस जिले के तौर पर स्थापित किया है और अब इन इनोवेशन को पूरे हरियाणा राज्य में लागू करने की तैयारी है।

यह पुरस्कार ज़िला रोहतक के जिला शिक्षा अधिकारी मनजीत मलिक, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी दिलजीत सिंह, एफएलएन को-ऑर्डिनेटर रूपांशी हुड्डा व डाइट मदीना के प्रधानाचार्य वीरेंद्र कुमार मलिक ने प्राप्त किया।

drpradeeprathore@gmail.com

राजाखेड़ी विद्यालय: छात्र हित में एक और अनूठी पहल

पीबी मिश्रा

शिक्षा जीवन का एक महत्त्वपूर्ण घटक है जो जीवन के विभिन्न आयामों को तार्किक एवं स्पष्ट दिशा प्रदान करता है। शिक्षित व्यक्ति एक सशक्त समाज का निर्माण करता है। किसी राष्ट्र की प्रगति का स्तर उसके नागरिकों के शिक्षा स्तर से निर्धारित होता है। प्राथमिक स्तर पर प्राप्त शिक्षा हमें साक्षर बनाती है तथा उच्चतर शिक्षा विशेषज्ञ। माध्यमिक शिक्षा वह सोपान है जहाँ नैतिक मूल्यों और प्रतिस्पर्धा के भाव का संचरण होता है। यही कारण है कि विद्यालय विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करते हुए उन्हें जीवन में नई दिशा प्रदान करते हैं।

आज वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में शिक्षा की प्रासंगिकता एवं महत्ता में बदलाव हुए हैं। अब केवल विषय में उत्कृष्टता प्रदान करना ही पर्याप्त नहीं रह गया है। नवीनतम तकनीकों में पारंगत होना और विषयों के साथ उनके संबंधों से ही आज के आधुनिक युग में सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है।

शिक्षा में स्पर्धा विद्यार्थियों को प्रेरित करती है, उन्हें बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन की ओर ले जाती है। समस्या-समाधान तथा कारण और निवारण जैसे महत्त्वपूर्ण कौशल हमें वास्तविक दुनिया के लिए तैयार करते हैं जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास होता है। उन्हें नई पहचान व अवसर मिलते हैं। परिणामस्वरूप वे अधिक मेहनत करने और असफलतों से सीखने के लिए प्रेरित होते हैं।

इसी धारणा को साकार करने के लिए राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, राजाखेड़ी, ज़िला- पानीपत ने इस सत्र से प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए विशेष कक्षाएँ लगाने की पहल की है।

विद्यालय परिसर उस समय विशेष उल्लास और प्रेरणा से भर उठा, जब हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने 21 नवंबर, 2025 को यहाँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को समर्पित कई महत्त्वपूर्ण शैक्षिक पहलों का शुभारंभ किया। विद्यालय में कोचिंग-क्लासेज, अत्याधुनिक लैंग्वेज-लैब तथा समृद्ध पुस्तकालय का उद्घाटन केवल एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सरकारी विद्यालयों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक ठोस कदम सिद्ध हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत विद्यालय प्रांगण में पौधारोपण के साथ हुई। शिक्षा मंत्री ने विद्यार्थियों के साथ पौधा लगाकर यह संदेश दिया कि शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनने और हरित भविष्य के निर्माण में भागीदार बनने का आह्वान किया। इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती सुमित्रा सांगवान ने शिक्षा-मंत्री एवं जिला शिक्षा अधिकारी का स्वागत करते हुए उन्हें शॉल भेंट कर सम्मानित किया। विद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किए जाने से पूरे परिसर में आत्मविश्वास और उत्साह का वातावरण देखने को मिला।

अपने संबोधन में शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए कहा कि प्रतिभा ही जीवन को दिशा देती है। हर विद्यार्थी में अपार संभावनाएँ होती हैं। आवश्यकता है उन्हें पहचानने और निरंतर परिश्रम से निखारने की। उन्होंने पुस्तकालय संस्कृति, नियमित अध्ययन और सहयोग की भावना को जीवन की सफलता का मूल मंत्र बताया। उनका कहना था कि शिक्षा केवल अंक प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और जिम्मेदार नागरिक तैयार करने की प्रक्रिया है।

विद्यालय में शुरू की गई कोचिंग कक्षाएँ, लैंग्वेज लैब और वर्चुअल कक्षाएँ विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं और वैश्विक मंच के लिए तैयार करने में सहायक होंगी। जिला शिक्षा अधिकारी श्री राकेश बूरा ने बताया कि 'स्मार्ट-40' वर्चुअल कक्षाओं से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विशेष लाभ मिलेगा। उन्होंने 'शिक्षित पानीपत, विकसित पानीपत' के लक्ष्य को शिक्षा सुधारों का आधार बताया।

विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सुमित्रा सांगवान के कुशल शैक्षणिक प्रबंधन, दूरदर्शी सोच और सशक्त नेतृत्व में यह पहल विद्यालय की उपलब्धियों की शृंखला में एक नया, प्रेरक अध्याय जोड़ने की ओर अग्रसर है। उनके नेतृत्व में विद्यालय न केवल शैक्षणिक दृष्टि से, बल्कि अनुशासन, सौंदर्यकरण और समग्र विकास के क्षेत्र में भी निरंतर प्रगति कर रहा है। सुव्यवस्थित परिसर, स्वच्छ वातावरण और आधुनिक सुविधाओं के माध्यम से उन्होंने विद्यालय को एक आदर्श शिक्षण संस्थान के रूप में स्थापित किया है।

शैक्षणिक उपलब्धियों और सौंदर्यकरण के क्षेत्र में प्रधानाचार्या पहले ही प्रदेश के शिक्षा पटल पर विद्यालय का नाम अग्रणी विद्यालयों की सूची में दर्ज करा चुकी हैं। इस बार उनका प्रयास और भी अनूठा तथा दूरगामी परिणाम देने वाला है। विद्यार्थियों को मूल्यपरक, आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं में अग्रणी

बनाने के उद्देश्य से प्रतियोगी परीक्षाओं की सशक्त तैयारी पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस महत्त्वपूर्ण दायित्व के निर्वहन में विद्यालय के प्राध्यापकगण, विशेष रूप से प्राध्यापक कर्मवीर, पूर्ण निष्ठा, समर्पण और लगन के साथ जुटे हुए हैं।

इस प्रयास का उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट है- ग्रामीण अंचल के उन बच्चों को भी सफलता की मुख्यधारा से जोड़ना, जिनके पास सीमित संसाधन हैं, किंतु सपने बड़े हैं। विद्यालय यह विश्वास दिला रहा है कि संसाधनों की कमी प्रतिभा के मार्ग में बाधा नहीं बन सकती। इसी संकल्प के साथ विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित करने, कठिन परिश्रम करने और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। सही कहा गया है- जहाँ संकल्प होता है, वहाँ सिद्धि अवश्य मिलती है।

वर्तमान में विद्यालय में विद्यार्थियों के एक विशेष समूह को 'सुपर-40' नाम दिया गया है, जिन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सुनियोजित मार्गदर्शन प्रदान किया जा रहा है। इन कक्षाओं का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रत्येक विषय की मूल अवधारणाओं को गहराई से समझाना है, ताकि वे भविष्य में बिना किसी बाहरी कोचिंग के भी सफलता प्राप्त कर सकें। यह पहल न केवल विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखेगी, बल्कि अन्य विद्यालयों के लिए भी प्रेरणा-स्रोत बनेगी।

शैक्षणिक कार्यों के साथ-साथ प्रधानाचार्या श्रीमती सुमित्रा सांगवान ने सामाजिक दायित्वों का भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के आह्वान पर उन्होंने टीबी से पीड़ित एक महिला के उपचार का संपूर्ण खर्च स्वयं वहन करने का निर्णय लिया। इस मानवीय और संवेदनशील पहल की शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए इसे समाज के लिए प्रेरक बताया है।

प्राचार्या ने विद्यालय की प्रगति साझा करते हुए बताया कि सामुदायिक सहयोग और शिक्षकों के समर्पण से विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। खेल, संस्कृति और शिक्षा -हर क्षेत्र में विद्यालय की उपलब्धियाँ निरंतर बढ़ रही हैं।

कार्यक्रम के दौरान विद्यालय प्रबंधन द्वारा पाँच विद्यार्थियों तथा एक बेसहारा महिला को दवाइयों की किट वितरित कर सामाजिक सरोकार का एक संवेदनशील और मानवीय उदाहरण प्रस्तुत किया गया। यह पहल यह दर्शाती है कि विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र ही नहीं, बल्कि समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को निभाने वाला एक जागरूक संस्थान भी है। दवाइयों की किट प्राप्तकर लाभार्थियों के चेहरे पर संतोष और राहत की भावना स्पष्ट दिखाई दी। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने विद्यालय प्रबंधन की इस सामाजिक पहल की सराहना करते हुए इसे अनुकरणीय बताया। कार्यक्रम में अनेक जनप्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे, जिनकी उपस्थिति से कार्यक्रम की गरिमा और भी बढ़ गई तथा आयोजन एक स्मरणीय सामाजिक संदेश के साथ संपन्न हुआ।

पीजीटी भौतिकी
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, राजाखेड़ी, जिला- पानीपत, हरियाणा

प्रत्येक विद्यार्थी अपने भीतर असीम संभावनाएँ -महीपाल ढांडा

शिक्षा-मंत्री श्री महीपाल ढांडा ने कहा कि प्रतिभा ही वह शक्ति है, जो व्यक्ति के जीवन के साथ-साथ समाज और राष्ट्र का भी स्वरूप बदल सकती है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने भीतर असीम संभावनाएँ लेकर जन्म लेता है, आवश्यकता केवल इस बात की है कि वह अपनी प्रतिभा को पहचाने और निरंतर परिश्रम के माध्यम से उसे निखारे। उन्होंने कहा कि आज का विद्यार्थी केवल भविष्य का नागरिक नहीं है, बल्कि वर्तमान का भी सक्रिय भागीदार है, इसलिए उसे सामाजिक दायित्वों को समझते हुए आगे बढ़ना चाहिए। मंत्री ने पुस्तकालयों के अधिकाधिक उपयोग, अध्ययन की आदत और सहयोग की भावना को सफलता की कुंजी बताते हुए कहा कि प्रतिस्पर्धा से अधिक सहयोग जीवन को सार्थक बनाता है। उन्होंने विद्यार्थियों को आईआईटी, आईआईएम और अन्य प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संस्थानों की तैयारी के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि सरकार सरकारी विद्यालयों को इस स्तर तक सशक्त बना रही है, जहाँ से विद्यार्थी किसी भी मंच पर प्रतिस्पर्धा कर सकें। उन्होंने 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य की चर्चा करते हुए विश्वास जताया कि आने वाले दो दशक निर्णायक होंगे और 140 करोड़ भारतीयों के सामूहिक प्रयास से भारत पुनः विश्वगुरु के रूप में स्थापित होगा।

एक कक्षा में होंगे दो 'अध्यापक'

शिक्षा-2030 : मानव और एआई शिक्षक : नई पीढ़ी की नई शिक्षा

डॉ. प्रमोद कुमार

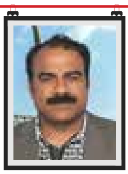

कोविड-19 महामारी के बाद का दशक शिक्षा के इतिहास में एक बड़े परिवर्तन का साक्षी बना है। वर्ष-2020 में जब अचानक विद्यालय बंद हुए, तब डिजिटल तकनीक ही विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का एकमात्र माध्यम बनी। उस समय जो व्यवस्था अस्थायी मानी जा रही थी, वही आज शिक्षा का स्थायी स्वरूप बनती जा रही है। चार वर्ष बाद आज हम केवल स्कूलों में वापसी नहीं देख रहे, बल्कि शिक्षण-अधिगम की पूरी प्रक्रिया का पुनर्गठन देख रहे हैं।

आज के विद्यार्थी, जिन्हें 'जेनरेशन अल्फा' कहा जाता है, ऐसे समय में बड़े हो रहे हैं, जहाँ जानकारी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, ध्यान जल्दी भटकता है और तकनीक जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है। ऐसे में शिक्षा से जुड़ा सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि वर्ष 2030 तक शिक्षा का स्वरूप कैसा होगा? वैश्विक शैक्षिक आँकड़ों, जनसंख्या प्रवृत्तियों, नवाचार-आधारित शोध और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के बढ़ते प्रभाव को देखें तो यह स्पष्ट है कि आने वाले वर्षों में हर विद्यार्थी को दो शिक्षकों की आवश्यकता होगी- एक मानव शिक्षक और दूसरा एआई-आधारित शिक्षक। यह मॉडल मानव शिक्षक को प्रतिस्थापित नहीं करेगा, बल्कि उसकी भूमिका को और सशक्त बनाएगा।

आज की शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि समझ, संवेदना और विवेक विकसित करना है। जेनरेशन अल्फा तकनीक में दक्ष है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि उनमें गहरी वैचारिक समझ स्वतः विकसित हो जाती है। शोध बताते हैं कि आज के बच्चे तेज़ी से सीखते हैं, लेकिन उनका ध्यान अल्पकालिक होता है। वे जिज्ञासु होते हैं, परंतु सीखना अक्सर बिखरा हुआ होता है। उनकी रुचियाँ कोडिंग, गेमिंग, कला और डिजिटल माध्यमों में होती हैं तथा वे पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा इंटरैक्टिव लर्निंग को अधिक पसंद करते हैं।

यही कारण है कि शिक्षा के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि तकनीक के प्रयोग के साथ-साथ मानवीय मूल्यों, गहन सोच और आलोचनात्मक दृष्टि को कैसे विकसित किया जाए। कोविड के बाद शिक्षा में तकनीक का उपयोग अभूतपूर्व गति से बढ़ा है। यू-डाइस (DISE+) 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत के 90 प्रतिशत से अधिक विद्यालयों में अब डिजिटल अवसंरचना उपलब्ध है। सरकारी विद्यालयों में टैबलेट वितरण, स्मार्ट क्लासरूम, इंटरनेट कनेक्टिविटी और BYO-D(Bring Your Own Device) जैसी व्यवस्थाएँ लागू की जा रही हैं।

विश्वविद्यालयों में एआई आधारित टूल्स का उपयोग शोध, मूल्यांकन और अकादमिक लेखन में बढ़ रहा है और कई संस्थान एआई-सहायता प्राप्त दस्तावेज़ों को निर्धारित मानकों के तहत स्वीकार भी कर रहे हैं। शिक्षा में एआई का उपयोग व्यक्तिगत सीखने, स्व-मूल्यांकन, वर्चुअल लैब, भाषा-अधिगम और डेटा-आधारित मूल्यांकन में किया जा रहा है। आने वाले चार वर्षों में यह प्रवृत्ति और मज़बूत होगी। अनुमान है कि 2028 तक अधिकांश विद्यालयों में एआई-आधारित लर्निंग सिस्टम, एआर/वीआर प्रयोगशालाएँ और रियल-टाइम एनालिटिक्स का उपयोग होने लगेगा। शिक्षक अब केवल पाठ पढ़ाने वाले नहीं रहेंगे, बल्कि मार्गदर्शक, मेंटर, सहायक और भावनात्मक संबल देने वाले बनेंगे। वहीं एआई शिक्षक विद्यार्थियों की सीखने की गति, रुचि, क्षमता और कमजोरियों का विश्लेषण कर उन्हें व्यक्तिगत सहायता प्रदान करेगा।

शिक्षक मॉडलः मानव शिक्षक और एआई शिक्षक-

भविष्य की कक्षा दो प्रकार के शिक्षकों से संचालित होगी- मानव शिक्षक और एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) शिक्षक। यह मॉडल शिक्षा में तकनीक और मानवीय संवेदना का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करता है। इसमें किसी एक की जगह दूसरा नहीं लेता, बल्कि दोनों मिलकर शिक्षा को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाते हैं।

मानव शिक्षक शिक्षा की आत्मा होते हैं। वे केवल विषय पढ़ाने वाले नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, संरक्षक, प्रेरक और संवेदनशील साथी होते हैं। एक शिक्षक बच्चों में आत्मविश्वास जगाता है, उनमें नैतिकता और मानवीय मूल्यों का विकास करता है तथा भावनात्मक सहारा प्रदान करता है। वे बच्चों की मानसिक स्थिति को समझते हैं, उनके व्यवहार को पढ़ते हैं और आवश्यकता अनुसार उन्हें दिशा देते हैं। मानव शिक्षक ही वह कड़ी हैं जो सीखने को जीवन से जोड़ते हैं, सहयोग की भावना विकसित करते हैं और कक्षा को एक सुरक्षित, सकारात्मक वातावरण में बदलते हैं।

दूसरी ओर, एआई शिक्षक एक व्यक्तिगत शिक्षण-सहायक के रूप में कार्य करता है। यह प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की गति, रुचि, क्षमता और कमज़ोरियों को पहचानकर उसी अनुसार सामग्री प्रस्तुत करता है। एआई बार-बार अभ्यास कराता है, तुरंत प्रतिक्रिया देता है, अवधारणाओं को मज़बूत करता है और यह बताता है कि विद्यार्थी कहाँ पिछड़ रहा है। यह डेटा के आधार पर सीखने के पैटर्न का विश्लेषण करता है और शिक्षक को सटीक जानकारी उपलब्ध कराता है।

जहाँ मानव शिक्षक भावनाओं, नैतिकता और सृजनात्मकता पर ध्यान देते हैं, वहीं एआई शिक्षक अभ्यास, मूल्यांकन और व्यक्तिगत मार्गदर्शन में सहायक होता है। विद्यार्थी एआई से अभ्यास और पुनरावृत्ति करते हैं, जबकि शिक्षक उच्च-स्तरीय सोच, संवाद, मूल्य-आधारित शिक्षा और समस्या-समाधान पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

यह द्वि-शिक्षक मॉडल न तो तकनीक पर निर्भरता

बढ़ाता है और न ही मानव भूमिका को कम करता है, बल्कि दोनों की शक्ति को जोड़कर शिक्षा को अधिक प्रभावशाली, संतुलित और भविष्य के लिए तैयार बनाता है।

आने वाली चुनौतियाँ-

भविष्य की यह तकनीक-आधारित शिक्षा जितनी आशाजनक दिखती है, उतनी ही चुनौतियाँ भी अपने साथ लेकर आती है। यदि इन चुनौतियों को समय रहते नहीं समझा गया, तो तकनीक का लाभ सीमित हो सकता है।

1. विद्यार्थियों से जुड़ी संज्ञानात्मक और भावनात्मक चुनौतियाँ-

आज के विद्यार्थी तकनीक से जुड़े तो हैं, लेकिन इसके कारण कई नई समस्याएँ भी सामने आ रही हैं। लगातार स्क्रीन पर रहने से बच्चों में एकाग्रता की कमी देखी जा रही है। वे जल्दी उत्तर पाने के आदी हो गए हैं, जिससे गहन सोच और विश्लेषण की क्षमता कमजोर हो रही है। अत्यधिक जानकारी के कारण यह तय करना कठिन हो जाता है कि क्या उपयोगी है और क्या नहीं। ऐसे समय में विद्यार्थियों को केवल तकनीकी सहायता नहीं, बल्कि मार्गदर्शन, धैर्य और भावनात्मक सहयोग की आवश्यकता होती है। एआई किसी समस्या के पैटर्न को पहचान सकता है, लेकिन बच्चे की मनःस्थिति को समझना, उसे सँभालना और प्रेरित करना केवल एक संवेदनशील शिक्षक ही कर सकता है।

2. शिक्षकों की तैयारी और चुनौतियाँ-

शिक्षकों के सामने भी बड़ा परिवर्तन है। उन्हें न केवल नई तकनीकों और एआई टूल्स को सीखना है, बल्कि यह भी समझना है कि इन्हें पढ़ाने की प्रक्रिया से कैसे जोड़ा जाए। प्राथमिक शिक्षक हों या उच्च कक्षाओं के, भाषा शिक्षक हों या गणित के सभी को डिजिटल शिक्षण के अनुरूप स्वयं को ढालना होगा।

कई वरिष्ठ शिक्षकों के लिए तकनीक को अपनाना चुनौतीपूर्ण है, वहीं नए शिक्षकों को संतुलन बनाना सीखना होगा, ताकि तकनीक पढ़ाई पर हावी न हो जाए। कक्षा में अलग-अलग गति से सीखने वाले विद्यार्थियों को सँभालना, स्क्रीन-टाइम और सामाजिक संवाद में संतुलन बनाए रखना भी एक बड़ी जिम्मेदारी है।इसलिए आवश्यक है कि शिक्षकों को निरंतर प्रशिक्षण मिले- केवल तकनीकी नहीं, बल्कि यह सिखाने के लिए कि तकनीक का प्रयोग सार्थक, मानवीय और उद्देश्यपूर्ण कैसे किया जाए।

मूल्यांकन, परीक्षा और भविष्य की दिशा-

भविष्य की शिक्षा व्यवस्था में पारंपरिक परीक्षाएँ, जो केवल याद करने और समयबद्ध उत्तरों पर आधारित होती हैं, अब पर्याप्त नहीं रहेंगी। आज की बदलती दुनिया में विद्यार्थियों की वास्तविक समझ, सोचने की क्षमता और व्यावहारिक ज्ञान का आकलन आवश्यक हो गया है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था को अब ऐसे मूल्यांकन तरीकों की ओर बढ़ना होगा, जो केवल अंक न दें, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को सही ढंग से दर्शाएँ।

आने वाले समय में पोर्टफोलियो-आधारित मूल्यांकन अधिक महत्त्वपूर्ण होगा, जिसमें छात्र के पूरे वर्ष के कार्य,

प्रोजेक्ट और प्रगति को देखा जाएगा। इसी तरह प्रदर्शन-आधारित कार्य (Performance Tasks) को बढ़ावा देना होगा, जहाँ विद्यार्थी वास्तविक जीवन से जुड़े प्रश्नों का समाधान करेंगे। एआई-आधारित अनुकूली मूल्यांकन प्रणाली (Adaptive Assessment) छात्रों की सीखने की गति और स्तर के अनुसार प्रश्न प्रस्तुत करेगी और उनकी प्रगति को समय के साथ मापेगी। इसके साथ-साथ मूल्यांकन में रचनात्मकता, सहयोग, आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान जैसे गुणों को भी शामिल करना आवश्यक होगा।

आगे की संभावनाएँ-

इन चुनौतियों के बावजूद भविष्य की शिक्षा में अपार संभावनाएँ हैं। व्यक्तिगत सीखने की व्यवस्था से प्रत्येक छात्र अपनी गति से सीख सकेगा। एआर और वीआर जैसी तकनीकों से विद्यार्थी वास्तविक परिस्थितियों का अनुभव कर सकेंगे, जिससे उनकी रचनात्मकता बढ़ेगी। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि एआई शिक्षकों का प्रशासनिक बोझ कम करेगा, जिससे वे बच्चों के साथ अधिक समय बिता सकेंगे और मानवीय मूल्यों, संवाद और मार्गदर्शन पर ध्यान केंद्रित कर पाएँगे। यही भविष्य की प्रभावी और संतुलित शिक्षा की दिशा है।

आह्वानः शिक्षा का भविष्य और भारत की जिम्मेदारी-

आज जब भारत विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था आने वाली पीढ़ी को उस भविष्य के लिए तैयार कर रही है? अगले दस वर्षों में दुनिया जिस गति से बदलने जा रही है, उसके सामने पारंपरिक शिक्षा प्रणाली टिक पाएगी या नहीं- यह एक गंभीर विचार का विषय है।

शिक्षा-2030 केवल पाठ्यक्रम बदलने का नाम नहीं है, बल्कि सोच, दृष्टि और व्यवस्था के संपूर्ण परिवर्तन का संकेत है। आज आवश्यकता है एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की, जो अनुकूलनीय (Adaptive) हो, समावेशी (Inclusive) हो, मानव-केंद्रित हो और नैतिक मूल्यों से जुड़ी हो। तकनीक इसमें सहायक बने, लेकिन दिशा देने वाला मनुष्य ही रहे।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि शिक्षक कभी भी अप्रासंगिक नहीं होंगे। बल्कि आने वाले समय में उनकी भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाएगी। एआई शिक्षक का स्थान नहीं लेगा, बल्कि शिक्षक की शक्ति को बढ़ाएगा। इसलिए शिक्षकों को डरने की नहीं, बल्कि स्वयं को तैयार करने की आवश्यकता है नई तकनीक सीखने की, नए कौशल अपनाने की और बदलते समय के साथ आगे बढ़ने की। इसके लिए सरकार और समाज को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि शिक्षकों को निरंतर प्रशिक्षण मिले, उन्हें तकनीक के साथ काम करने का आत्मविश्वास दिया जाए, उनकी नौकरी की सुरक्षा बनी रहे और उन्हें केवल परिणामों से नहीं, बल्कि प्रयासों से आँका जाए।

मूल्यांकन प्रणाली को भी बदलना होगा। अब केवल अंक नहीं, बल्कि समझ, रचनात्मकता, सहयोग और समस्या-समाधान क्षमता को महत्त्व देना होगा। हर बच्चे तक तकनीक पहुँचे- यह भी हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी है, ताकि कोई भी बच्चा केवल संसाधनों की कमी के कारण पीछे न छूटे। आने वाले चार वर्षों में मानव और एआई का संयोजन शिक्षा की दिशा बदल देगा। यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि एक सच्चाई है, जो हमारे सामने आकार ले रही है। यह परिवर्तन डराने वाला नहीं, बल्कि अवसरों से भरा है, यदि हम इसे समझदारी से अपनाएँ।

अंततः, शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास कराना नहीं, बल्कि ऐसे नागरिक तैयार करना है, जो सोच सकें, संवेदनशील हों, तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग करें और मानवता के मूल्यों को समझें। शिक्षा-2030 का सपना तभी साकार होगा, जब हर बच्चा सम्मान, समानता और आशा के साथ आगे बढ़े। भविष्य मनुष्य और मशीन- दोनों का है; और जब दोनों साथ चलेंगे, तभी भारत सच्चे अर्थों में विकसित बनेगा।

राज्य कार्यक्रम अधिकारी (राष्ट्रीय शिक्षा नीति)
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

नौनिहालों के लिए सीखने का जरिया बन सकते हैं खेल

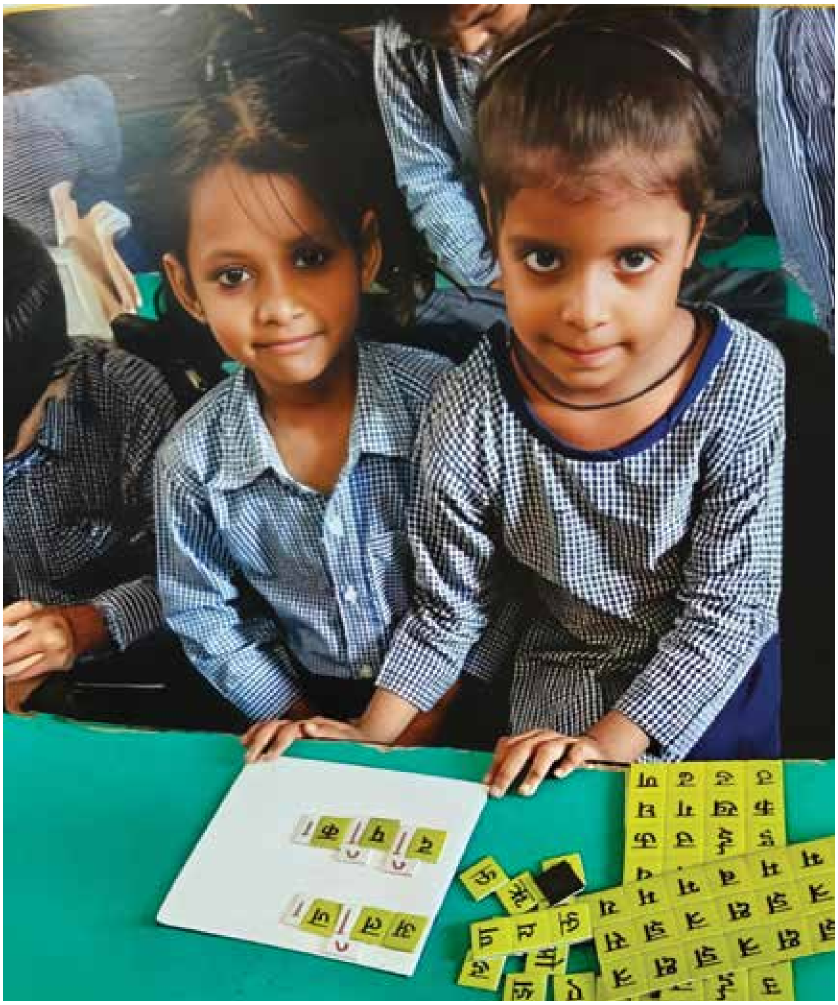

डिम्पल रानी

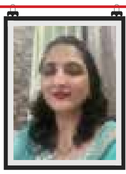

बच्चे जब घर की चारदीवारी से निकल कर अपनी प्राथमिक शिक्षा को हासिल करने के लिए पहली बार घर की चौखट से स्कूल की चौखट तक पहुँचते हैं तो यह पल किसी भी परिवार के लिए गर्व और उत्साह से भरा होता है। ऐसे में जाहिर सी बात है कि स्कूल में जाने वाले मासूम यह चाहते हैं कि उन्हें स्कूल में भी घर जैसा माहौल मिले ताकि उनकी स्कूल में आने की रुचि बढ़े। हम जानते हैं कि प्राथमिक शिक्षा किसी भी बच्चे के शैक्षणिक जीवन की नींव होती है, यह न केवल उन्हें शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि यह बच्चों में सीखने की रुचि विकसित करने और उनके व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायक होती है। ऐसे में स्कूल में पहली बार आ रहे बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि को विकसित करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं-

खेल-खेल में पढ़ाई से बढ़ेगी रुचि -

बच्चा हमेशा नटखट मन का होता है। वह आनंद के साथ किसी भी कार्य को आसानी से कर सकता है। ऐसे में हम खेल-खेल में बच्चों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं। खेल और शिक्षण सामग्री बच्चों को पढ़ाई में रुचि दिलाने का सबसे कारगर तरीका हो सकता है। बड़ी बात यह है कि रंगीन चित्र, पहेलियाँ और शैक्षिक खेल बच्चों को आकर्षित करते हैं और उन्हें सीखने की प्रक्रिया में शामिल करते हैं। पजल्स और पहेलियाँ बच्चों की तार्किक सोच और समस्या-समाधान के कौशल को भी बढ़ाती हैं। बचपन में जब घरवाले बच्चों से पहेलियाँ पूछा करते थे, तो इससे बच्चों के दिमाग की खूब कसरत होती थी। इसे कक्षाओं के पाठयक्रम में शामिल कर बच्चों के कौशल को बढ़ाया जा सकता है।

म्यूजिक और साउंड टूल्स का प्रयोग -

पुरानी कहावत है- संगीत से पत्थर भी बोलने लगते हैं। संगीत के जरिए बच्चों को पढ़ाई से जोड़ा जाता है। मासूम बच्चे संगीत की धुन से खुद को जोड़ते हैं और इससे उनके भी पाँव थिरकने लगते हैं। अगर इसी लय के साथ पढ़ाई को जोड़ दिया जाए तो बच्चों का जुड़ाव भी पढ़ाई के साथ बढ़ सकता है। झुनझुने या छोटे ड्रम बच्चों के ध्यान और रचनात्मकता को बढ़ाने में सहायक होते हैं। इनके अलावा गाने, ताल और बालगीत गाकर उन्हें पढ़ाई से जोड़ा जा सकता है।

खेल-खिलौने से बढ़ेगी खिलखिलाहट, पढ़ाई की राह होगी आसान-

बच्चे खिलौनों को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। किसी खिलौने से निकलने वाली मधुर ध्वनि जब उनके कानों में पड़ती है तो वे उस पर पूरा ध्यान लगाते हैं। हम बच्चों के लिए गेंद, हूप्स और अन्य शारीरिक गतिविधियों से जुड़े खिलौनों का उपयोग करके उन्हें शैक्षिक खेलों में शामिल कर सकते हैं। गेंद को इधर से उधर पासकर गिनती सीखने की गतिविधि करवा सकते हैं, साथ ही पहाड़े व कटवाँ गिनती भी उनको सिखा सकते हैं और इसे वे आसानी से अपने दिमाग में उतार सकते हैं।

ड्रामेटिक प्ले सामग्री से बुद्धि होगी तेज -

जब छोटे बच्चों को हम किसी किरदार में शामिल करते हैं तो वे बहुत खुश होते हैं। हम उनको ऐसे किरदार निभाने वाले खिलौने जैसे किचन सेट, डॉक्टर का सेट, किसान का सेट आदि दिखाकर व अभिनय में शामिल करके उनकी पढ़ाई के प्रति रुचि को बढ़ा सकते हैं। इन से उनका भाषा कौशल तो बढ़ेगा ही, साथ ही साथ सामाजिक समझ का भी विकास होगा।

डिजिटल ऐप से पढ़ाई पर रहेगा फोकस-

डिजिटल ऐप जैसे उपकरणों की ओर बच्चे काफी जल्दी आकर्षित होते हैं, क्योंकि उनमें उनकी रुचि कुछ ज्यादा ही होती है। वे बड़ों को देखकर सीखते हैं और फिर एक समय में बड़ों की तरह ही करने की कोशिश भी करते हैं। ऐसे में हम कुछ शिक्षा से जुड़े ऐप और वीडियो का प्रयोग कर उनके लिए शिक्षा को और रुचिकर बना सकते हैं।

फ्लैश कार्ड्स से बढ़ेगा आकर्षण-

फ्लैश कार्ड की ओर भी छोटे बच्चे तेजी से आकर्षित होते हैं। अगर बच्चों की उम्र के अनुसार इनका चयन

किया जाए तो और भी कामयाबी मिल सकती है। कार्ड दिखाकर बच्चों को कह सकते हैं कि वे दिखाई जा रही आकृति की पहचान करें। फिर उनसे जवाब माँग सकते हैं। इससे बच्चे ऊबने की बजाए उनसे जुड़ाव बढ़ाएँगे। शब्द, अक्षर और संख्या सिखाने के लिए फ्लैश काड्र्स बहुत उपयोगी होते हैं।

ब्लॉक्स और क्यूब्स-

विभिन्न तरह के रंग किसी को भी आसानी से अपनी ओर खींच सकते हैं। ऐसे में विभिन्न रंगों और आकारों वाले ब्लॉक्स बच्चों को रचनात्मकता को विकसित करने में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। ये बच्चों से आकार और कोई पैटर्न बनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

रंगीन बोर्ड और चॉक/मार्कर-

रंगीन बोर्ड और चॉक भी बच्चों को आकर्षित करता है। बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ाने में इनका प्रयोग किया जा सकता है। बच्चों को बोर्ड पर चित्र बनाने के लिए भी प्रेरित किया जा सकता हैं।

कहानी की किताबें और चित्र सामग्री-

चित्रों के जरिए जो कहानी पढ़ी या कही जाती है तो वह किसी के भी जेहन में आसानी से उतर जाती हैं। रंगीन चित्रों और आकर्षक कहानियों के माध्यम से बच्चों को पढ़ाई के प्रति जागरूक किया जा सकता हैं। ये कहानियाँ और चित्र बदल-बदल कर दिखाई और सुनाई जाँए तो बच्चों को और भी अच्छा लगता है। इससे उनके भाषा कौशल और कल्पना शक्ति को बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

गणितीय सामग्री से रुचि और बढ़ेगी-

अबैकस, काउंटिंग बीड्स और गिनती की छड़ियों का उपयोग कर बच्चों को गणित सिखाने के लिए किया जा सकता है। इससे संख्याओं की समझ विकसित होती है। गणित के ज्ञान में बच्चे तभी गहरी रुचि रखेंगे, जब हर समय उनको नई जानकारी मिलेगी। इससे उनकी जिज्ञासा बढ़ती चली जाएगी।

शिक्षा जितनी रोचक होगी, बच्चे भी उसमें उतनी ही गंभीरता से अपना आकर्षण बढ़ाएँगे। साथ ही उनका शिक्षकों से जुड़ाव भी बना रहेगा। खेल सामग्रियों का उचित उपयोग प्राथमिक शिक्षा को मज़ेदार, प्रभावी और बच्चों के लिए प्रेरणादायक बना सकता है। शिक्षकों को बच्चों की रुचि और उम्र के अनुसार सामग्री का चयन करना चाहिए ताकि वे सीखने की प्रक्रिया का आनंद ले सकें। अगर कोई बच्चा किसी विषय में विशेष रुचि दिखाए तो उसके लिए वही विषय चुनने में उसकी मदद करनी चाहिए। न केवल टीचर्स बल्कि अभिभावकों को भी चाहिए कि वे बच्चों की पढ़ाई के लिए अनुकूल मंच तैयार करें, ताकि देश की भावी पीढ़ी और भी रुचि के साथ पढ़ाई कर सके और आगे बढ़ सके।

प्रोग्राम एसोसिएट
लैंग्वेज़ एंड लर्निंग फाउंडेशन
पंचकूला

विद्यालय-समुदाय सहभागिता की सशक्त मिसाल

जटवाड़ विद्यालय में नवनिर्मित प्रार्थना शेड का लोकार्पण

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जटवाड़, ज़िला-अंबाला में ग्राम-पंचायत के सहयोग से निर्मित नवीन प्रार्थना शेड का विधिवत लोकार्पण जिला शिक्षा अधिकारी श्री सुधीर कालड़ा के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. नीलम शर्मा ने पुष्पगुच्छ भेंट कर माननीय अतिथि का आत्मीय स्वागत किया।

उद्घाटन समारोह के दौरान जिला शिक्षा अधिकारी श्री सुधीर कालड़ा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में आगे बढ़ने और श्रेष्ठता प्राप्त करने के असीम अवसर होते हैं। आवश्यकता केवल उन्हें पहचानने और सही दिशा में सतत प्रयास करने की है। राष्ट्रीय गणित दिवस के अवसर पर उन्होंने महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के प्रेरणादायी जीवन एवं गणित के क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को गणित विषय के प्रति रुचि विकसित करने हेतु प्रेरित करते हुए कहा कि गणित तार्किक चिंतन, समस्या-समाधान तथा नवाचार की क्षमता को सुदृढ़ करता है।

श्री कालड़ा ने 'विकसित भारत-2047' के संकल्प को साकार करने में विद्यार्थियों की सक्रिय भूमिका पर बल देते हुए स्वच्छता अपनाने, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुदृढ़ करने, निरक्षर व्यक्तियों को साक्षर बनाने तथा अपने गाँव एवं परिवार से जुड़े स्वतंत्रता सेनानियों के प्रेरक प्रसंगों को जानने के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया।

इस अवसर पर उन्होंने ग्राम पंचायत जटवाड़ के सहयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए विशेष रूप से माननीय सरपंच श्री वीरेंद्र सिंह सोनी जी का आभार व्यक्त किया, जिनके सहयोग से विद्यालय में यह उपयोगी प्रार्थना शेड निर्मित हो सका। यह प्रार्थना शेड विद्यार्थियों को वर्षा एवं शीत ऋतु से सुरक्षा प्रदान करेगा तथा सामूहिक प्रार्थना एवं विभिन्न गतिविधियों के लिए एक सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित स्थान उपलब्ध कराएगा। इस सराहनीय योगदान के लिए सरपंच श्री वीरेंद्र सिंह सोनी जी को प्रशंसा-पत्र एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया गया। अपने संबोधन में सरपंच महोदय ने विद्यार्थियों को प्लास्टिक-मुक्त एवं स्वच्छ वातावरण अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के दौरान राज्य स्तरीय रेड क्रॉस कैंप में आयोजित लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर छात्रा नंदिनी तथा 'बेस्ट को-ऑर्डिनेटर ऑफ जूनियर' के रूप में चयनित कनिका को प्रशंसा-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही विद्यालय के कर्मठ अध्यापक गुरजंट सिंह तथा एबीआरसी शैली अग्रवाल को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

शिक्षा अधिकारी ने विद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों, सुदृढ़ आधारभूत संरचना तथा अभिलेखों के सुव्यवस्थित रख-रखाव के लिए प्रधानाचार्या की विशेष रूप से सराहना की। प्रधानाचार्या ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए प्रतीक स्वरूप एक प्रकृति-अनुकूल पौधा भेंट कर माननीय अतिथि के प्रति आभार व्यक्त किया।

विद्यार्थियों की रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को और भी गरिमामय बना दिया। विद्यालय के समस्त स्टाफ सदस्यों ने पूर्ण निष्ठा, समर्पण एवं टीम-भावना के साथ कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। प्रधानाचार्या एवं ग्राम पंचायत जटवाड़ के सरपंच के मध्य स्थापित यह प्रभावी समन्वय विद्यालय के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक उत्कृष्ट 'गुड प्रेक्टिस' का उदाहरण है। यह पहल विद्यालय-समुदाय सहभागिता को सुदृढ़ करती है तथा अन्य शैक्षणिक संस्थानों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होती है।

डॉ. नीलम शर्मा
प्रधानाचार्या
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
जटवाड़, ज़िला- अंबाला, हरियाणा

सरकारी स्कूलों के 132 छात्र इसरो यात्रा पर

प्रदेश के होनहार विज्ञान की नई दुनिया देखने रवाना, अंबाला से शुरू हुआ विशेष शैक्षिक सफर

सोनाली वोहरा

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्, पंचकूला के तत्त्वावधान में अंबाला से राज्यभर के 132 मेधावी विद्यार्थियों को एक विशेष शैक्षणिक भ्रमण पर इसरो, अहमदाबाद के लिए रवाना किया गया। यह वह क्षण था, जब प्रदेश के भविष्य के वैज्ञानिकों की आँखों में उत्साह, जिज्ञासा और सीखने का संकल्प स्पष्ट रूप से झलक रहा था। यह सपना माननीय स्कूल शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा जी के मार्गदर्शन में साकार हो पाया, जिसका श्रेय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री विनीत गर्ग को जाता है, जिन्होंने विद्यार्थियों की इसरो यात्रा को साकार करने में सराहनीय योगदान दिया।

इस कार्य को सफलतापूर्वक अंत तक पहुँचाने में श्री जितेंद्र कुमार, राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा हरियाणा तथा डॉ. मयंक वर्मा, संयुक्त राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा हरियाणा ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहीं कार्यक्रम को सुचारु रूप से पूर्ण कराने में विज्ञान परियोजना समन्वयक श्रीमती सोनाली का योगदान भी अत्यंत सराहनीय रहा।

यह शैक्षिक भ्रमण केवल एक यात्रा मात्र नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन में विज्ञान के प्रति नई चेतना जागृत करने का एक सशक्त माध्यम है। इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों को कक्षा-कक्ष की पुस्तकीय सीमाओं से बाहर निकालकर वैज्ञानिक अनुसंधान की वास्तविक दुनिया से परिचित कराना है।

इसरो जैसी प्रतिष्ठित संस्था का प्रत्यक्ष अवलोकन विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, नवाचार और जिज्ञासु प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करेगा। यहाँ की कार्य संस्कृति, अनुसंधान की पद्धतियाँ तथा अत्याधुनिक तकनीकों का सजीव अनुभव विद्यार्थियों को उच्च लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित करेगा।

यह यात्रा विद्यार्थियों को यह संदेश देगी कि सरकारी विद्यालयों के छात्र भी दृढ़ संकल्प, परिश्रम और उचित मार्गदर्शन से वैश्विक वैज्ञानिक मंच पर अपनी पहचान बना सकते हैं। ऐसे प्रयास न केवल विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को सुदृढ़ करते हैं, बल्कि राज्य और राष्ट्र के उज्ज्वल वैज्ञानिक भविष्य की नींव भी रखते हैं।

ज्ञान से होगा अभूतपूर्व विस्तार-

भ्रमण दल को जिला परियोजना समन्वयक (डीपीसी) अंबाला, श्री प्रमोद कुमार ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों को इसरो में विभिन्न वैज्ञानिक मॉडलों, अंतरिक्ष अनुसंधान प्रक्रियाओं तथा तकनीकी प्रयोगों को निकट से देखने और समझने का अवसर मिलेगा। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए डीपीसी प्रमोद कुमार ने कहा कि इस शैक्षिक भ्रमण से बच्चों के विज्ञान संबंधी ज्ञान में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। इसरो में हो रहे प्रयोगों और अनुसंधान कार्यों को देखकर विद्यार्थी अपने अध्ययन काल में वैज्ञानिक सिद्धांतों को और अधिक गहराई से समझ सकेंगे तथा उनका व्यावहारिक उपयोग कर पाएँगे। साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को अनुशासन बनाए रखने, वैज्ञानिक गतिविधियों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करने तथा हरियाणा का सम्मानपूर्वक प्रतिनिधित्व करने की प्रेरणा दी। इस भ्रमण दल में विद्यार्थियों के साथ एस्कॉर्ट शिक्षक भी मार्गदर्शक के रूप में शामिल रहे।

वैज्ञानिक अनुभवों से समृद्ध होगा भविष्य-

इसरो भ्रमण के दौरान विद्यार्थी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, उपग्रह निर्माण, रॉकेट मॉडलों तथा विभिन्न शोध परियोजनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करेंगे। इससे न केवल उनके वैज्ञानिक कौशल में वृद्धि होगी, बल्कि भविष्य में अंतरिक्ष अनुसंधान, इंजीनियरिंग और विज्ञान के विविध क्षेत्रों में करियर निर्माण की दिशा भी सुदृढ़ होगी।

इस शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से विद्यार्थियों को कक्षा-कक्ष में पढ़े गए सैद्धांतिक ज्ञान को वास्तविक प्रयोगों और तकनीकी प्रक्रियाओं से जोड़ने का सुनहरा अवसर मिलेगा। उपग्रहों की संरचना, प्रक्षेपण प्रणाली, नियंत्रण कक्षों की कार्यप्रणाली और वैज्ञानिकों द्वारा अपनाई जाने वाली अनुसंधान पद्धतियों को निकट से देखकर विद्यार्थियों की जिज्ञासा और तार्किक सोच को नई दिशा प्राप्त होगी।

इसरो जैसे विश्वस्तरीय संस्थान का वातावरण विद्यार्थियों में अनुशासन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार और टीमवर्क की भावना विकसित करेगा। वैज्ञानिकों से संवाद एवं उनके अनुभवों को सुनकर विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि कठिन परिश्रम, धैर्य और निरंतर अभ्यास से कैसे असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है।

यह भ्रमण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाएगा और उन्हें बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित करेगा। ऐसे अनुभव भविष्य में उन्हें विज्ञान, प्रौद्योगिकी, गणित और अनुसंधान से जुड़े विषयों को गंभीरता से अपनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। निस्संदेह, यह इसरो भ्रमण विद्यार्थियों के शैक्षणिक जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव बनेगा, जो उनके उज्ज्वल भविष्य और विकसित भारत के निर्माण में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

विज्ञान परियोजना समन्वयक
हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्, पंचकूला

'शिक्षा सारथी' स्टॉल बना आकर्षण का केंद्र

गीता महोत्सव में 'शिक्षा सारथी' प्रदर्शनी स्टॉल बना शिक्षा, नवाचार और संवाद का सशक्त केंद्र

दर्शन लाल बवेजा

जिला स्तरीय अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव, जगाधरी में शिक्षा विभाग, यमुनानगर द्वारा लगाया गया 'शिक्षा सारथी' प्रदर्शनी स्टॉल आगंतुकों के लिए केवल जानकारी का स्थल नहीं, बल्कि आधुनिक शिक्षा की सोच, नवाचार और सहभागिता का जीवंत मंच बनकर उभरा। यह स्टॉल इस बात का सशक्त उदाहरण था कि जब शैक्षिक अनुभवों को सरल, रोचक और समसामयिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो शिक्षा जन-जन से सहज रूप में जुड़ जाती है।

शिक्षा निदेशालय, हरियाणा द्वारा प्रकाशित 'शिक्षा सारथी' मासिक पत्रिका इस प्रदर्शनी की केंद्रीय धुरी रही। पत्रिका के माध्यम से विद्यालयों में हो रहे नवाचार, अनुभवात्मक अधिगम, गतिविधि-आधारित शिक्षण, विज्ञान प्रयोग, प्रेरक लेख और विभिन्न शैक्षिक योजनाओं के प्रभाव को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया। स्टॉल पर प्रदर्शित अंक यह दर्शा रहे थे कि 'शिक्षा सारथी' केवल सूचना का संकलन नहीं, बल्कि शिक्षकों, विद्यार्थियों और समाज के बीच संवाद का सेतु है।

विशेष रूप से खेल-खेल में विज्ञान जैसी शृंखलाओं ने आगंतुकों का ध्यान आकर्षित किया। शिक्षा सारथी में पिछले आठ वर्षों से निरंतर प्रकाशित यह शृंखला विज्ञान को डर या बोझ के स्थान पर आनंद और जिज्ञासा का विषय बनाती आई है। हजारों विद्यार्थियों और शिक्षकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में इसकी भूमिका को प्रदर्शनी में आए शिक्षाविदों ने खुले मन से स्वीकार किया।

स्टॉल की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह रही कि 'शिक्षा सारथी' को डिजिटल माध्यम से भी सहज रूप में उपलब्ध कराया गया। आगंतुकों ने क्यूआर कोड स्कैन कर अपने मोबाइल फोन पर पत्रिका को ऑनलाइन पढ़ा। विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों के लिए यह अनुभव नया, सरल और आकर्षक रहा। अनेक शिक्षकों ने पत्रिका के लिए लेखन में योगदान देने की इच्छा व्यक्त की और प्रकाशन प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की, जिससे स्टॉल एक सक्रिय शैक्षिक संवाद केंद्र में परिवर्तित हो गया।

अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के समापन अवसर पर आयोजित पारितोषिक वितरण समारोह में उपस्थित पूर्व शिक्षा मंत्री माननीय श्री कँवर पाल जी को, नगराधीश श्री पीयूष गुप्ता की उपस्थिति में 'शिक्षा सारथी' मासिक पत्रिका की प्रतियाँ सम्मानपूर्वक भेंट की गईं। पत्रिका का

अवलोकन करते हुए उन्होंने इसकी विषय वस्तु, प्रस्तुति और शिक्षा के क्षेत्र में इसके योगदान की सराहना की तथा इसे शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी बताया।

माननीय पूर्व शिक्षा मंत्री जी ने 'शिक्षा सारथी' से जुड़े सभी सदस्यों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि यह पत्रिका शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक सोच, नवाचार और जागरूकता का प्रभावी माध्यम बनकर समाज को दिशा प्रदान करती रहे। उनके प्रेरणादायी शब्दों से पत्रिका की गरिमा और महत्त्व और अधिक सुदृढ़ हुआ।

प्रदर्शनी के दौरान जिला एलिमेंट्री एवं जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती प्रेमलता बक्शी, खंड शिक्षा अधिकारी श्रीमती सुनीता गुप्ता, जिला परियोजना सहायक श्री धर्मवीर खटकड़ सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारियों और प्रधानाचार्यों ने स्टॉल का अवलोकन किया। सभी ने 'शिक्षा सारथी' की विषय वस्तु, गुणवत्ता और क्यूआर कोड आधारित डिजिटल पठन व्यवस्था को समयानुकूल, दूरदर्शी और अनुकरणीय पहल बताया।

स्टॉल पर मैजिक बस इंडिया फाउंडेशन द्वारा संचालित जीवन कौशल कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सहयोग, सहानुभूति और निर्णय क्षमता जैसे आवश्यक जीवन कौशल विकसित करने के प्रयासों को दर्शाता रहा।

समग्र रूप से देखा जाए तो अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में शिक्षा विभाग, यमुनानगर का 'शिक्षा सारथी' प्रदर्शनी स्टॉल शिक्षा के बदलते स्वरूप, नवाचार और समाज से उसके गहरे जुड़ाव का प्रभावी उदाहरण बना। इसने यह स्पष्ट किया कि जब शिक्षा अनुभव, संवाद और तकनीक से जुड़ती है, तभी वह वास्तव में प्रेरक और परिवर्तनकारी बनती है और यही संदेश 'शिक्षा सारथी' ने पूरे महोत्सव में सशक्त रूप से प्रसारित किया।

साइंस मास्टर/ईएसएचएम
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
दामला, खंड- जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

शिक्षिका कविता की पुस्तक 'प्रेरणा लूँ मैं' का लोकार्पण

डॉ. सुदेश रानी

डाइट गुरुग्राम एवं इंद्रप्रस्थ लिटरेचर फ़ेस्टिवल हरियाणा के संयुक्त तत्त्वावधान में राजकीय प्राथमिक पाठशाला, सराय अलावर्दी में कार्यरत प्राथमिक अध्यापिका कविता यादव द्वारा लिखित पुस्तक 'प्रेरणा लूँ मैं' का भव्य लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर जिला शैक्षिक प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) की प्राचार्य, सह-प्राचार्य, इंद्रप्रस्थ लिटरेचर फ़ेस्टिवल के पदाधिकारीगण तथा डाइट के प्रोफ़ेसर उपस्थित रहे।

प्राचार्य डॉ. पृथ्वीराज यादव की अध्यक्षता में आयोजित पुस्तक विमोचन समारोह में इंद्रप्रस्थ लिटरेचर फ़ेस्टिवल हरियाणा की प्रदेशाध्यक्ष एवं लोकगीतकार डॉ. कृष्णा कुमारी आर्या मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने शिक्षाविद् कविता यादव द्वारा संकलित पुस्तक 'प्रेरणा लूँ मैं' की समीक्षात्मक प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर डॉ. सुनीता ने पुस्तक में संकलित 72 कविताओं के चयनित अंशों का वाचन किया तथा कुछ विशेष कविताएँ पढ़कर श्रोताओं को भावविभोर किया। पुस्तक की लेखिका एवं अध्यापिका कविता यादव ने बताया कि उन्होंने अपनी दिनचर्या के अनुभवों, शैक्षिक कार्यों और जीवन के विशेष प्रसंगों को अपने काव्य-सृजन का आधार बनाया है। इस काव्य-संकलन में प्रकृति संरक्षण, देशभक्ति, स्त्री सशक्तीकरण, पौधारोपण, पर्यावरण संरक्षण से जुड़े सेमिनारों व गतिविधियों, जीवन-संघर्ष तथा जीवन-निर्माण के विचारों को संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया गया है। इस रचनात्मक यात्रा में डॉ. कृष्णा आर्या एवं प्रेमलता चौधरी का उन्हें विशेष मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त हुआ।

अपनी कविता 'प्रेरणा लूँ मैं पेड़ों से' का पाठ करते हुए कविता यादव ने कहा कि मनुष्य अपने जीवन में हरियाली, जल, पेड़-पौधों और पुष्पों के प्रति कृतज्ञ है। प्रकृति के प्रति मनुष्य हर कदम पर ऋणी है और इन कविताओं में उसी ऋण से उऋण होने की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उन्होंने कहा कि पेड़ हमें निःस्वार्थ भाव से छाया, फल, फूल, औषधि और प्राणवायु प्रदान करते हैं। फिर भी हम अक्सर उनके महत्त्व को भूल जाते हैं। उनकी यह कविता प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व, संवेदनशीलता और संरक्षण का संदेश देती है। कविता के माध्यम से उन्होंने पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी निभाने, वृक्षारोपण को जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने और भावी पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, हरित भविष्य गढ़ने का आह्वान किया।

डॉ. कृष्णा आर्या ने अपने संबोधन में कहा कि इस पुस्तक में दैनिक जीवन, अनुभवों और क्रियाकलापों को अत्यंत संजीदगी से प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने कहा कि समाज के प्रति सेवा-भाव विकसित करने का पुस्तक-लेखन एक सशक्त माध्यम है और 'प्रेरणा लूँ मैं' इसी दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. पृथ्वीराज यादव ने पुस्तक में संकलित कविताओं और संदेशों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हरियाणा के शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा द्वारा भी इस पुस्तक की सराहना की गई है, जो इसकी गुणवत्ता और प्रासंगिकता का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि 'प्रेरणा लूँ मैं' शिक्षा-जगत के लिए एक प्रेरक कृति है, जो शिक्षकों एवं विद्यार्थियों -दोनों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

इस अवसर पर डीएवी स्कूल, नारनौल से गणित विषय की मास्टर ट्रेनर युगांता ने गणितीय सूत्रों पर आधारित कविता प्रस्तुत कर गणित को संगीतमय और रुचिकर ढंग से पढ़ाने की शिक्षण विधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने गणित जैसे कठिन विषय को सरल एवं आनंददायक बनाने के व्यावहारिक उपाय साझा किए।

कार्यक्रम में उपस्थित सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफ़ेसर प्रेमलता चौधरी ने पुस्तक 'प्रेरणा लूँ मैं' की पृष्ठभूमि और रचनात्मक संदर्भों पर विस्तार से प्रकाश डाला। वहीं, अनिल यादव ने संस्थान प्रबंधन, आमंत्रित अतिथियों तथा उपस्थित डाइट मास्टर ट्रेनर्स के प्रति आभार व्यक्त किया। पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम के सफल आयोजन में डॉ. सोना यादव, डॉ. ओमबीर यादव एवं अन्य सहयोगियों का उल्लेखनीय योगदान रहा।

हिंदी अध्यापिका
रामा विद्यालय सैक्टर-25, पंचकूला

बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं प्राध्यापक सुधीर यादव

मंच संचालन, गायन, काव्य-पाठ व अभिनय में भी पारंगत

सत्यवीर नाहड़िया

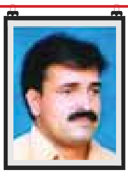

शिक्षा विभाग में कुछ शिक्षक अपने विषय के साथ-साथ विभिन्न कलाओं में भी पारंगत होते हैं। ऐसे शिक्षक अपने अध्यापन को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर उसे जीवनोपयोगी और संस्कार युक्त बनाने का कार्य करते हैं। अपनी रुचि-अभिरुचि के अनुसार जब शिक्षक कला, साहित्य, संगीत, रंगमंच या सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ते हैं, तो वे इन कलाओं को निरंतर अभ्यास और मंचीय अनुभव के माध्यम से निखार सकते हैं। विद्यालयों में आयोजित प्रार्थना-सभाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, उत्सवों और शैक्षिक आयोजनों में ऐसे शिक्षकों की भूमिका विशेष रूप से प्रभावी होती है। साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में शिक्षक वर्ग सदा से ही केंद्रीय भूमिका में रहा है और समाज को दिशा देने में उसका योगदान महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

रेवाड़ी जिले के गाँव माजरा मुस्तिल भालखी स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पीजीटी कंप्यूटर साइंस के पद पर सेवारत सुधीर यादव बहुमुखी प्रतिभा के धनी कलाकार-प्राध्यापक हैं। वे विद्यालय की प्रार्थना सभा, शैक्षिक गतिविधियों तथा अपने कक्षा-कक्ष में विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास हेतु सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इसके साथ-साथ वे जिले भर में आयोजित विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक कार्यक्रमों का प्रभावी मंच-संचालन एवं सुव्यवस्थित संपादन करते आ रहे हैं। पिछले कई वर्षों से वे इन दायित्वों का निर्वहन निरंतर साधना, अनुशासन और प्रतिबद्धता के साथ करते हुए अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर चुके हैं।

31 जनवरी, 1983 को भिवानी जिले के गाँव नवाँ राजगढ़ में जन्मे बालक सुधीर बचपन से ही कलाप्रेमी रहे हैं। पिता सूबे सिंह यादव व माता राजबाला के संस्कारों तथा गुरुजनों के मार्गदर्शन से कनीना, भिवानी तथा रेवाड़ी में छात्र जीवन के दौरान उन्होंने विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया।

महेंद्रगढ़ के एक निजी प्रौद्योगिकी संस्थान में बतौर असिस्टेंट प्रोफेसर तथा मीरपुर स्थित इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय में बतौर एक्सटेंशन असिस्टेंट प्रोफेसर कार्य करते हुए करीब एक दशक तक उन्होंने इन संस्थानों के विभिन्न कार्यक्रमों का मंच-संचालन किया, जिनमें यूथ फेस्टिवल, दीक्षांत समारोह, फाउंडेशन डे आदि उल्लेखनीय रहे। जिला प्रशासन, रेवाड़ी द्वारा आयोजित राहगीरी, भारत उदय संकल्प-यात्रा, गीता जयंती महोत्सव, बाल महोत्सव तथा सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग के विभिन्न कार्यक्रमों का भी वे निरंतर मंच-संचालन करते आ रहे हैं।

मंच-संचालन के अलावा सुधीर यादव काव्य-पाठ, अभिनय तथा गायन में भी पारंगत हैं और इन कलात्मक विधाओं में उन्होंने निरंतर अभ्यास के माध्यम से दक्षता अर्जित की है। वे विभिन्न शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कविता-पाठ, नाट्य प्रस्तुति तथा गायन के माध्यम से सक्रिय सहभागिता निभाते रहे हैं। पिछले दिनों माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित शिक्षकों की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता 'रंगोत्सव' में उन्होंने रंगमंच के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए राज्य स्तर पर विजेता का स्थान प्राप्त किया। उनके इस बहुआयामी योगदान को ध्यान में रखते हुए विभिन्न अवसरों पर जिला-प्रशासन तथा शिक्षा-विभाग द्वारा उन्हें सम्मानित भी किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त हरियाणा कला परिषद् तथा अनेक सामाजिक व सांस्कृतिक संगठनों द्वारा भी उन्हें उनकी कला-साधना और सांस्कृतिक सहभागिता के लिए समय-समय पर अलंकृत किया गया है।

उनकी इस सृजनशीलता में अनेक कलाकारों एवं साहित्यकारों के अलावा उनकी अर्धांगिनी कंप्यूटर टीचर सुदेश यादव तथा उनके कलाकार बेटे हर्ष का रचनात्मक सहयोग उन्हें निरंतर मिलता रहा है। सुधीर बताते हैं कि मंच-संचालन के दौरान उनका निरंतर प्रयास रहता है कि वे सभी दर्शकों को कार्यक्रम की मूल भावभूमि से जोड़ सकें और आयोजन की गरिमा को बनाए रख सकें। वे कार्यक्रम की विषयवस्तु, उद्देश्य तथा सहभागियों की भूमिका को पहले से समझने का प्रयास करते हैं, ताकि मंच से प्रस्तुत की जाने वाली प्रत्येक सूचना स्पष्ट, सटीक और प्रभावी हो। उनका मानना है कि एक सफल मंच-संचालन केवल उद्घोषणा तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह दर्शकों, कलाकारों और आयोजकों के बीच एक सशक्त संवाद स्थापित करता है। इसी दृष्टिकोण के साथ वे भाषा की मर्यादा, समय-प्रबंधन तथा कार्यक्रम की निरंतरता पर विशेष ध्यान देते हैं, जिससे आयोजन अधिक सुव्यवस्थित, प्रभावशाली और स्मरणीय बन सके।

अपने अध्यापन विषय के साथ अभिनय, कला, संस्कृति तथा मंच-संचालन की निरंतर साधना के चलते पिछले कुछ वर्षों में सुधीर ने अपनी विशिष्ट मौलिक पहचान बनाई है। इन सभी क्षेत्रों में अभी उनका सर्वश्रेष्ठ आना बाकी है, जिसके लिए उनकी जुनूनी रुचि-अभिरुचि तथा साधना निरंतर जारी है।

प्राचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीहा, रेवाड़ी

बाल सारथी

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना, अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

हर वाक्य में सब्ज़ी खोजिए

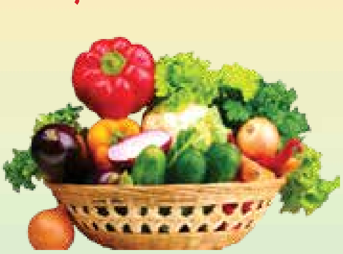

1. जंगल सिमट रहे हैं।
2. सूअर बीमारी फैलाता है।
3. फूलों से मंदिर सजाते हैं।
4. नाहक कड़ी बात मत कहो।
5. ईश्वर शुद्ध नियामक सत्ता है।
6. शनि ग्रह पर वलय अधिक हैं।
7. कृष्ण को ही गोपाल कहते हैं।
8. कृष्ण की मुख्य सखी राधा हैं।
9. मामू लीक से हटकर चलते हैं।
10. गंगा फल देने में बड़ी उदार हैं।
11. टोकरे लाकर उसमें फल रखो।
12. दीपक की लौ कीमती होती है।
13. ट्रेन ने पटरी पर खड़ा ट्रक रौंदा।
14. दुआ लूटी नहीं, कमाई जाती है।
15. कलह सुनकर बहुत बुरा लगता है।
16. 'अन्य' को अंग्रेज़ी में 'अदर' कहते हैं।
17. उद्योगपति तो रईस आदमी होता है।
18. गुलाब के लाल फूल सबको भाते हैं।
19. मेरे घर के निकट हलवाई की दुकान है।
20. सचिन का क्रिकेट-कौशल जमकर निखरा।

उत्तर- 1. मटर, 2. अरबी, 3. सेम, 4. ककड़ी, 5. धनिया, 6. परवल, 7. पालक, 8. खीरा, 9. मूली, 10. गंगाफल, 11. करेला, 12. लौकी, 13. करौंदा, 14. आलू, 15. लहसुन, 16. अदरक, 17. तोरई, 18. केला, 19. कटहल, 20. शलजम

पहेली-निर्माता :
प्रशान्त अग्रवाल
प्राथमिक विद्यालय डहिया
फतेहगंज पश्चिमी, ज़िला बरेली, उत्तर प्रदेश

बाल पहेलियाँ

1. दिखता सूरज के मैं जैसा,
पीला-पीला रंग।
मुझमें है भरपूर विटामिन,
रख लो अपने संग।।

2. प्रथम हटे तो 'नीर' बनूँ मैं,
अंत हटे तो 'काज'।
काला-काला रंग है मेरा,
नाम बताओ आज।।

3. मध्य हटे तो 'चली' बने यह,
तीन अक्षर का नाम।
श्वेत रंग का फूल अनोखा,
बोलो तो घनश्याम।।

4. कभी न रुकती, कभी न थकती,
कल-कल बहती रहती।
आगे बढ़ना ही जीवन है,
हम सबसे यह कहती।।

5. 'कृष्ण चूड़' सब कहते मुझको,
लाल-लाल है रंग।
पाँच अक्षर का नाम हमारा,
बोलो राज तरंग।।

6. रंग हरा पर करता लाल,
मैं हूँ पत्ता एक कमाल।
दो अक्षर का नाम हमारा,
बोलो प्यारे लल्लू लाल।।

7. 'जवाकुसुम' सब कहते मुझको,
मेरी बात निराली।
चार अक्षर का नाम हमारा,
बोलो नव्या लाली।।

8. बचत पेटिका कहते मुझको,
बच्चों की अति प्यारी।
सदा बचत की आदत डालो,
सुन लो बात हमारी।।

9. मध्य हटे तो 'छुरा' बनूँ मैं,
प्रथम हटे तो 'आरा'।
सोचो-समझो ज़रा बताओ,
देखें ज्ञान तुम्हारा।।

10. मध्य हटे तो 'जज' बन जाता,
तीन अक्षर का नाम।
सागर में मैं सरपट दौड़ूँ,
बोलो चंदन राम।।

उत्तर- 1- सूरजमुखी, 2- काजल, 3- चमेली, 4- नदी, 5- गुलमोहर, 6- पान, 7- गुड़हल, 8- गुल्लक, 9- छुआरा, 10- जहाज़

डॉ. कमलेन्द्र कुमार (प्रअ)
रावगंज, कालपी, जिला जालौन
उत्तर प्रदेश, पिनकोड-285204

चंदा मामा

नीला आकाश चुनरी ओढ़े,
तुम उसमें मोती-से झिलमिल।
हम निहारते खुली छतों से,
तुम मुस्काते हरपल खिलखिल।

कभी बादल घिर आते हैं,
छुप जाते तुम शरमाकर।
फिर झट झाँक निकल आते,
सबको हँसाने मुस्काकर।

कभी पतले-से हो जाते तुम,
कतरन-सी बन जाती काया।
लगता जैसे छुपम-छुपाई में,
तुमने नया खेल रचाया।

जब बिल्कुल नज़र न आते,
आँगन सूना लगता है।
हम कहते-कहाँ हो मामा?
मन थोड़ा-सा डरता है।

चंदा मामा, रहो सदा तुम,
आसमान में रोशन बनकर।
हम बच्चों के प्यारे साथी,
गीतों में तुम धुन बनकर।

डॉ. सुदेश रानी
हिंदी अध्यापिका
रामा विद्यालय सैक्टर-25,
पंचकूला

समुद्र का रंग नीला क्यों दिखाई देता है ?

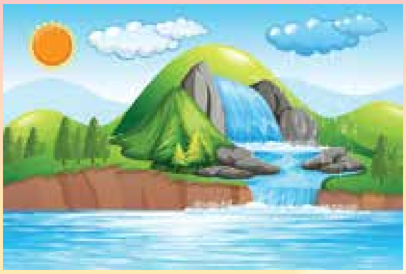

हम अक्सर देखते हैं कि समुद्र का पानी दूर से नीला दिखाई देता है। लेकिन क्या वास्तव में पानी नीला होता है? नहीं! पानी का असली रंग लगभग पारदर्शी यानी बिना रंग का होता है। फिर भी समुद्र नीला क्यों दिखता है? इसका कारण है सूरज की रोशनी।

सूरज की रोशनी में कई तरह के रंग होते हैं-लाल, हरा, पीला, नीला, बैंगनी और भी कई। जब यह रोशनी समुद्र पर पड़ती है, तो पानी इन रंगों को अलग-अलग तरह से सोखता (absorb करता है) और बिखेरता (scatter करता है) है।

पानी लाल, पीला और नारंगी जैसे रंग ज़्यादा सोख लेता है, लेकिन नीला रंग पानी में कम सोखा जाता है। इसलिए नीली रोशनी पानी में ज्यादा देर तक रहती है और चारों ओर बिखर जाती है। यही बिखरी हुई नीली रोशनी हमारी आँखों तक पहुँचती है, और हमें समुद्र नीला दिखाई देता है।

इसके अलावा, समुद्र बहुत गहरा होता है। गहराई और पानी की मात्रा बढ़ने से नीला रंग और भी स्पष्ट दिखने लगता है। यही कारण है कि तालाब या बाल्टी का पानी नीला नहीं लगता, पर समुद्र बहुत नीला दिखाई देता है। इस तरह, समुद्र का नीला रंग सूरज की रोशनी और पानी के गुणों की वजह से दिखाई देता है।

-शिक्षा सारथी डेस्क

सूखी टहनी

एक जंगल के पास ही कुछ लोगों की छोटी-सी बस्ती बसी हुई थी। उसी बस्ती में एक बुजुर्ग अम्मा रहती थीं। वे हर सुबह जंगल में जाकर सूखी और गिरी हुई टहनियाँ बटोर लातीं। अपने काम में जितनी टहनियाँ लगतीं, वे रख लेतीं और बाकी टहनियाँ अपनी कुटिया के बाहर ढेर में छोड़ देतीं, ताकि जिसे ज़रूरत हो, वह ले जाए। अब यह उनकी आदत ही नहीं, उनका स्वभाव बन गया था।

एक दिन बस्ती के एक युवक ने यह देखा तो उसे बड़ा अजीब लगा। वह अम्माँ से बोला- 'अम्मा, रोज़ इतना कष्ट करके टहनियाँ लाती हो फिर आधी से अधिक दूसरों के लिए बाहर रख देती हो! ऐसा क्यों?'युवक की आवाज़ में हैरानी साफ झलक रही थी।

अम्मा मुस्कुराईं और बोलीं- 'बेटा, मेरे लिए यही दान है, यही पुण्य है। दूसरों की मदद करने से ही तो समाज के प्रति जुड़ाव पैदा होता है। मेरे पास तो बस श्रम ही मेरी पूँजी है, वही मैं बाँट रही हूँ।याद रखना जीवन में श्रेय मिले या न मिले, पर अपनी मानवीयता देना कभी बंद मत करना। क्योंकि जो लोग निस्वार्थ कर्म करते हैं, वही सच्चे मनुष्य कहलाते हैं।'

अम्मा की बात सुनकर युवक के चेहरे पर नई समझ की चमक आ गई। आज उसने एक बहुत महत्त्वपूर्ण सबक सीख लिया था- **बाँटना ही सबसे बड़ा मानव धर्म है।**

-पूनम पांडे

स्वागत है नववर्ष तुम्हारा

स्वागत है नववर्ष तुम्हारा।
नित महके संसार हमारा।।

दुःख की रात खत्म हो जाए,
खुशहाली आँगन महकाए।
जीवन में हो खूब उजाला,
सफल हमें नववर्ष बनाए।
जीवन हो यह प्यारा-न्यारा।
वंदन है नववर्ष तुम्हारा।।

मिले प्रगति का खूब उपहार,
बना रहे यह प्रेम-व्यवहार।
नहीं किसी से कभी बैर हो,
सदैव सुखी हो यह संसार।
नहीं कभी जीवन में हारा।
अभिनंदन नववर्ष तुम्हारा।।

मानवता के पथ पर चलकर,
ये चमक उठेंगे गाँव-शहर।
कभी न उपजे नफ़रत मन में,
बना रहे यूँ प्यार परस्पर।
दुखियों के हम बनें सहारा।
अभिवादन नववर्ष तुम्हारा।।

मुश्किल का हो नहीं सामना,
सबके सुख की करें कामना।
ताकतवर इतना हो जाऊँ,
कभी पड़े न रण में हारना।
इस भू पर लूँ जन्म दुबारा।
आदर है नववर्ष तुम्हारा।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
मोहल्ला- बरगदवा (नई बस्ती),
निकट गीता पब्लिक स्कूल
पोस्ट- मड़वा नगर (पुरानी बस्ती)
ज़िला- बस्ती- 272002 (उप्र)

मस्ती में डोलें

आओ हम मस्ती में डोलें।
पेड़ों की डाली पर झूलें।

तितली के कोमल पंखों में,
रंगों के छींटे प्यारे।
चिड़ियों के रंगीन परों में,
गीत लिखें न्यारे-न्यारे ।
बढ़ें सफलता की राहों में,
द्वार सफलताओं के खोलें ।
आओ हम मस्ती में डोलें ।।

सुबह सुनहरी-सी किरणों ने,
जल में सोना बिखराया ।
और धूप ने इस धरती का,
कोना-कोना चमकाया ।
पंछी भी मधुरिम कलरव कर,
मीठे-मीठे से स्वर बोलें ।
आओ हम मस्ती में डोलें ।।

देखो मंद हवा ने चलकर,
बादल के परदे सरकाए ।
सूरज जी झाँक रहे वहीं से,
मंद-मंद से हैं मुस्काए ।
आओ सब मस्ती की मिलकर,
बँधी पोटली को खोलें ।
आओ हम मस्ती में डोलें ।।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
व्याख्याता हिन्दी
रावगंज, कालपी, लंका मीनार के पास
जिला-जालौन (उप्र)
पिन- 285204

विज्ञान श्रृंखला

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो! 'खेल-खेल में विज्ञान' श्रृंखला के अंतर्गत कुछ नई और रुचिकर विज्ञान गतिविधियाँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-

1. कच्ची और पिसी हल्दी की क्षार से क्रिया द्वारा रंग परिवर्तन-

विद्यालय में कक्षा-8 के विद्यार्थियों ने बताया कि उनका एक सहपाठी अपनी गृह-वाटिका से ताज़ी कच्ची हल्दी की गाँठ लाया है। वे कच्ची हल्दी और पिसी हुई हल्दी पर क्षार विलयन की क्रिया से होने वाले अंतर को जानना चाहते थे। विद्यार्थियों ने जब कच्ची हल्दी और पिसी हुई हल्दी-दोनों पर सोडियम हाइड्रॉक्साइड (क्षार) की कुछ बूँदें डालीं, तो तुरंत लाल रंग बनता दिखाई दिया।

हल्दी में करक्यूमिन नामक प्राकृतिक पदार्थ होता है, जो सामान्य अवस्था में पीला दिखाई देता है; किंतु जैसे ही यह किसी क्षार के संपर्क में आता है, इसकी संरचना में परिवर्तन हो जाता है और यह लाल रंग प्रदर्शित करने लगता है। इसी कारण हल्दी को एक प्राकृतिक सूचक (नेचुरल इंडिकेटर) माना जाता है।

प्रयोग के दौरान विद्यार्थियों ने यह भी देखा कि कच्ची हल्दी की स्लाइस पर बनने वाला लाल रंग, पिसी हुई हल्दी के घोल में बनने वाले रंग की तुलना में अधिक गहरा था। इसका कारण यह है कि कच्ची हल्दी में करक्यूमिन ताज़ा, अधिक सक्रिय तथा अपनी प्राकृतिक अवस्था में होता है, जिससे क्षार के संपर्क में आते ही रंग अपेक्षाकृत अधिक गाढ़ा दिखाई देता है; जब कि सूखी पिसी हल्दी में सुखाने और प्रसंस्करण के कारण इसकी तीव्रता कुछ कम हो जाती है। यह प्रयोग विद्यार्थियों के लिए अनुभव-आधारित अधिगम का एक उत्कृष्ट उदाहरण सिद्ध हुआ।

2. क्षेत्रफल और दाब का संबंध पेंसिल से सीखा-

कक्षा में विद्यार्थियों को दाब और क्षेत्रफल के बीच संबंध समझाने के लिए एक सरल एवं रोचक गतिविधि कराई गई। एक साधारण ग्रेफाइट पेंसिल को एक ओर से छील दिया गया, जिससे उसकी नोक पतली और तीखी बन गई, जबकि दूसरी पेंसिल अपने सामान्य मोटे सिरे के साथ ही रखी गई।

विद्यार्थियों ने दोनों पेंसिलों को अलग-अलग हाथों की तर्जनी उँगलियों के बीच रखकर लगभग समान बल से दबाया। ऐसा करने पर उन्होंने अनुभव किया कि जिस ओर पेंसिल की नोक पतली थी, उस ओर अधिक चुभन महसूस हुई, जबकि मोटे सिरे वाली पेंसिल को दबाने पर कम चुभन हुई।

इस गतिविधि से विद्यार्थियों ने प्रत्यक्ष रूप से जाना कि जब क्षेत्रफल कम होता है तो दाब अधिक होता है और जब क्षेत्रफल अधिक होता है तो दाब कम होता है। दाब, बल और क्षेत्रफल के बीच संबंध को दाब = बल / क्षेत्रफल सूत्र से दर्शाया जाता है। इसका अर्थ यह है कि दाब, बल के समानुपाती तथा क्षेत्रफल के व्युत्क्रमानुपाती होता है। इस प्रकार विद्यार्थियों ने अनुभव के माध्यम से दाब के मूलभूत सिद्धांत को भली-भाँति समझ लिया।

3. सर्पी घर्षण और लोटनिक घर्षण का सरल प्रयोग-

इस गतिविधि में विद्यार्थियों ने घर्षण के दो प्रकारसर्पी घर्षण (Sliding Friction) और लोटनिक घर्षण (Rolling Friction)का अंतर एक रोचक प्रयोग द्वारा समझा। पहले चरण में उन्होंने लकड़ी की पट्टी को मेज़ की सतह पर पूरी तरह टिकाकर सरकाया। इस स्थिति में पट्टी को आगे बढ़ाने के लिए अधिक बल लगाना पड़ा, क्योंकि पट्टी और मेज़ के बीच सर्पीघर्षण अधिक था।

इसके पश्चात् विद्यार्थियों ने पट्टी के नीचे कुछ पेन रखकर उसे दोबारा धक्का दिया। जैसे ही पट्टी पेन पर रखी गई, वह बहुत कम बल में तेज़ी से आगे बढ़ने लगी, क्योंकि पेन छोटे पहियों की तरह कार्य कर रहे थे और वहाँ लोटनिक घर्षण अपेक्षाकृत बहुत कम था।

इस प्रयोग से विद्यार्थियों ने प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से जाना कि स्लाइडिंग की स्थिति में घर्षण अधिक होता है, जबकि रोलिंग की स्थिति में घर्षण कम होता है; इसलिए लोटनिक सतहों पर वस्तुएँ कम बल में अधिक आसानी से चलती हैं।

4. मेटल की जाली ने पानी को गिरने से रोका-

विज्ञान अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुत यह सरल किंतु अत्यंत प्रभावशाली गतिविधि शिक्षकों को अनुभव-आधारित अधिगम की शक्ति से परिचित कराती है। दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली एक साधारण मेटल जाली, एक काँच का गिलास और पानी -इन तीन वस्तुओं की सहायता से ऐसा रोचक प्रयोग किया गया, जिसमें गिलास

को उल्टा करने पर भी पानी बाहर नहीं गिरता।

इस प्रयोग में एक काँच के गिलास को पानी से भरकर उसके मुहाने पर फ्लैट मेटल जाली रखी गई और हथेली की सहायता से गिलास को सावधानीपूर्वक उल्टा कर दिया गया। आश्चर्यजनक रूप से पानी बाहर नहीं गिरा। इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि जाली के छोटे-छोटे छिद्रों पर पानी की सतह एक पतली झिल्ली बनाती है, जिसे पृष्ठ तनाव कहा जाता है। साथ ही, गिलास के भीतर और बाहर के वायु-दाब के बीच संतुलन बना रहता है, जिससे पानी स्थिर बना रहता है। यह प्रयोग शिक्षकों के लिए अत्यंत रोचक और शिक्षाप्रद सिद्ध हुआ।

5. प्री-वोकेशनल एक्सपोज़र के दौरान देखी गई प्रयोगशालाएँ-

शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा निर्देशित प्री-वोकेशनल एक्सपोज़र गतिविधि के अंतर्गत यह शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के लिए तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की वास्तविक दुनिया से जुड़ने का प्रेरक अवसर बना। हमारे विद्यालय के कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों ने सेठ जयप्रकाश पॉलिटेक्निकल कॉलेज, दामला का भ्रमण किया।

इस भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने मशीन शॉप, सीएनसी लैब, वेल्डिंग शॉप, इलेक्ट्रिकल डिपार्टमेंट लैब, सीएडी लैब तथा कम्युनिकेशन स्किल लैब का अवलोकन किया। इस अनुभव ने उनमें तकनीकी प्रक्रियाओं के प्रति जिज्ञासा बढ़ाई और भविष्य के करियर विकल्पों को समझने की दृष्टि विकसित की। विद्यार्थियों ने जाना कि व्यावसायिक और तकनीकी कौशल आत्मनिर्भरता के साथ-साथ रोज़गार के बेहतर अवसर भी प्रदान

करते हैं।

अंततः, यह अनुभव विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि करने वाला और सीखने को जीवन से जोड़ने वाला सिद्ध हुआ।

अच्छा तो आदरणीय अध्यापक साथियो एवं प्रिय विद्यार्थियो! आगामी अंक में फिर नई विज्ञान गतिविधियों के साथ पुनः भेंट होगी। आशा है, आप उन्हें भी पसंद करेंगे और स्वयं करके अवश्य देखेंगे।

साइंस मास्टर/ईएसएचएम
पीएमश्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, दामला
खंड- जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला

डॉ. मोनिका शर्मा

प्यारे बच्चो!

मम्मी की रसोई सिर्फ स्वाद की जगह नहीं, बल्कि रंगों और विज्ञान की एक जीवंत प्रयोगशाला भी है। हर सब्जी एक नई कहानी कहती है और हर रंग एक नया विज्ञान समझाता है। सर्दियों की ये सब्जियाँ हमें स्वास्थ्य, ऊर्जा और प्रतिरोधक क्षमता का उपहार देती हैं। इसलिए इस मौसम की रंगीन प्लेट अपनाएँ और हर दिन प्रकृति का मल्टीविटामिन खाने की आदत डालें। रसोई में कटती सब्जियों की खुशबू और रंगों की चमक मन को भी खुश कर देती है, मानो विज्ञान और प्रकृति मिलकर एक रंगोली सजा रहे हों।

सर्दियों का मौसम केवल ठंडी हवाएँ और धूप का आनंद ही नहीं लाता, बल्कि यह अपने साथ प्रकृति की रंग-बिरंगी सौगातें भी लेकर आता है। बाज़ार में हर तरफ हरी, लाल, नारंगी, बैंगनी और पीली सब्जियाँ दिखाई देती हैं। यह मौसम मानो रंगों की एक विज्ञान-प्रयोगशाला बन जाता है, जहाँ प्रत्येक सब्जी अपने रंग और पोषण के पीछे छिपे वैज्ञानिक रहस्यों को उजागर करती है। मम्मी की रसोई इन रंगों की एक मिनी-लैब बन जाती है, जहाँ हर कटोरी और हर थाली में विज्ञान और स्वाद का अनोखा मेल होता है। आपने देखा होगा कि कुछ सब्जियाँ पकाने पर अपना रंग बदल लेती हैं कुछ का रंग गहरा हो जाता है और कुछ का हल्का। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि उनके अंदर मौजूद पिगमेंट (प्राकृतिक रंग) तापमान, ऑक्सीजन और पकाने की विधि से प्रभावित होते हैं। बच्चों के लिए यह जानना मज़ेदार होता है कि एक ही सब्जी, कच्ची और पकी दो अलग-अलग तरह से व्यवहार कर सकती है।

हरा रंग (Chlorophyll) :

सबसे पहले समझते हैं हरे रंग की कहानी। हरी सब्जियों जैसे पालक, मेथी, सरसों, बथुआ, हरी मटर और अन्य पत्तेदार सब्जियों में पाया जाने वाला प्रमुख पिगमेंट है- क्लोरोफिल (Chlorophyll)। यही पिगमेंट पौधों को सूर्य की रोशनी से ऊर्जा लेकर प्रकाश-संश्लेषण(-Photosynthesis) करने की क्षमता देता है। क्लोरोफिल संवेदनशील होता है। यदि सब्जियों को अधिक देर तक उबाला जाए तो यह टूटने लगता है और सब्जियाँ अपना चमकदार हरा रंग खो देती हैं। कई बार मम्मी नमक डालकर उबालती हैं, जिससे हरा रंग कुछ देर तक

टिक जाता है। हरी सब्जियाँ आयरन, फोलेट, कैल्शियम और विटामिन 'के' का उत्कृष्ट स्रोत होती हैं। ये खून बढ़ाने, आँखों व दिमाग़ को मज़बूत बनाने और शरीर से हानिकारक तत्त्वों को बाहर निकालने में मदद करती हैं। बच्चों की हड्डियों और मांसपेशियों के विकास में भी इनका बड़ा योगदान होता है।

लाल रंग (Lycopene) :

अब चलते हैं लाल रंग की दुनिया में। लाल टमाटर, चुकंदर, लाल मिर्च और तरबूज जैसे खाद्य पदार्थों में पाया जाने वाला प्रमुख पिगमेंट है लाइकोपीन (Lycopene। यह एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट है, जो शरीर को संक्रमण से बचाता है और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। दिलचस्प बात यह है कि लाइकोपीन गर्म करने पर और अधिक सक्रिय हो जाता है। इसलिए टमाटर की ग्रेवी, सूप और चटनी स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी होती हैं। इसे तेल या घी में पकाने से इसका अवशोषण और भी बेहतर होता है। लाइकोपीन हृदय को स्वस्थ रखता है, त्वचा को सूरज की हानिकारक किरणों से बचाता है और फ्री-रैडिकल्स को नष्ट कर, उम्र बढ़ने की प्रक्रिया धीमी करता है। लाल सब्जियों की चमक देखकर ही बच्चों में खाना खाने का उत्साह बढ़ जाता है।

नारंगी और पीला परिवार (Carotene) :

सर्दियों का तीसरा खास रंग-परिवार है- नारंगी और पीला, जिसका मुख्य पिगमेंट है- कैरेटीन (Carotene)। गाजर, कद्दू, शकरकंदी और पीली मिर्च में पाया जाने वाला बीटा- कैरेटीन(Beta-Carotene) शरीर में जाकर विटामिन 'ए' में बदल जाता है। जितना गहरा नारंगी या पीला रंग होगा, उतनी ही अधिक मात्रा में विटामिन 'ए' होगा। यह आँखों की रोशनी बढ़ाने, त्वचा को स्वस्थ रखने और प्रतिरोधक क्षमता मज़बूत करने में महत्त्वपूर्ण होता है। गाजर कच्ची खाने से फाइबर मिलता है, जबकि पकाने पर इसके पोषक तत्त्व तेजी से अवशोषित होते हैं। शकरकंदी और कद्दू शरीर को गर्माहट देते हैं और ठंड में ऊर्जा बनाए रखते हैं। बच्चों के लिए यह परिवार विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह उनकी दृष्टि और संपूर्ण विकास में सहायक होता है।

अतिरिक्त फायदेः

सर्दियों की सब्जियाँ एंटी-ऑक्सीडेंट से भरपूर होती हैं, इसलिए ये शरीर को रोगों से बचाती हैं। अधिकांश सब्जियाँ फाइबरयुक्त होती हैं, जिससे पाचन शक्ति बेहतर होती है और कब्ज की समस्या दूर रहती है। इनमें मौजूद मिनरल्स और विटामिन त्वचा को ठंड में सूखने से बचाते हैं और प्राकृतिक चमक बनाए रखते हैं। चुकंदर खून को साफ करता है, गाजर आँखों की रोशनी बढ़ाती है, पालक आयरन से भरपूर है और टमाटर त्वचा को चमकदार बनाता है। इसीलिए कहा जाता है कि सर्दियों की सब्जियाँ प्रकृति का सच्चा मल्टी-विटामिन हैं, जो पूरे परिवार को अंदर से मज़बूत बनाती हैं।

मम्मी की रसोई सिर्फ स्वाद की जगह नहीं, बल्कि रंगों और विज्ञान की एक जीवंत प्रयोगशाला है। हर सब्जी एक नई कहानी सुनाती है और हर रंग एक नया विज्ञान समझाता है। सर्दियों की ये सब्जियाँ हमें स्वास्थ्य, ऊर्जा और प्रतिरोधक क्षमता का उपहार देती हैं। इसलिए इस मौसम की रंगीन प्लेट अपनाएँ और हर दिन प्रकृति का मल्टी-विटामिन खाने की आदत डालें। आखिरकार, मम्मी का प्यार और सब्जियों का विज्ञान दोनों मिलकर शरीर को सबसे बेहतरीन पोषण देते हैं और हमें पूरे मौसम ऊर्जावान बनाए रखते हैं।

बीआरपी (साइंस) मोरनी हिल्स
जिला-पंचकूला, हरियाणा

चुकंदर! कमाल का

उस दिन दादा जी जैसे ही सब्ज़ी का झोला लेकर घर आए, लाडली बिटिया काशवी लपक कर उनके पास आई और बोली-'दादा जी, इस झोले में क्या है?'

दादा जी बोले- 'बताता हूँ, बताता हूँ... ज़रूर बताऊँगा, लेकिन'

'लेकिन क्या, दादा जी ?'

'बिटिया रानी, जो मैं अनोखी चीज़ लाया हूँ, ज़रा सोचो, अनुमान करो, मैं उसके बारे में बताता हूँ। मतलब, एक छोटी-सी पहेली पूछता हूँ।'

'ठीक है, पूछिए दादा जी।'

'वह कौन-सी सब्ज़ी है जो गहरे लाल रंग की होती है और जो शरीर के लिए बहुत ज़रूरी है? जिसका जूस भी पीते हैं और सलाद में भी खाते हैं, और जैसे हम बोलते हैं 'सुंदर', वैसा ही मिलता-जुलता उसका नाम भी होता है।'

काशवी फ़ौरन बोली- 'चुकंदर!'

दादा जी बोले- 'वेरी गुड! हमारी काशवी बिटिया बहुत समझदार है।'

काशवी बोली- 'दादा जी, आप चुकंदर क्यों लेकर आए हैं? इसके खाने से क्या होता है?

दादा जी ने झोले से गहरे लाल रंग के चुकंदर निकालते हुए कहा- 'यह है चुकंदर। चुकंदर हमारे शरीर में ब्लड शुगर लेवल को बनाए रखता है। चुकंदर को जूस और सलाद, दोनों रूपों में खाया जा सकता है। हमारे शरीर के लिए प्रोटीन और विटामिन बहुत ज़रूरी होते हैं, और इस चुकंदर में ये सब गुण पाए जाते हैं। शरीर की वृद्धि के लिए फ़ाइबर, प्रोटीन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेट ज़रूरी होते हैं। ये सब इसमें मिलते हैं।'

'अच्छा! सच में, दादा जी! और यह हमें कैसे फ़ायदा पहुँचाता है?'

'यह हमारे खून की धमनियों में रक्त का प्रवाह अच्छा रखता है। इससे दिल के दौरे का ख़तरा भी काफी कम हो जाता है। चुकंदर में फ़ॉलिक एसिड पाया जाता है, जो बच्चों के लिए बहुत अच्छा होता है। इसमें कैल्शियम भी भरपूर होता है। और तुम्हें तो मालूम है, कैल्शियम हमारे दाँतों और हड्डियों को मज़बूत बनाता है।'

'मतलब हमारे स्वास्थ्य के लिए कैल्शियम भी बहुत ज़रूरी है, है न दादा जी?'

'हाँ बिटिया, बिल्कुल। यदि रोज़ एक गिलास चुकंदर का जूस पिया जाए, तो इससे चेहरे में रंगत बढ़ती है और हड्डी व दाँतों के रोग दूर हो जाते हैं। तुमको तो मालूम है बिटिया, मुझे डायबिटीज़ है, लेकिन चुकंदर खाया जा सकता है। जब मुझे मीठे की तलब लगती है, तब मैं चुकंदर खा लेता हूँ। इससे ब्लड शुगर का लेवल नहीं बढ़ता। डायबिटीज़ वालों के लिए यह एक बहुत अच्छी सब्ज़ी है। चुकंदर का जूस पीने से व्यक्ति का स्टैमिना भी बढ़ता है और शरीर में ऑक्सीजन के स्तर में सुधार होता है।'

'और क्या-क्या फ़ायदे होते हैं दादाजी, चुकंदर के खाने से?'

'इससे मस्तिष्क भी ठीक रहता है। चुकंदर खाने से हमारी मांसपेशियाँ मज़बूत होती हैं और चेहरे की रंगत भी बढ़ती है।'

काशवी ने कहा-'तब तो दादा जी, मैं रोज़ चुकंदर खाऊँगी!'

दादा जी मुस्कुराते हुए बोले- 'तब तो हमारी काशवी बिटिया और सुंदर हो जाएगी। चेहरा सुंदर-सुंदर, लाल-लाल हो जाएगा, एकदम चुकंदर की तरह।'

काशवी खिलखिला कर हँस पड़ी।

दादा जी बोले- 'चलो, पहले चुकंदर धोते हैं। इसके बाद इसका जूस बनाएँगे और थोड़ा सलाद में भी खाएँगे।'

काशवी दादा जी के साथ चुकंदर धोने में लग गई। फिर दोनों बड़े चाव से चुकंदर खाने लगे और काशवी गाने लगी -अहा! चुकंदर, कितना सुंदर, भरे विटामिन इसके अंदर।'

काशवी की तुरंत बनाई कविता सुनकर दादा जी ने भी तुरंत एक कविता सुना दी- 'चुकंदर का देखना अब कमाल, काशवी के गाल हो जाएँगे लाल-लाल!' अब दादा जी और काशवी दोनों साथ में खिलखिला पड़े।

सतीश उपाध्याय
अग्रवाल लॉज के पास, मनेंद्रगढ़
जिला- एमसीबी, छत्तीसगढ़

2026
जनवरी-फरवरी माह के त्यौहार व विशेष दिवस

3 जनवरी-	सावित्री बाई फुले जयंती
4 जनवरी-	विश्व ब्रेल दिवस
5 जनवरी-	राष्ट्रीय पक्षी दिवस
10 जनवरी-	विश्व हिंदी दिवस
12 जनवरी-	राष्ट्रीय युवा दिवस
13 जनवरी-	लोहड़ी
15 जनवरी-	भारतीय सेना दिवस
23 जनवरी-	बसंत पंचमी और सर छोटू राम जयंती
24 जनवरी-	राष्ट्रीय बालिका दिवस
25 जनवरी-	राष्ट्रीय पर्यटन दिवस
26 जनवरी-	गणतंत्र दिवस
1 फरवरी-	गुरु रविदास जयंती
12 फरवरी-	महर्षि दयानंद सरस्वती जयंती
15 फरवरी-	महाशिवरात्रि
28 फरवरी-	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Teaching Physics with Virtual Labs

An Interactive Way of Teaching-Learning

Dr. Purnima

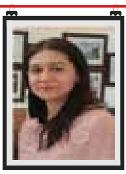

Introduction to Virtual Labs

Virtual labs (VLs) are online laboratories developed to provide real laboratory experiences to teachers and students in virtual mode. The days are gone when traditional laboratories were sufficient to give students practical experiences and enhance their experimental skills. In the present era of Information and Communication Technology (ICT), there is a need for online laboratories set-up that provide immersive experiences and opportunity for interactive learning [1]. Especially in situation of pandemic and natural disaster, virtual labs have been proven really helpful. The virtual labs are developed by various individuals as well as tech teams with the help of programming languages and are available as simulation labs as well as experimentation labs. These are programmed structures that give opportunity to conduct laboratory experiments as well as simulations in online mode. Simulation labs include many features viz. animation, videos, sound and sonification, interactive description, highlights, text and graphics [2]. Literature mentions various benefits of virtual labs in science education viz. safe learning environment, enhanced learning outcome, improved understanding of concepts and choice in learners' goal [2-3].

Benefits of Virtual Labs

1. Immersive learning environments

Virtual Labs (VLs) provides interactive learning environments to students with engaging activities and simulations. Teacher can demonstrate experiments using virtual labs and ask students to perform the same with real apparatuses. These platforms enable learners to interact with scientific ideas. They observe scientific phenomenon and interpret the result.

2. Change variables in controlled settings

In physics learning, students can develop hypothesis as well as check and verify them by changing variables in controlled environment. In this way, they can verify the result findings and establish the observation result as concept in their minds.

3. Eliminate real time constraints

Virtual labs eliminate real time constraints like availability of electric power, water, vacuum, extreme temperature and pressure conditions, moisture in air. The teacher can demonstrate experiment with varied inputs, temperature, pressure, acceleration due to gravity, inclinations and many more physical conditions.

4. Accessibility and inclusivity

There is a wonderful feature of VLs that these are accessible anytime to anyone that supports the principle of inclusivity. Especially for divyang learners who are unable to access the resources because of physical problems, VLs are promising for them to perform experiments at their own ease and comfort.

5. Overcome the lack of physical & human resources

Virtual labs (VLs) are helpful as these can overcome concerns like non-availability of instruments, imperfect functioning apparatus, broken or torn out devices, lack of chemicals and proper glassware etc. Safety constraints like need for fire extinguishers and expensive and fragile equipment are also eliminated. Running short of expert teachers may be overcome by use of VLs.

6. Easily performing experiment

In real lab conditions, sometimes it is difficult to perform experiments with precise accuracy, but program generated simulations offers ease of performing experiment with accuracy. In real labs, results may change because of individual skills and climatic conditions whereas in VLs result of experiment are standard and do not vary depending on user skill and other physical conditions.

7. Review and revise experiments

Through Virtual Labs (VLs), experiments and simulations can be performed repeatedly. It is possible to revise and review the simulation as many times as the learner needs. Many virtual labs provide data of the variables that can be further downloaded and interpreted.

8. Avoid experimental hazards

By use of virtual labs, real time lab hazards like electrocution, explosion, fire can be eliminated. Especially in current electricity experiments, the learner can join the electric components and check the current flow through simulation without fear of electrocution and short circuiting.

My Experience

NEP-2020 advocates the need for incorporation of ICT in classroom teaching that strengthens collaboration and communication. Content delivery has become easy with the use of virtual labs along with scarce resources can be best handled using virtual labs. There is a possibility of unavailability of proper labs, lab equipment's and even lack of expert teachers. In view of NEP-2020 and NCF-2023 recommendations, DIET Mattarsham, Hisar had organized a 5-days (27-10-2025 to 31-10-2025) face-to-face training on virtual labs for PGTs in Physics, Chemistry, Mathematics, and Biology teaching classes 9th-12th. In that training, I got the opportunity to be a resource person for Physics subject. A number of online platforms like PhET, Olabs, Javalabs and Ophysics that I found beneficial for Physics simulation and experimentations were shared with trainees along with hands-on practice sessions.

PhET is the Physics Education Technology developed by Nobel Laureate Carl Wiemanin 2002 at the University of Colorado Boulder is an interactive simulations platform. It provides 173 interactive simulations in subjects Physics, Math and Statistics, Earth and Space, Biology and Chemistry [4]. These learning outcomes-based simulations make students visualize the abstract concepts of Physics. I demonstrated, Faraday Electromagnet Labs, Circuit Construction Kits, Pendulum Lab, Geometric Optics, Energy Skate Park Basics, Ohm's Law and many more simulations that provided great insight about the subject. Olabs abbreviated as Online Labs are the experimentation lab funded by Meity(Ministry of Electronics and Information Technology) and developed by Amrita Vidyapeetham

and CDAC is the marvellous platform that is in alignment with NCERT and CBSE and state board syllabus [5]. The beauty of this platform is that it provides simulations, animations as well as lab videos that a learner can explore anywhere and anytime with individual pace and interest. It covers 12 subjects including Physics, Chemistry, Biology, Maths, Languages, Science, Social Science, Computer, 3D/AR/VR, EDP (Enterpreneuership Development Programme) and ISL (Indian Sign Language). For Physics subject particularly, it provides 8 components including theory, procedure, animation, simulator, video, self-evaluation, resources and feedback. In physics sessions, trainees explored many experiments viz. Measurement using Vernier-callipers, Verification of Ohm's Law, Refraction through prism on Olabs. We also explored Javalab developed by a South Korean science teacher that provides many science experiments on measurement, electricity and magnetism, mechanics, work and energy, light and wave, atoms, chemistry, earth, astronomy, biology, mathematics, technology [6]. Mechanical Energy conversion, Newton Cradle, Young's Double Slit experiment were discussed in depth using this platform. Further, with Ophysics virtual lab platform, the teachers got a demonstration of Hydrogen energy levels, Rolling Motion, Electromagnetic wave, Optics of human eye, Polarization of light, Simple harmonic motion, Circular motion, The pendulum, Projectile motion [7]. All the trainees learnt the use and methodology to incorporate VLs in their teaching and lab experiments with properly planned lessons. Participants shared their feedback and reported that they will implement their learnings in their experiments as well as in classroom.

Anita Devi, GSSS Matloda reported, "OLabs, Javalabs, and Ophysics are fabulous tools to use in physics teaching. Olabs are good for practical purpose Javalabs and Ophysics are great for activities. We could make Practical work easy by Olabs, interference and diffraction patterns could be explained by Ophysics."

Yogita, GSSS Barwala expressed "We can use virtual lab in classroom by using smartboard and it will be easy for teachers and students to perform practicals and to understand a particular concept by visualization".

Narender Kumar, GGSSS Koth Kalan said, "Learning is very interesting and helpful to understand the different topics which are not presented on the blackboard but with the help of different tools like OLabs, PhET etc. This is different from real time classroom but interesting".

Pankaj Kumar, PGT GSSS Kanoh, reported "The Virtual Lab training provided me with new pedagogical strategies to make science learning more interactive, visual, and experiment-oriented. I plan to apply these techniques in my classroom to promote experiential learning among students".

Educational Implications:

Virtual Labs (VLs) provides gamified learning to learners and needs to be included in lesson planning by teachers. Particularly for Physics, these labs make invisible things visible and helps to concrete abstract ideas in the student's mind. Teachers need to adopt a blended approach with

real laboratories hands-on and virtual labs online simulation practices. Teachers can also develop their subject content using VLst and make a digital repository. There is great need for exploration and research on impact of use of virtual labs on student learning outcomes. Moreover, there is a need for training to all the science and mathematics teachers of the district to equip them with virtual labs tools that they can apply in classroom teaching.

Acknowledgements: Support and guidance by Mr. Rajender Sharma, in charge ET Wing, Mrs. Vinita Head, ET Wing DIET Mattarsham Hisar and ET Wing SCERT is gratefully acknowledged.

Selected Resources:

[1] Samuel Asare, Stephen Kwame Amoako, Duut Kwame Biilah and Theophilus Baffoe Apraku et al (2023), The use of virtual labs in science education: A comparative study of traditional labs and virtual environments, International Journal of Science Academic Research, 4(11):6563-6569

[2] Dheeraj Kumar (2025), PhET: An interactive simulation technology for learning outcomes-based teaching-learning science, International Education & Research Journal [IERJ],10(5):1-7

[3] Nyiramukama Diana Kashaka (2024), Virtual Laboratories in Science Education: Benefits and Challenges. Eurasian Experiment Journal of Scientific and Applied Research, 5(2):21-25

[4] https://phet.colorado.edu/

[5] https://www.olabs.edu.in/

[6] https://javalab.org/en/

[7] https://ophysics.com/

Lecturer Physics
ET Wing
DIET Mattarsham, Hisar

Strong Women

Living on the glassy edge of tears,
Playing hide and seek with our fears.
Yet we are no damsels in distress.
Street smart, we take on all the stress.
A broken heart, dream or home.
On our own, but not at all alone.
We are our own Knights in shining armour.
Grudges against past evils we don't harbour.
We don't hobble or grovel but silently sail on,
We move on, our tribe ever-growing strong.
Even though the journey is harsh and long.
We own the world, we're the women - strong.

Dr. Deviyani Singh

Whispers of Pong

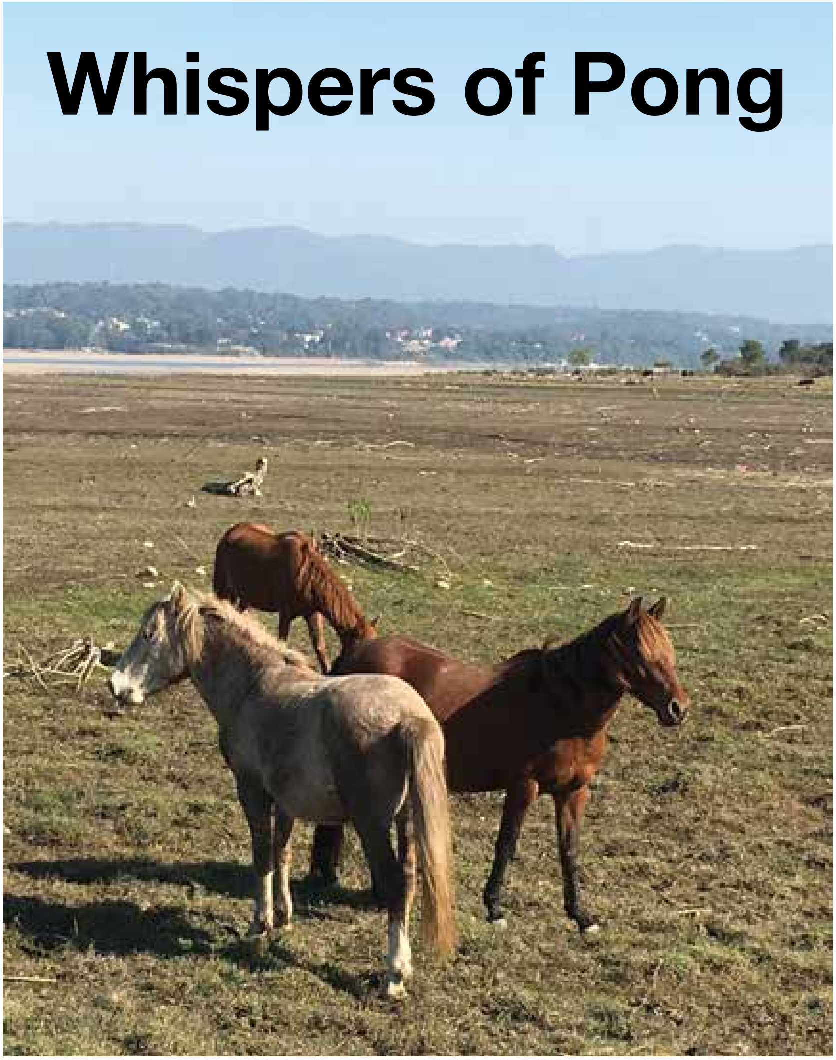

Anita Thakur

Along the edges of the Pong Reservoir in Kangra—stretching from Jambal Bassi to the village trails near Dehra—wild horses moved like whispers in the wind. They lived where the Beas River widened into a vast man-made lake, built in the early 1960s to store water for irrigation across Rajasthan and Punjab and to generate electricity for distant towns.

But to those of us who lived close, Pong was far more than an engineering marvel. It was a breathing landscape, shifting with the seasons, its silences full of life. The wild horses were part of that breath.

They came in every shade—coal black, dusty gray, copper brown, honey gold. Their foals wobbled behind them on unsteady legs, learning the language of earth and water. They grazed near the marshes and forestland, careful and peaceful, never trampling crops or provoking villagers. In fact, farmers were grateful for them. The horses trimmed wild grass and thorny shrubs along the field edges, keeping the land clean and manageable.

At times, when villagers needed help transporting bricks, sacks of potatoes, or cement up the narrow hill paths, they would gently catch a few of the horses. They treated them well, fed them properly, and once the work was finished, released them again near the lake.

Over many years, an unspoken trust had formed between people and herd.

Among them were three horses that often wandered close to my farm boundary—tall, strong, golden brown, with shining manes that caught the sunlight like silk threads. Over time, they grew comfortable with me. If I stepped out quietly, they approached. I would rub their foreheads and necks, and they would lower their heads, eyes half-closed, leaning into my touch. Each nudged me for more affection like a spoiled child.

When I was busy or away, they still lingered, grazing along the boundary as though guarding the land. By evening, they would return to the larger herd at the water's edge.

It was late fall, when the air had begun to sharpen with coming winter, that something changed.

That afternoon, a mare and a stallion stood just outside my farmhouse gate. They were grazing, yet nothing about them felt calm. They kept lifting their heads, staring at me, their bodies stiff with tension. When I brought out the steel bucket of water I kept for passing cattle, they ignored it.

Instead, they turned, walked a short distance, and stopped—glancing back over their shoulders.

I remembered my father-in-law, a retired Army veterinarian who had spent his life with horses on a stud farm. Horses speak without words, he used to say. But they speak.

I called out to my husband and

daughter, and together we followed them.

They walked slowly, always looking back, making sure we were behind them. They led us toward a rivulet where rainwater from the hills merged with the lake. As we reached the bend, my heart dropped.

A mare was trapped in quicksand.

Her legs had sunk deep into the wet earth, and every attempt to free herself pulled her farther down. Her breathing was strained and panicked. On higher ground nearby stood several horses and damp-nosed foals, watching in total stillness, helpless witnesses to her struggle.

This mare was not from the wild herd. She belonged to a migrating Gaddi shepherd who brought his sheep and goats down from Upper Bhangal every winter. The Gaddi camps along the Beas and Pong before moving farther toward Una, where the cold is less severe.

That day, the shepherd had gone to the local veterinarian with an injured goat kid. His horse, tied loosely for grazing, must have slipped free and wandered toward the deceptive shoreline. In this land of sandy soil and hidden marsh, the ground can collapse without warning.

The sun was dropping fast, and with

it, our time.

In these hills, help is still called by voice. We cupped our hands and shouted, "Oyeeeee!" The sound rolled across valleys and slopes. Soon, calls echoed back in return.

A man returning from the flour mill at the Beas bridge heard us and ran over, dropping his sack on dry ground. He spread the word, and within minutes six young men were rushing down the slope, some carrying ropes, one dragging wooden planks from a nearby half-built shed. I also called the wildlife officer in Dharamshala and the local forest ranger, who instructed us over the phone: "Don't let her struggle. First stabilize the ground."

The men stepped carefully, testing every patch of earth. They slid thick wooden boards beneath her hooves to create a base, stopping her from sinking further. Two men stayed at her head, speaking softly, calming her. Others wrapped wide cloth and rope around her chest and body, taking care not to injure her ribs.

They waited until her panic eased, then pulled in small, steady efforts while another man packed stones and earth beneath her legs.

Minutes stretched into an hour. The sun vanished. Cold crept into our bones. The men, soaked and shaking, began to weaken, and fear came over me that we might lose her after all.

My daughter and I urged them on, our voices trembling but persistent.

With one final, united pull, and the boards bearing her weight, the mare broke free with a deep sucking sound from the mud.

For a moment she stood, trembling.

Then she ran.

Straight into the waiting herd.

Stallions, mares, and tiny foals surged forward together. They circled her, neighing, brushing their bodies against hers. One licked the mud

from her flank. Another nudged her shoulder, as if to be certain she was real. The foals pranced with lifted tails, wild with relief.

They leapt together—light, rhythmic, joyful.

We stood in silence, cold and shivering, yet warm with something deeper than heat. It felt sacred, as if we were witnessing a purity of emotion greater than words could carry.

The mare shook herself, sending clumps of drying mud flying. This time, she did not vanish into the tall grass. Instead, she turned toward the faint curls of smoke rising from the Gaddi's open air dera (camp) in the distance. And as if guided by an unseen understanding, the wild horses walked with her—stallions, mares, and foals moving as one, past reeds and wet earth, along the breathing edge of the lake.

Only when the shepherd's camp became clear in the dim light did they stop.

The mare walked on alone, the shepherd gently ushered her to her spot on the dera. The wild horses stood motionless for a moment longer, then turned, dissolving one by one into the vast, quiet land of Pong, leaving only hoofprints in the mud and a whisper in the wind.

The two horses who had summoned us lingered at the edge of the field. They looked back once more, their eyes calm now, and then followed their herd into the twilight.

That evening, wet and trembling with cold, I understood something simple and humbling:

Sometimes, in the quiet corners of the world, animals remind us what loyalty, courage, and hope truly look like.

Freelance Poet and Writer
anitathak@gmail.com

Did you...?

Feel the calm before the storm,
Dismal darkness before dusk.
The deafening silence of a shell,
Crackling dry air before a rain spell.
Alone and stranded in a crowd,
Warm in a cold white shroud.
A poem in prose,
A birdsong before the tiger's roar.
War in peace,
And a world in pieces.

Did you see life in a fleeting moment of death?
Taste the sweetness of cyanide?
At the brink of the precipice did you change?
Did you see youth dance in your dotage?
In the desolation of the smothering smog,
Did you gasp finally for fogless fresh air?
Feel unprecedented cold and unbearable heat?
See naked children and ramps of fashion beats,
Plastic wastes and paper conferences of nations.
Global warming and arctic ice caps abominations.

Stuffed salty seas and swollen rivers,
Dry streams and overflowing sewers.
Cloud bursts and untamed damned dams.
Did you feel what Earth felt, dear Sir and Ma'am?
Did you wear greys and silvers in your prime?
Ruby red and scarlet in old age like vintage wine?
Did you try to hold in your hands space and time?
While it slipped through the time trellis so fine.
In its grip gradually entwined your ill-fated vines.
Slowly, stealthily squeezed out all your life lines.
Did you ...?

Dr. Deviyani Singh

From Books to Browsers: The Changing Face of Student Learning

Over the past three years, a dramatic change has taken place in the learning habits of students. With the easy availability of mobile phones, cheap internet, and a rapid shift after the COVID-19 pandemic, today's learners are more dependent on screens than on books. This transformation has reshaped study patterns, attention span, and even the way students understand basic concepts.

Growing Dependency on Digital Tools

After the pandemic, students increasingly rely on digital help for even the smallest doubts:

For a single-word meaning, students instantly turn to Google.

Tools like ChatGPT, Gemini, Copilot and various dictionary apps have replaced the habit of reading.

For concept clarity, most students prefer YouTube tutorials over classroom explanations.

This trend, though convenient, is gradually weakening their foundational understanding.

Questionable Reliability of YouTube

While YouTube offers vast learning content, its reliability remains a major issue:

Anyone can upload videos without verification.

Many explanations are incomplete, incorrect, or not aligned with the curriculum.

Students get attracted to shortcuts, which limits deep learning.

Clickbait thumbnails divert attention from educational content.

Therefore, YouTube cannot replace the structured guidance of a trained teacher.

Survey Reports Supporting This Issue

Several surveys support these concerns:

Times of India Education Survey (2023):

72% of students prefer YouTube over teachers for concept clarity.

64% of students admitted that their self-study habits have reduced in the last three years.

Hindustan Times Student Behaviour Study (2024):

58% of teenagers depend on AI tools for homework instead of using textbooks.

These findings show that digital dependency is now a widespread educational challenge.

Globalization of the Problem

Countries like the USA, UK, and Singapore are witnessing the same issues:

Lower problem-solving skills

Reduced patience and perseverance

Less creativity due to ready-made answers

Difficulty handling real-life challenges

This global problem highlights the urgent need for corrective measures.

Impact on Learning and Personality

1. Decline in Self-Study

Students rarely open textbooks and prefer screen-based learning even for simple tasks.

2. Weak Problem-Solving Ability

Instant answers reduce the habit of thinking, analysing, and trying different methods.

3. Poor Handling of Difficult Situations

Students give up quickly when they don't find immediate solutions.

4. Decline in Creativity

Continuous dependence on online ideas reduces originality and imagination.

5. Reduced Attention Span

Short videos and quick solutions have lowered concentration levels.

Rise of Online Coaching Market

This shift also boosted the online coaching industry.

EdTech companies such as BYJU'S, Unacademy, Vedantu, UpGrad expanded rapidly, and some even aimed for stock market listings.

However, despite their popularity, online coaching cannot replace:

Classroom environment

Personal mentorship

Discipline and consistent study habits

Solutions: The Way Forward

To overcome these challenges, a balanced approach is essential:

1. Controlled Use of Digital Resources

Technology should support education, not overshadow it.

2. Fixed Self-Study Routine

Every student should follow at least 1–2 hours of book-based self-study daily.

3. Strengthened Teacher–Student Interaction

Asking doubts in class builds better conceptual clarity.

4. Critical Thinking Practice

Students must solve problems on their own before checking online answers.

5. Digital Literacy Education

Schools must teach students how to identify authentic and reliable online sources.

6. Parental Monitoring

Parents should supervise screen time and maintain discipline at home.

Conclusion

In today's digital world, technology is a powerful companion—but it must not replace self-study, discipline, and meaningful classroom learning. Students must balance online tools with books and real guidance from teachers. Only then will they develop strong concepts, creativity, and confidence. A balanced blend of digital support and traditional learning is the true key to a brighter educational future.

Sharwan Kumar
PGT Mathematics
Govt. Model Sanskriti Sr. Sec. School, Taraori
Block- Nilokheri, Distt. Karnal

International Education Day: Empowering Minds, Shaping Futures

International Education Day, observed annually on 24 January, is a global reminder of the transformative power of education in building peaceful, inclusive, and sustainable societies. Established by the United Nations General Assembly in 2018, this day recognizes education as a fundamental human right and a driving force behind social progress, economic development, and global cooperation. Beyond classrooms and textbooks, education shapes values, nurtures critical thinking, and equips individuals with the skills needed to navigate an increasingly complex world.

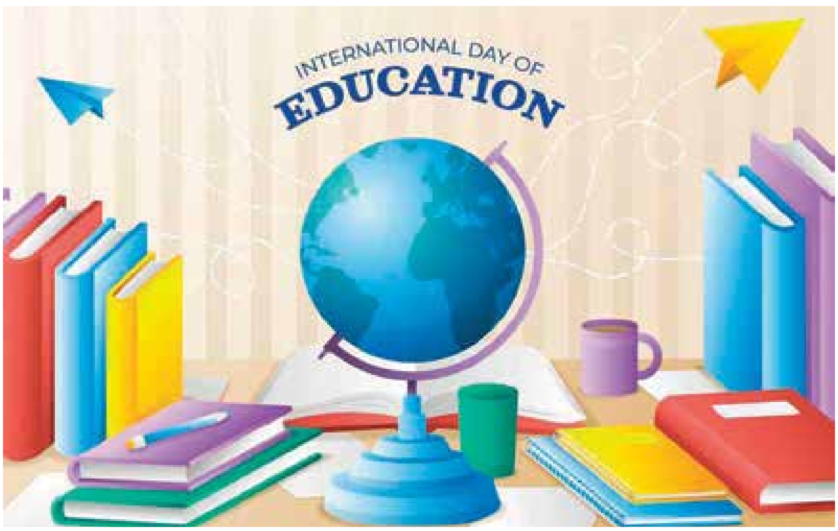

At its core, education is more than the transmission of knowledge; it is the foundation of human dignity and opportunity. When people have access to quality education, they are better prepared to make informed decisions, participate actively in civic life, and contribute meaningfully to their communities. Education reduces

poverty by opening pathways to employment and entrepreneurship, promotes gender equality by empowering girls and women, and improves health outcomes through awareness and informed choices. International Education Day celebrates these far-reaching impacts while urging the global community to address persistent inequalities in access and quality.

One of the most significant challenges highlighted by International Education Day is unequal access to education. Despite progress over the past decades, millions of children and young people around the world remain out of school due to poverty, conflict, displacement, disability, or discrimination. In many regions, girls face additional barriers such as early marriage, household responsibilities, or cultural norms that limit their educational opportunities. For refugees

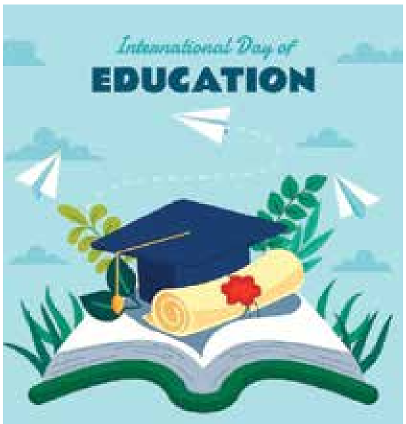

and children affected by war or natural disasters, education is often disrupted or entirely unavailable, deepening cycles of vulnerability. Observing International Education Day draws attention to these gaps and calls for collective action to ensure that no one is left behind.

Quality is as important as access. Even where schooling is available, many education systems struggle with overcrowded classrooms, undertrained teachers, outdated curricula, and limited resources. International Education Day emphasizes the need for inclusive, equitable, and quality education that fosters creativity, problem-solving, and lifelong learning. In a rapidly changing world shaped by technological advances and global challenges such as climate change, education must evolve to equip learners with relevant skills—digital literacy, critical thinking, collaboration, and adaptability—while grounding them in ethical values and respect for diversity.

Teachers play a central role in realizing the promise of education. They are mentors, role models, and catalysts for change, often working under difficult conditions with limited support. International Education Day is an opportunity to recognize teachers'

contributions and advocate for better training, professional development, fair compensation, and safe working environments. Empowered teachers are essential to nurturing curious, confident learners and building resilient education systems capable of withstanding crises.

The COVID-19 pandemic underscored both the importance of education and the fragility of existing systems. School closures affected billions of learners worldwide, exacerbating learning losses and widening inequalities. At the same time, the crisis accelerated innovation, with digital learning platforms, remote teaching, and hybrid models becoming more common. International Education Day encourages reflection on these lessons—highlighting the need to bridge the digital divide, invest in infrastructure, and develop flexible systems that can adapt to future disruptions while safeguarding learners' well-being.

Education also plays a crucial role in promoting peace and global citizenship. By teaching history, human rights, and intercultural understanding, education helps counter prejudice, extremism, and misinformation. It fosters empathy and dialogue, enabling individuals to appreciate different perspectives and resolve conflicts peacefully. In a world marked by polarization and uncertainty, education is a powerful tool for cultivating tolerance, solidarity, and shared responsibility for the planet.

Moreover, International Education Day aligns closely with the United Nations Sustainable Development Goals (SDGs), particularly Goal 4: ensuring inclusive and equitable quality education and promoting lifelong learning opportunities for all. Progress in education accelerates progress across other goals, including poverty reduction, gender equality, decent work, and climate action. Investing in education is therefore not only a moral imperative but also a strategic choice for sustainable development.

Lifelong learning is another key theme of International Education Day. Education does not end with formal schooling; it continues throughout life as individuals adapt to changing careers, technologies, and social realities. Adult education, vocational training, and informal learning opportunities enable people to reskill and upskill, remain engaged in their communities, and maintain a sense of purpose. Recognizing lifelong learning underscores the idea that education is a continuous journey, accessible at all ages and stages.

Ultimately, International Education Day is both a celebration and a call to action. It celebrates the achievements of learners, educators, and communities who strive for knowledge against all odds. At the same time, it calls on governments, institutions, the private sector, and civil society to increase investment in education, strengthen policies, and collaborate across borders. Ensuring safe, inclusive, and high-quality education for all requires sustained commitment, innovation, and shared responsibility.

In conclusion, International Education Day reminds us that education is the cornerstone of human progress. It empowers individuals, strengthens societies, and shapes a more just and sustainable future. By reaffirming education as a universal right and prioritizing it in policy and practice, the global community can unlock the potential of millions and build a world where everyone has the opportunity to learn, grow, and thrive.

National Youth Day in India: Inspiring the Spirit of a Nation

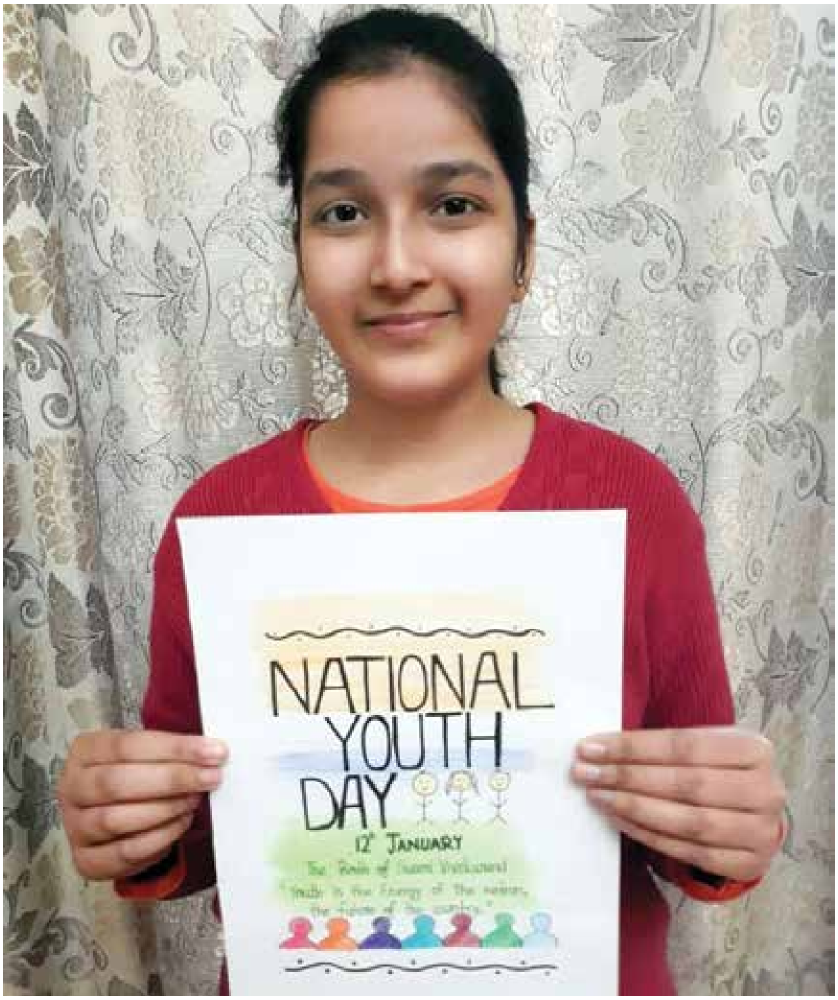

National Youth Day in India is observed every year on 12 January to commemorate the birth anniversary of Swami Vivekananda, one of India's greatest spiritual leaders, thinkers, and reformers. This day is dedicated to recognizing the power, potential, and responsibilities of the youth in shaping the present and future of the nation. Celebrated across schools, colleges, universities, and institutions, National Youth Day serves as a reminder that the progress of India largely depends on the character, energy, and vision of its young population.

Swami Vivekananda firmly believed that youth are the backbone of any nation. His powerful thoughts, such as "Arise, awake, and stop not till the goal is reached," continue to motivate millions of young people even today. He emphasized strength, self-confidence, discipline, and service to humanity. By observing National Youth Day on his birth anniversary, India honors his philosophy and seeks to inspire young minds to lead lives of purpose, courage, and social responsibility.

India is one ofw the youngest countries in the world, with a large percentage of its population below the age of 35. This demographic advantage makes youth a powerful force for national development. National Youth Day highlights the importance of channeling this energy in the right direction—towards education, innovation, social harmony, and nation-building. The day encourages young people to reflect on their role in society and to contribute positively to the country's growth.

The objectives of National Youth Day go beyond celebration. It aims to promote national integration, leadership qualities, moral values, and social awareness among the youth. Programs organized on this day often include youth conventions, debates, essay competitions, seminars, cultural performances, and community service activities. These events provide platforms for young people to express their ideas, learn from one another, and develop confidence and communication skills.

Education plays a central role in fulfilling the vision of National Youth Day. Swami Vivekananda considered education as the manifestation of the perfection already present in human beings. He stressed holistic education—one that builds character, develops intellect, and nurtures compassion. On National Youth Day, the importance of quality education, skill development, and lifelong learning is emphasized to

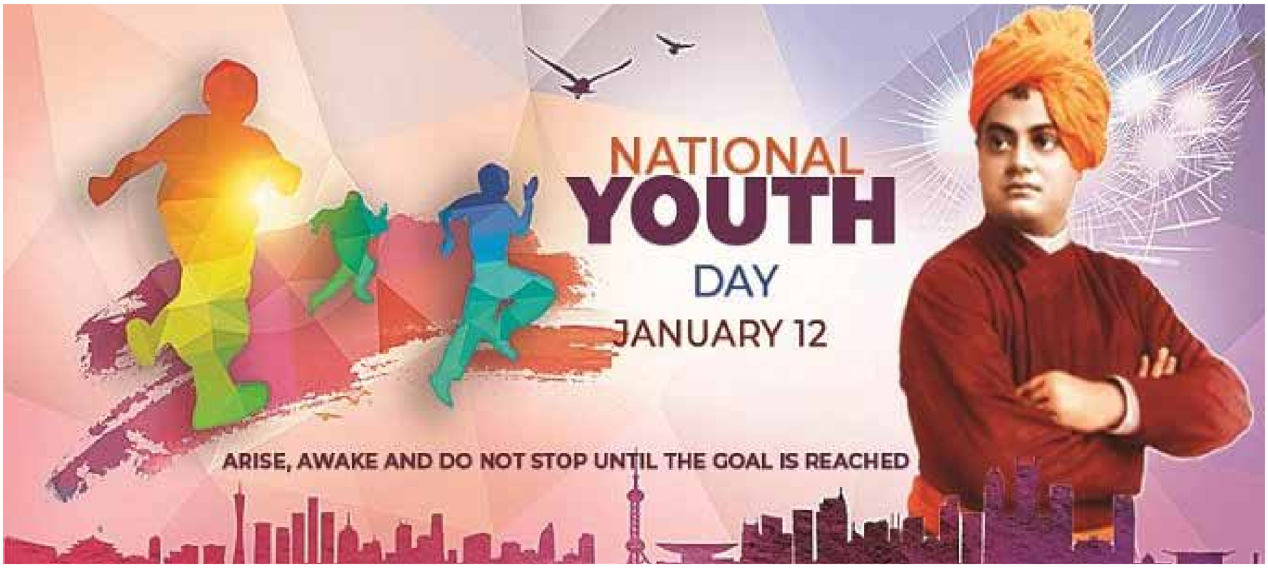

prepare youth for the challenges of a rapidly changing world.

National Youth Day also draws attention to the social responsibilities of young citizens. Youth are encouraged to actively participate in addressing social issues such as poverty, illiteracy, gender inequality, environmental degradation, and social injustice. By volunteering, spreading awareness, and engaging in community service, young people can become agents of positive change. The day reminds them that true progress is not only personal success but also contributing to the welfare of society.

In the modern era, youth face both opportunities and challenges. Technological advancements, globalization, and digital connectivity have opened new doors for learning, entrepreneurship, and innovation. At the same time, issues such as unemployment, mental health concerns, substance abuse, and social pressure pose serious challenges. National Youth Day provides an opportunity to discuss these concerns openly and to promote healthy lifestyles, resilience, and balanced use of technology.

The ideals of Swami Vivekananda are especially relevant in today's world. He advocated harmony among religions, respect for diversity, and service to humanity. National Youth Day encourages young people to embrace unity in diversity, uphold democratic values, and practice tolerance and empathy. In a diverse country like India, these values are essential for maintaining social harmony and national unity.

Government initiatives and youth-focused programs are often highlighted around National Youth Day. Schemes related to skill development, entrepreneurship, sports, education, and employment aim to empower youth and make them self-reliant. Observing this day helps spread awareness about such initiatives and motivates young people to take advantage of opportunities designed for their growth.

National Youth Day is not only about inspiring youth but also about listening to them. It emphasizes the importance of giving young people a voice in decision-making processes at local, national, and global levels. When youth are involved in leadership and governance, policies become more inclusive, innovative, and forward-looking. The day reinforces the idea that youth are not just future leaders—they are leaders of today.

Cultural and spiritual dimensions are also an important part of National Youth Day celebrations. Swami Vivekananda's teachings encourage inner strength, self-discipline, and spiritual awareness. Activities such as meditation sessions, yoga programs, and discussions on values help young people develop mental clarity and emotional balance. These aspects are especially important in a fast-paced world where stress and anxiety are common among youth.

In conclusion, National Youth Day in India is a day of inspiration, reflection, and action. It celebrates the immense potential of the youth and reminds them of their crucial role in building a strong, inclusive, and progressive nation. By following the ideals of Swami Vivekananda—strength, service, character, and courage—India's youth can overcome challenges and lead the country toward a brighter future. National Youth Day is not just a celebration of youth; it is a call for young minds to rise, lead with integrity, and work selflessly for the development of the nation and humanity as a whole.

R.E.A.D

Read-Engage-Activate-Digest

Dr. Ajay Balhra

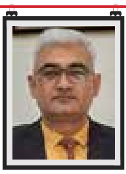

How to Help Students Read for Better Comprehension?

Teachers and parents often worry about sparking reading habits in young children—their "tiny tots"—and turning reluctant readers into confident ones. Despite endless Google searches yielding millions of tips, many feel stuck because generic advice overlooks the developmental needs of kids aged 5-10. This article draws from educational psychology to provide practical, phased strategies that build comprehension, fluency, and lifelong love for reading.

What Is Reading, and Why Does It Matter?

Dictionaries like Collins, Oxford, Merriam-Webster, and Cambridge define reading as "the process of taking in the sense or meaning of letters, symbols, etc., especially by sight or touch."

For educators, it's more nuanced: a multifaceted skill involving word recognition, orthography (spelling patterns), alphabetics, phonics, phonemic awareness, vocabulary, comprehension, fluency, and motivation. Research from the National Reading Panel (2000) emphasizes that comprehension isn't passive—it's an active process where readers construct meaning by connecting new information to prior knowledge (schema theory).

Knowing definitions helps, but the real challenge is how to engage young children. Divide reading into three phases: Before reading, During reading, and After reading. This scaffold approach, supported by reciprocal teaching models, boosts retention by 20-30% in elementary students.

Before Reading: Build Purpose and Activation

Prime children's brains to anticipate and engage. This phase activates prior knowledge, reducing cognitive overload and increasing motivation.

1. Explain purpose: "Why read this?" Link the text to their world. For

a story about animals, ask: "Have you seen a monkey at the zoo? What tricks did it do?" This taps intrinsic motivation, as per self-determination theory.
2. Preview the design: Scan together: title, photos/captions, diagrams, table of contents, headings, bold/italicized words. Example: In a chapter on plants, point to a diagram and say, "This shows roots sucking water—cool, right?"
3. Connect to prior knowledge: Prompt: "What do you already know about oceans?" Use KWL charts (Know, Want to know, Learned) for visual learners, common in Indian CBSE curricula.
4. Predict and guess: Brainstorm: "What might happen? Suggest an alternative title or story from these pictures." This uses predictive reading, enhancing focus.
5. Decide if skippable: Teach discernment: "Does this match our goal? Skip if not." Builds critical thinking.

Spend 5-10 minutes here—kids who preview comprehend 15% better.

During Reading: Foster Active Engagement

Guide 'Silent or Read-aloud Sessions' with interactions that promote deep processing. Avoid interrupting flow; model think-alouds first.

1. Generate questions (Zeigarnik Effect): Encourage questions on titles, pages, images: "What's this diagram hiding?" Don't answer—unfinished tasks linger in memory, boosting recall by 90% per Bluma Zeigarnik's 1927 study. Jot questions on sticky notes.
2. Tackle difficult words independently: Let kids flag "sticky" words, then hunt meanings via context, pictures, or roots (e.g., "tele" means far in telephone). Avoid dictionary dumps; conscious struggle builds vocabulary 2x faster. Example: For "benevolent," ask, "What does 'bene' sound like in benefit?"
3. Use Forward-Backward-Forward scanning: Read ahead (forward), revisit confusing parts (backward), then push forward. Pause every 2-3 pages: "Reread that sentence—what changed?" This mirrors expert readers' eye movements.
4. Monitor with think-aloud Model:"I'm visualizing the hero climbing the mountain—now I see why he's tired." Promotes mental imagery, key for 70% comprehension gain.
5. Build fluency pauses: Time short reads (1 minute), count words per minute, and celebrate gains. Pair with expression for fun.

For Hindi-English bilingual kids, alternate languages to leverage code-switching benefits.

After Reading: Solidify and Reflect

Reflect to cement learning—summarization doubles retention.

1. Review questions: Answer self-generated ones; discuss surprises.
2. Summarize key ideas: Use 5-finger retell: 5 main points on fingers. Or draw mind maps.
3. Connect and extend: "How does this link to your life? What questions remain?" Relate to Indian folktales like 'Panchatantra' for cultural hooks.
4. Rate comprehension: Thumbs up/down scale; revisit weak spots.
5. Celebrate and habit-build: Stickers, reading logs, or "book talks" in class. Aim for 20 minutes daily—habits form in 18-66 days.

Final Tips for Success

- Differentiate by age: For 5-7s, use picture books; 8-10s, chapter books with audio support.
- Incorporate tech: Apps like Epic! or Indian platforms like DIKSHA for interactive texts.
- Track progress: Weekly journals show growth, motivating parents/teachers.
- Common pitfalls: Don't force speed over understanding; vary genres to sustain interest.

This phased method transforms reading from chore to adventure. In Indian contexts it integrate with NEP 2020's focus on foundational literacy.

In-charge, Model Sanskriti & PM Shri Schools
O/o DSE, Haryana, Panchkula

National Girl Child Day: Empowering Girls for a Stronger Nation

National Girl Child Day is observed every year on 24 January in India to raise awareness about the rights of girls and to highlight the challenges they face in society. The day aims to promote gender equality, encourage education for girls, and address issues such as discrimination, child marriage, and female foeticide. Initiated by the Government of India in 2008, National Girl Child Day serves as a reminder that the progress of a nation depends greatly on the empowerment and well-being of its girls.

The significance of National Girl Child Day lies in its focus on changing social attitudes toward girls. Despite legal protections and constitutional rights, many girls in India still face inequality from birth. Practices such as preference for male children, neglect of girl children, and limited access to education and healthcare continue to exist in some parts of society. This day provides an opportunity to reflect on these issues and work collectively toward creating a more inclusive and just society.

One of the major objectives of National Girl Child Day is to promote education for girls. Education is a powerful tool that enables girls to become confident, independent, and informed individuals. Educated girls are more likely to contribute positively to society, make informed decisions about their lives, and raise healthier families. However, many girls still drop out of school due to poverty, early marriage, domestic responsibilities, or lack of proper facilities. Observing this day helps emphasize the importance of ensuring equal educational opportunities for every girl child.

Another important aspect highlighted on National Girl Child Day is health and nutrition. Girls often suffer from malnutrition, inadequate healthcare, and lack of awareness about personal hygiene and reproductive health. These issues affect their physical and mental development. Government programs such as BetiBachaoBetiPadhao,

SukanyaSamriddhiYojana, and schemes for free education and healthcare aim to improve the status of girls in society. National Girl Child Day spreads awareness about such initiatives and encourages families to take advantage of them.

The day also addresses the serious issue of gender-based discrimination and violence. Girls and women are often victims of harassment, abuse, and exploitation. Practices like child marriage and human trafficking deprive girls of their childhood and basic rights. National Girl Child Day reminds society of the importance of protecting girls and ensuring a safe environment where they can grow without fear. Strong laws, effective enforcement, and social awareness are essential to eliminate these evils.

Empowering the girl child is not only a social responsibility but also an economic necessity. When girls are educated and employed, they contribute to economic growth and poverty reduction. Studies have shown that investing in girls leads to better economic outcomes for families and communities. National Girl Child Day encourages equal participation of women in all fields, including science, technology, politics, sports, and entrepreneurship. Successful women serve as role models and inspire young girls to dream big and achieve their goals.

National Girl Child Day also plays a vital role in shaping the mindset of future generations. Celebrations in schools, colleges, and communities include debates, essay competitions, rallies, and awareness programs. These activities help children understand the value of gender equality from an early age. Teaching boys to respect girls and encouraging mutual understanding are crucial steps toward building a balanced and harmonious society.

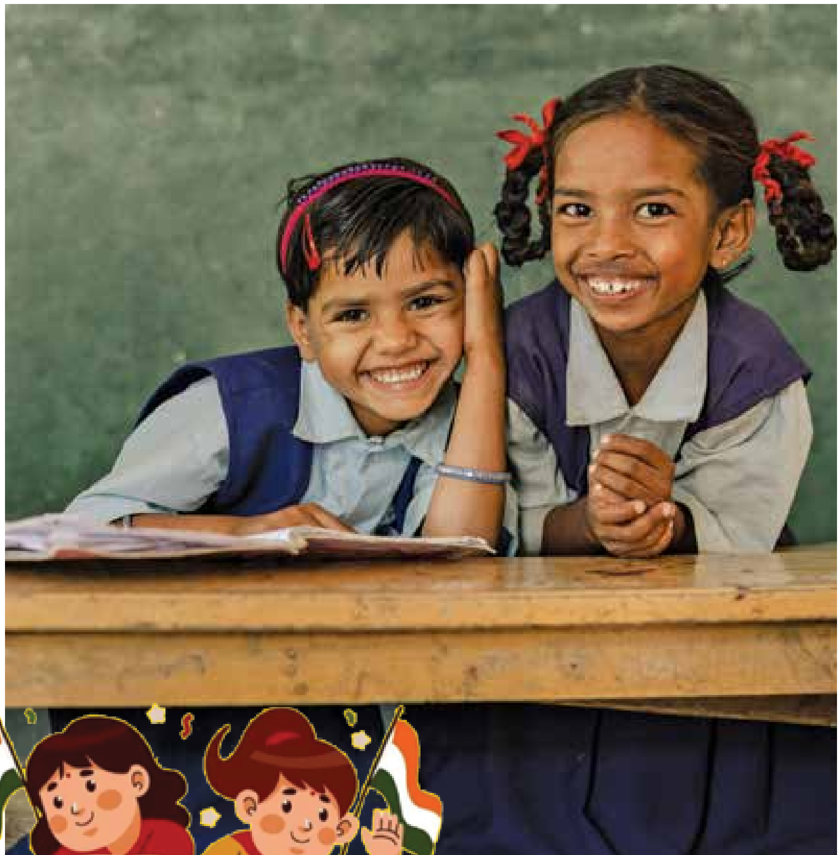

Despite progress in recent years, challenges remain. Deep-rooted cultural beliefs and traditional practices continue to hinder the advancement of girls in some areas. National Girl Child Day acts as a platform to discuss these challenges and develop solutions through education, policy reforms, and community participation. Media and social organizations also play an important role in spreading awareness and highlighting success stories of empowered girls.

The role of parents and families is central to the development of the girl child. Providing love, support, education, and freedom to girls helps them build confidence and self-respect. National Girl Child Day encourages parents to treat sons and daughters equally and recognize that girls are equally capable of achieving success in life. A supportive family environment lays the foundation for a strong and independent woman.

In conclusion, National Girl Child Day is a powerful reminder that girls are not a burden but a valuable asset to society. Ensuring their rights, education, health, and safety is essential for the progress of the nation. Empowered girls grow into empowered women who shape the future of the country.

आदरणीय संपादक महोदय!
सादर नमस्कार।

मैंने 'शिक्षा सारथी' पत्रिका का दिसंबर- 2025 अंक बड़े मनोयोग से पढ़ा। यह अंक शिक्षा, संस्कृति और समकालीन चुनौतियों को एक सूत्र में बाँधता हुआ अत्यंत प्रभावशाली प्रतीत हुआ। विशेष रूप से 'शिक्षा, संस्कृति व नवभारत निर्माण का संकल्प', 'जब शिक्षक का मन स्वस्थ होता है, तब शिक्षा खिल उठती है' तथा 'डेटा आधारित निर्णय एवं स्कूल शिक्षा की सीमाएँ' जैसे लेख वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य को गहराई से समझने में सहायक हैं।'खेल-खेल में विज्ञान' जैसे लेखों ने यह सिद्ध किया है कि सीखना आनंददायक भी हो सकता है। मेरा सुझाव है कि आगामी अंकों में शिक्षकों द्वारा कक्षा-कक्ष में किए गए नवाचारी प्रयोगों का अनुभवात्मक विवरण, विद्यालयों में सफल गतिविधियों के वास्तविक उदाहरण तथा ग्रामीण और सरकारी विद्यालयों की सकारात्मक शैक्षिक उपलब्धियों को भी स्थान दिया जाए, जिससे अन्य शिक्षक उनसे प्रेरणा लेकर अपने शिक्षण को और अधिक प्रभावी बना सकें।

इस उत्कृष्ट अंक के लिए आपको और आपकी संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई।

अनु
पीजीटी फाइन आर्ट्स
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बसौला
ज़िला- पंचकूला, हरियाणा

माननीय संपादक महोदय!
सप्रेम नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का दिसंबर अंक पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। इस अंक में प्रकाशित बच्चों के लिए प्रेरक साहित्य, बालसारथी तथा 'बहुमुखी प्रतिभा की धनी है छात्रा मीनाक्षी' जैसे लेख और स्तंभ बच्चों के आत्मविश्वास और अभिरुचि के विकास में सहायक हैं। भाषा सीखने के 'खेल पिटारे' का विमोचन लेख विशेष रूप से उपयोगी लगा। इसी प्रकार 'प्रकृति-प्रेम और शिक्षा-सेवा का समन्वय' लेख बच्चों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने का सार्थक प्रयास है। मेरा विनम्र सुझाव है कि पत्रिका में बच्चों द्वारा लिखी गई कहानियाँ, कविताएँ और चित्रों को भी नियमित रूप से प्रकाशित किया जाए तथा अभिभावकों के अनुभवों और घर पर किए जा सकने वाले शैक्षिक प्रयोगों को भी शामिल किया जाए, ताकि शिक्षा विद्यालय और घर- दोनों स्तरों पर सशक्त बन सके।

इस उपयोगी और प्रेरक अंक के लिए आपको हार्दिक शुभकामनाएँ।

कविता रानी
टीजीटी अंग्रेज़ी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कोयर माजरा
ज़िला- करनाल, हरियाणा

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, शिकोहपुर, गुरुग्राम की छात्रा खुशबू यादव की पेंटिंग,
जिसे राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण-2025 प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार मिला।

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: L/HR/AB/Periodical-001/26-28

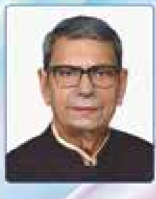

हरियाणा सरकार

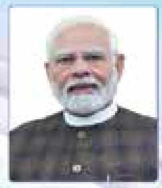

2026

विक्रमी संवत् - 2082-83

जनवरी (पौष–माघ)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

फरवरी (माघ–फाल्गुन)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28

मार्च (फाल्गुन–चैत्र)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

अप्रैल (चैत्र – वैशाख)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

मई (वैशाख–ज्येष्ठ)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

जून (ज्येष्ठ–आषाढ़)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

जुलाई (आषाढ़–श्रावण)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

अगस्त (श्रावण–भाद्रपद)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

सितम्बर (भाद्रपद–आश्विन)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

अक्तूबर (आश्विन–कार्तिक)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

नवम्बर (कार्तिक–मार्गशीर्ष)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

दिसम्बर (मार्गशीर्ष–पौष)

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

अवकाश सूची

[illegible]

विशिष्ट दिवसों की सूची

[illegible]

संकलन एवं सज्जा – महानिदेशक, सूचना, लोक सम्पर्क तथा भाषा विभाग, हरियाणा | मुद्रण – नियंत्रक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग, हरियाणा

www.prharyana.gov.in | @diprharyana